'जायसवाल जागृति'

संरक्षक

स्व० हरिश्चन्द्र जायसवाल, दिल्ली
श्री जवाहर लाल जायसवाल, पूर्व सांसद
श्री अजय कुमार जायसवाल, नयी दिल्ली
श्री पी. जायसवाल, नई दिल्ली
श्री रामप्यारे गुप्त, नई दिल्ली
श्री दयाशंकर जायसवाल, नई दिल्ली
श्री लोटन प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री हरिश्चन्द जायसवाल, बाली नगर, दिल्ली
श्री ओम प्रकाश आर्य, नई दिल्ली
स्व. एस.पी गुप्त, नई दिल्ली
श्री त्रियुगी नारायण गुप्त, नोएडा
श्री जगराम जायसवाल, दिल्ली
श्री रामेश्वर दयाल कर्णवाल, नजीबाबाद
श्री भोला प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री पन्नालाल जायसवाल, अहमदाबाद
श्री सुधीर कुमार 'मनहर' जायसवाल, दिल्ली
श्री जयनारायण चौकसे, श्यामला हिल्स, भोपाल
स्व. बी.डी. दखने, उद्योगपति, नागपुर
श्री आनन्द कुमार भमोरे, अमरावती (महाराष्ट्र)
श्री सत्यनारायण जायसवाल (सरपंच), नवाबगंज
श्री छोटेलाल गुप्त जायसवाल, दिल्ली
श्री शंकरलाल जायसवाल, दिल्ली
डा. सत्यप्रकाश जायसवाल, दिल्ली
श्री विजय वालिया, फरीदाबाद
स्व. कुंदनलाल जायसवाल, गोरखपुर
श्री ललित जायसवाल, गाजियाबाद
श्री प्रकाश चौधरी, बड़ी सादड़ी, (चित्तोड़गढ़)
श्री राधेश्याम जायसवाल, गाजियाबाद
स्व. गोवर्धनलाल जायसवाल, शामगढ़ (म.प्र.)
श्री रमेश जायसवाल, दिल्ली
श्री मेघराज प्रसाद, दिल्ली
श्री माखन चौधरी, (नोएडा)
श्री सुरेन्द्र कुमार किशनलाल जायसवाल (नांदेड़)
श्री संजीव कुमार चौधरी, दिल्ली
श्री स्वामीनाथ जायसवाल (छत्तीसगढ़)
श्री राजीव कुमार जायसवाल (कटिहार, बिहार)
श्री बद्रीप्रसाद जायसवाल, (गोरखपुर)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (गुड़गांव)
श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (द्वारिका, दिल्ली)
श्री मुकेश रंजन जायसवाल (साहिबाबाद)
श्री किशोर जायसवाल (दिल्ली)
डॉ. अरुण कुमार गुप्ता (बंगलौर)
NRI श्रीमती आभा गुप्ता एवं श्री नितिन जी (अमेरिका)
श्री अशोक चौधरी, संचालक, जनकल्याण एवं President, INTUC
श्री विश्वमोहन प्रसाद (GM, NTPC, नोएडा)
श्री मदन भाई जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री संजय जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री कमल नारायण - सरलादेवी जायसवाल (इंदौर)
Dr. A.K. Jaiswal (AIIMS, Delhi)
श्री दीपक जायसवाल (नागपुर-महाराष्ट्र)
श्री हुकुमचंद गिरधारीलाल जायसवाल (इंदौर)
श्री ब्रजेश कुमार (एडवोकेट, दिल्ली)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (वरिष्ठ एडवोकेट, पटना)
श्री राजीव रंजन राजेश (एडवोकेट, दिल्ली)
श्रीमती सरला गुप्ता अ.भा.जा. सर्व. महिला अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता (अध्यक्ष, नेपाल कलवार कल्याण महासंघ)
श्री सुरेश प्रसाद चौधरी (गाजियाबाद)
श्रीमती सुनीता अखिलेश सुवालका (उदयपुर)
श्री नवीन प्रकाश जायसवाल (अलवर)
श्री सुनील कुमार जायसवाल (सांवेर रोड, इन्दौर)
श्री राकेश रमन जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजय कुमार जायसवाल (इलाहाबाद)
डा. एन. शिवासुबहनण्यन (तमिलनाडु)
श्रीमती रीता जायसवाल (वाराणसी)
न्यायाधीश डॉ. संतोष कुमार जायसवाल (मुंबई)
डॉ. अनिल कुमार जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजयपाल सिंह भहलूवालिया (सफीदों-हरियाणा)
श्री राजकुमार गुप्त (लखनऊद्ध
श्री मोहन सिंह अहलूवालिया (ग्वाला गद्दी, रेवड़ी, रायपुररानी, पंचकुला)

मूल्य 5 रु० प्रति

'जायसवाल जागृति'

(अखिल भारतीय संस्था के रूप में पंजीकृत सामाजिक संस्था 'जायसवाल जागृति', का सर्वाधिक लोकप्रिय त्रैमासिक मुख-पत्र)

वर्ष : 27 जनवरी-जून, 2020 अंक: 1

अनुक्रमणिका

1. सम्पादकीय: नारी शक्ति का आह्वान –पन्नालाल जायसवाल 4
2. कुछ अपनी कुछ आपकी –राजाराम जायसवाल 4
3. हमारे संरक्षक: श्री राजकुमार गुप्त (शेषांग) कैलाशनाथ गुप्त 5
4. शिव की नगरी काशी में होली पर्व महोत्सव–रंगभरी –पन्नालाल जायसवाल 5
5. महान गणितज्ञ डॉ. गोरख प्रसाद के निधन पर तत्वकालीन राजनीतिज्ञों एव मनीषियों के संदेश – 6–7
6. विष्णु पुराण सीरियल में से श्री सहस्रार्जुन जी के मिथ्या चरित्र हनन वाले एपीसोड्स हटाने की मुहिम –प्रकाश मालवीय 8
7. जायसवाल जागृति द्वारा श्री सहस्रार्जुन जी के भ्रामक चरित्र–हनन पर माननीय प्रधान मंत्री/लोकसभा अध्यक्ष/सूचना–प्रसारण मंत्री जी को प्रेषित ज्ञापन –ब्रजेश कुमार 9
8. राजराजेश्वर सहस्रार्जन प्रश्नवली –शंकर लाल राय 10–13
9. समाज शिरोमणि डाक्टर गोरख प्रसाद –ओम मालवीय 14–15
10. डॉ. गोरख प्रसाद की स्मृति में डाक–टिकट जारी करने का अनुरोध–पत्र –शंकर लाल राय 16
11. स्व. डॉ. गोरख प्रसाद जी और वैज्ञानिक साहित्य –डॉ. सत्य प्रकाश 17–18
12. डॉक्टर गोरख प्रसाद–जीवन वृत्त और विचार, उन्हीं के शब्दों में –जटाशंकर द्विवेदी 19–20
13. सरल वैज्ञानिक साहित्य के प्रणेता–डॉ. गोरख प्रसाद –बकटलाल ओझा 20–21
14. श्रद्धेय डॉ. गोरखप्रसाद –डॉ. हरिश्चन्द्र गुप्त 21–23
15. "डॉक्टर गणेश प्रसाद साहब को जैसा मैंने देखा" –डॉ. गोरखप्रसाद 24
16. डॉ. गोरखप्रसाद का अध्यक्षीय कार्यकाल ओम मालवीय 24–25
17. कुछ स्मृतियाँ –डॉ. बाबू राम सक्सेना 25
18. कुछ संस्मरण –डॉ. रामदास तिवारी 26
19. पूज्य बाबू जी की याद में –श्रीमती माधुरी जायसवाल 27
20. पूज्य नाना जी की दु:खद जल समाधि –अशोक कुमार जायसवाल 27–28
21. अनमोल स्मृतियाँ कृपा शंकर जायसवाल 28–29
22. डॉ. गोरख प्रसाद के अनुसंधान लेखों की सूची 30
23. इलाहाबाद आकाशवाणी से प्रसारित डा. गोरखप्रसाद की उपलब्ध वार्ताओं की सूची 31
24. कर्मवीर डा. गोरख प्रसाद जायसवाल (डी.एस.सी.) –राजकुमार गुप्त 32–33
25. सम्पादक के नाम पत्र –राजकुमार गुप्त 33
26. कविताएं: नीरजा जायसवाल, संजय प्रसाद डां ओम प्रभात व डा. राधेश्याम बंधु 34–35
27. 29वीं फरवरी 2020 को आयोजि जायसवाल जागृति की बैठक का कार्यवृत्त –ब्रजेश कुमार 36–37
28. डा. हीरालाल राय की 152वीं जयन्ती निशांत राय 37
29. आधारायण–ग्रंथ का विमोचन सुनील एवं यामा जायसवाल 38
30. होली के मोरपंखी रंग–यमुनापार होली मिलन 39
31. श्री राजीव जायसवाल पुलिस इंस्पेक्टर के पद पर पदोन्नत 39
32. कुर्यात् सदा मंगलम् (वैवाहिकी) 40–48
33. (1) व्यवस्था मंडल (2) महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ 49
34. हमारे संरक्षक श्री मोहन सिंह अहलुवालिया 50

टाइपसेटिंग : शुभम् ग्राफिक्स : 9811021617
Email : shubhamprabhas@gmail.com

सम्पादक-मंडल

मार्गदर्शन : पन्नालाल जायसवाल **(M 8882828808)**
प्रधान-सम्पादक: राजाराम जायसवाल **(9013262811)**
कार्यकारी सम्पादक : कैलाश नाथ गुप्त **(M 8882019312)**
सह-सम्पादन : डा. सत्यप्रकाश गुप्त **(M 9811921848)**
मीनू गुप्ता जायसवाल **(M 9891232016)**

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार का पता
राजाराम जायसवाल, प्रधान सम्पादक
19-सी,डीडीए (एम.आई.जी.) फ्लैट्स, गुलाबी बाग, दिल्ली–110007
(M 9013262811)

पत्रिका में प्रकाशित किसी लेख/रचना का उत्तरदायित्व स्वयं लेखक/रचनाकार का है, सम्पादक-मंडल अथवा प्रकाशक का नहीं।

सम्पादकीय

नारी शक्ति का आह्वान
उठो, जागो, अपनी शक्ति को पहचानो

भारत में नारी को सर्वोत्तम स्थान दिया गया है । **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।** अर्थात जहाँ नारी को पूज्य मानते है, वहाँ देवताओं का निवास होता है । आठ मार्च को देश में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। समारोह में महिलाओं का गुणगान आसान है, परन्तु दैनंदिन कार्यकलापों में हम बालिकाओं, स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करते है, यह किसी से छिपा हुआ नहीं है । पढ़ा लिखा समाज हो या गाँवों मे रहनेवाली महिला हो, हम सभी उन्हे दबाकर रखते है, उन्हे प्रताड़ित करते है। हमें इस व्यवस्था को बदलना होगा। महिलाओं को अपनी शक्ति को जागृत करना होगा। तभी उन्हें समाज में सम्मान का स्थान प्राप्त होगा ।

अपने देश के ऋषियों, मनीषियों, समाज के शीर्षस्थ लोगों ने नारी को अत्यंत सम्मानजनक स्थान दिया है। जरा देखें उन्हें दिये गए नामों को विद्या (शिक्षा), ऊषा (सुप्रभात), संध्या (गोधूलि वेला), अन्नपूर्णा (भोजन देनेवाली), गायत्री (मंत्र), गीता, आरती, वंदना, भगवान की आराधना के शब्द हैं। श्रद्धा सम्मान सूचक है । ममता, करुणा, क्षमा मानवीय मूल्यों का दिग्दर्शन कराते है ।

भारत की नदियों के नाम भी स्त्रीलिंग सूचक है। गंगा, जमुना, सरस्वती, नर्मदा, ताप्ती, कावेरी, गोदावरी, आदि - मानों संसार उन्हीं का है। प्राचीन भारत में नारियों ने तप, त्याग और जीवन संघर्ष का अनुपम मापदंड प्रस्तुत किया है। श्रुति में **मातृदेवो भव** कहकर नारी को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है। पति की अनुगामिनी सीता का वनगमन, सावित्री जो यमराज से अपने पति सत्यवान को वापस लायीं, अनुसूया, अरुंधति, अहिल्या, जैसी कितनी नारियां है जिनका उज्ज्वल चरित्र हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। विदुषी गार्गी, मैत्रेयी को आज भी लोग याद करते है। दुर्गा, उमा, सरस्वती, लक्ष्मी, जगदंबा नामों के उच्चारण मात्र से मानव सद्गुणों से परिपूर्ण हो जाता है। **-पन्नालाल जायसवाल,** संरक्षक जायसवाल जागृति

कुछ अपनी कुछ आपकी

सुहृद पाठक-वृन्द,

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हम आप सब पिछले कुछ महीनों से जिस कोरोना रूपी महामारी की विभीषिका के दौर से गुजर रहे हैं, उससे परम पिता परमेश्वर की अनुकम्पा से उबरकर सुरक्षित स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। एकमात्र सावधानियाँ, सम्पूर्ण सावधानियाँ ही हमारे सम्बल हैं। इनका बदस्तूर एवं आद्योपात अनुसरण करना ही हमारी नियति होनी चाहिए। **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग भवेत्।।**

बन्धुओ, हम पिछले कुछ महीनों से 'जायसवाल जागृति' के जनवरी-मार्च 2020 तथा अप्रैल-जून 2020 के अंक का प्रकाशन करने में असमर्थ रहे, जिसके कारण दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट हैं। तथापि कुछ विलम्ब से ही सही, हम इन दोनों तिमाहियों के संयुक्तांक को अब आपके समक्ष प्रस्तुत करने में समर्थ हुए हैं। पिछली बार हमने जागृति का **"डॉ. काशीप्रसाद जायसवाद विशेषांक"** (अक्टूबर दिसम्बर अंक) प्रकाशित किया था, जो काफी लोक प्रिय हुआ। इस बार हमें आपके समक्ष **जायसवाल शिरोमणि डॉ. गोरख प्रसाद विशेषांक** प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। लगभग एक शताब्दी पूर्व ही इस महान गणितज्ञ एवं अनेकानेक विधाओं में पारंगत, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी स्वजातिरत्न की गणित की पुस्तकें क्या विद्यालय और क्या महाविद्यालयों में अत्यंत लोकप्रिय हो गई थीं। अतः इस महापुरुष के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं असाधारण कृतित्व के संबंध में स्वजाति, बंधुओं को व्यापक स्तर पर जानकारी उपलब्ध कराने में हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह एक संग्रहणीय अंक होगा। हमें आपके सुविचारित राय की और सकारात्मक सुझावों की आतुरता से प्रतीक्षा रहेगी।

साथियो, अप्रैल-जुन 2020 के अंक से आपकी लोकप्रिय पत्रिका जायसवाल जागृति 27 वें वर्ष में पदार्पण करने जा रही है। सहृदय, सुविज्ञ, एवं उदारमना पाठकों ने पिछले 26 वर्षों से जिस अपनत्व की भावना से इसे अपनाया है इसके लिए हमारी सम्पादकीय टीम आप सबकी आभारी है। हम अपनी यात्रा सतत् एवं पत्रकारिता के उच्च मानदण्डों के अनुरूप जारी रखेंगे, इसके लिए आश्वश्त रहें। मंगलकामनाएँ। **ओऽम् नमो भगवते वासुदेवाय।**

सधन्यवाद

राजाराम जायसवाल
प्रधान सम्पादक

(कवर पेज 2 का शेष)

सरकारी सेवा: जून 1998 में इनका स्थानान्तरण सी.आई.डी. सेक्टर इलाहाबाद में हुआ। परन्तु दुर्भाग्य से इनको वहाँ पद रिक्त न होने के कारण ज्वाइन नहीं कराया गया व सी.आई.डी. हेडक्वार्टर लखनऊ में वापस आना पड़ा और प्रदेश की राजधानी (अदब शराफत की नगरी) लखनऊ में रहने व कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मार्च 2001 में इनका स्थानान्तरण **जनपद लखनऊ न्यायालय** में हो गया। अभियोजन अधिकारी पद पर प्रोन्नति के फलस्वरूप 8 दिसम्बर 2004 को इनकी नियुक्ति स्पेशल टास्क फोर्स के **विधिक सलाहकार** के रूप में पुलिस महानिदेशक उ.प्र. के कार्यालय लखनऊ में हुई। जुन 2006 में इनका स्थानान्तरण **सतर्कता अधिष्ठान** सेक्टर, फैजाबाद में हुआ। कुछ दिनों बाद 22 अगस्त 2006 को इन्हें सतर्कता अधिष्ठान मुख्यालय लखनऊ से सम्बद्ध करके **सेक्टर, लखनऊ** का कार्यभार सौंपा गया। सैक्टर लखनऊ की नियुक्ति के दौरान ही इन्हें **सतर्कता अधिष्ठान सेक्टर कानपुर व झाँसी** के 11 जिलों का अतिरिक्त कार्य अलग समय के लिए देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जनवरी 14 में **ज्येष्ठ अभियोजन अधिकारी** पद पर प्रोन्नति के फलस्वरूप **अपराधशाखा, अपराध अनुसंधान विभाग** उ. प्र., मुख्यालय लखनऊ में नियुक्ति हुई। दो वर्ष की सम्मानजनक सेवा के पश्चात् 31 जनवरी 2016 को सेवानिवृत्त हुए। 27 फरवरी 2016 से 31 जुलाई 2017 तक संविदा अभियोजक के रूप में जनपद न्यायालय लखनऊ में कार्य किया। इनकी बहुआयामी प्रतिभाओं का लाभ विभिन्न क्षेत्रों में अनेक संस्थाओं को प्राप्त हो रहा है। सम्प्रति उ.प्र. सेवानिवृत्त अभियोजन अधिकारी संघ, गवर्नमेन्ट पेंशन वेलफेयर आर्गनाइजेशन, उ. प्र., विकास नगर कल्याण समिति, लखनऊ (कोषाध्यक्ष), भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति (भावना), वैश्यमहासभा उ.प्र. (महामंत्री) प्रबुद्ध जायसवाल कल्याण समिति, लखनऊ (महामंत्री) के विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों में व्यस्त रहने का भरसक प्रयास करते हैं।

भावीयोजना: समाज सेवा की भावना से प्रेरित होकर महान इतिहासकार, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, मुद्राशास्त्री व विधिवेत्ता डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल चैरिटेबल ट्रस्ट लखनऊ के माध्यम से स्वजातीय समाज में उच्च शिक्षा के प्रचार व प्रसार के लिए निजी विश्वविद्यालय की स्थापना के सकल्प के साथ प्रयासरत हैं। इनमें कितनी सफलता मिलेगी यह इनके अथक परिश्रम व स्वजातीय बन्धुओं के सहयोग पर निर्भर करेगा।

अनुकरणीय कार्य: स्वयं संतान-सुख से वंचित होने के बावजूद इन्होंने सबसे कनिष्ठ भ्राता (बबलू) एवं भांजे 'वापी' की शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध किया। (लखनऊ विश्वविद्यालय) से एल.एल.एम, करवाने के पश्चात् **श्री मनीष कुमार जायसवाल** (बबलू) अब लखनऊ के रूप में कार्यरत है। शरद कुमार जायसवाल (भांजे) आई.आई.टी. मुम्बई में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् फेस बुक में डाटा एनालिस्ट लीडर के रूप में डबलिन, (आयरलैण्ड) में कार्यरत हैं। अपने उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के प्रति पूर्णत: समर्पित श्री राजकुमार गुप्त जी ने क्या शिक्षा, क्या वकालत, क्या उच्च विधिक पद सभी क्षेत्रों में सम्यक् सेवाभाव व उच्च आदर्शो का अप्रतिम उदाहरण पेश किया है। इसके अतिरिक्त सामाजिक क्षेत्र में तन-मन-धन से अपना मूल्यवान समय देकर स्वयं उन पदों को गौरवान्वित किया है। केवल दिखावे और पदलिप्सा की भावना से नहीं, अपितु शुद्ध अंत-करण से समाज की ईमानदारी से सेवा करने और सेवा-भावना को उच्चतर एवं फिर उच्चतर सोपान तक ले जाने का मार्ग प्रशस्त करके आपने अनुकरणीय आदर्श स्थापित किया है। एतदर्थ उन्हें जायसवाल जागृति की शुद्ध अंत:करण से बधाई। वे इसमें आगे भी प्रतिमान स्थापित करें, ऐसी मनोकामना है।

कैलाश नाथ गुप्त, कार्यकारी-सम्पादक

शिव की नगरी काशी में होली पर्व महोत्सव-रंगभरी एकादशी से पूर्णमासी तक

बसंत ऋतु के आगमन से पेड़ पौधे फूलों से लद जातें है। पछुआं हवा चलती है। आम के पेड़ों मे बौर आ जाते है। तितलियाँ फूलों पर छा जाती हैं। कहते हैं फागुन या फगुनहवा-होली का महीना आ गया ।

वस्तुत: बसंत पंचमी से ही बसंत ऋतु के पर्वो का प्रारम्भ हो जाता है। शिव भक्त 'शिवरात्रि' के दिन शिवलिंग पर गुलाल, इत्र, पुष्प आदि चढ़ातें है। शिवरात्रि के दिन ही शिव पार्वती का विवाह होता है। शिव और शक्ति का मिलन होता है । काशी मे यह पर्व बड़े हर्षोल्हास के साथ मनाया जाता है।

इस अवसर पर ध्रुपद संगीत का आयोजन होता है। खमाज राग से वायुमंडल गूंज उठता है। इसका आनंद लेने के लिए पूरे देश से संगीत प्रेमी बनारस मे एकत्र होते हैं। गंगा के घाटों पर होली के लोकगीत लोगों का मन मोह लेते हैं। नौकावाहक भी होरी व फगुवा के इन गीतों मे विभोर हो जाते हैं।

होली पर ठंडई और भांग के सेवन का भी रिवाज बहुत दिनों से चला आ रहा है। कहते है कि शिव को यह बहुत प्रिय थे। होली पर्व का प्रारम्भ रंगभरी एकादशी से होता है जब शिवजी अपनी दुल्हन पार्वती को काशी लाते हैं। काशी के नागरिक विभिन्न रंगों से उनका स्वागत करते है और होलिका दहन तक विविध कार्यक्रम आयोजित करते हैं। होलिका दहन के बाद पूर्णमासी का चाँद निकलता है। लोग रंग खेलते है और इस दिन नए वस्त्र धारण करते हैं। व्यंजनपूर्ण खाना खाते है और खुशियाँ मनाते हैं।

काशी मे होली पर्व का अंत **"बुढ़वा मंगल"** से होता है। गंगा नदी पर बड़ी नौकाओं पर रातभर भोजपुरी लोकगीतों का आयोजन होता है जिसमे बनारस की प्रसिद्ध गायिकायँ भाग लेती हैं और उन्हे सुनने के लिए संगीत प्रेमी छोटी छोटी नावों में उन्हे घेर लेते हैं और रात भर कार्यक्रम का आनंद लेते हैं।

-पन्नालाल जायसवाल

महान गणितज्ञ एवं असाधारण तथा बहुआयामी व्यक्तिव के धनी डॉ. गोरख प्रसाद के असामयिक दु:खद निधन पर तत्कालीन विद्वतजनों तथा महान हिन्दी सेवियों प्रकाड राजनीतिज्ञों एव मनीषियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उनमें से कुछ संदेशों को यहाँ श्रद्धापूर्वक उद्धृत किया जा रहा है।

–सम्पादक

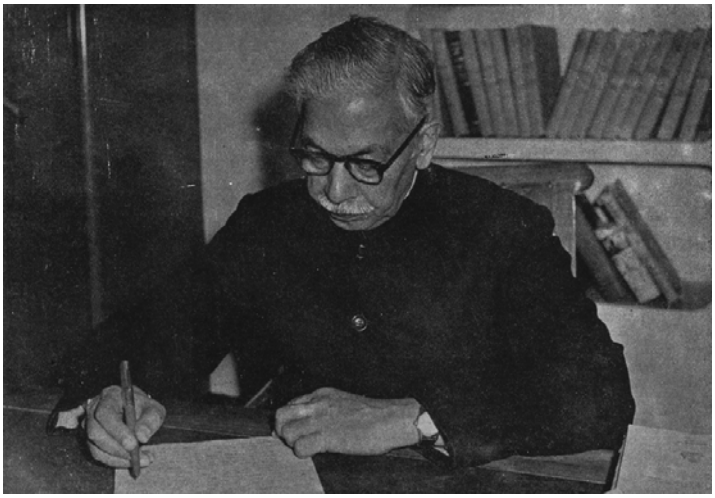

सन्देश

डा. गोरख प्रसाद स्मृति अंक

डा. गोरखप्रसाद मेरे पुराने सहयोगी और मित्र थे। उनके आकस्मिक देहान्त से मुझे मार्मिक क्लेश हुआ है। उन्होंने हिन्दी की सेवा लगन से की थी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के परीक्षामंत्री वह रहे थे और परीक्षा का काम उन्होंने बढ़ाया था। गणित और ज्योतिष के विषयों के वह ऊँचे विद्वान थे और अपनी विद्वता का लाभ उन्होंने हिन्दी को दिया था। उनके उठ जाने से हिन्दी माता का एक महारथी पुत्र चला गया। हिन्दी साहित्यिक संसार ने उनके चले जाने से अपना एक उज्जवल रत्न खो दिया।

प्रयाग, 12-5-61 (राजर्षि) पुरुषोत्तमदास टण्डन

प्रिय महाशय,

कार्ड मिला। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि डाक्टर गोरख प्रसाद के निधन से प्रदेश के विद्वज्जगत और विशेषकर हिन्दी के क्षेत्र की बड़ी हानि हुई। जिस अवस्था में उनकी मृत्यु हुई वह उनके उदात्त स्वभाव की परिचायक थी। उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि ही अर्पित कर सकता हूँ।

पार्क रोड, लखनऊ भवदीय

25-5-1961 **डॉ. सम्पूर्णानन्द**

विज्ञान परिषद् प्रयाग

शोक प्रस्ताव

विज्ञान परिषद् की यह साधारण बैठक अपने **अध्यक्ष, डॉ. गोरख प्रसाद** के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। विज्ञान परिषद् के तत्वावधान में अपनी राष्ट्र भाषा के माध्यम से वैज्ञानिक साहित्य के प्रचार व प्रसार के पुनीत कार्य में उनकी सेवाएँ अनन्य थीं, उनके निधन से हिन्दी वैज्ञानिक जगत की अपार क्षति हुई है। यह सभा परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे तथा शोकग्रस्त परिवार को यह महान कष्ट सहन करने की शक्ति दे।

रमेश चन्द्र कपूर

प्रधानमंत्री

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (भारतवर्ष)

The National Academy of Sciences, India

The Council of the National Academy of Sciences, India, Allahabad at its meeting held on July 26, 1961 passed the following resolution of the sad demise of Dr. Gorakh Prasad, a Fellow of this Academy :

Resolved that "the Council of the National Academy of Sciences, India, Allahabad places on record its deep sense of sorrow at the sad and sudden tragedy which ended in the death of Dr. Gorakh Prasad who was a Life Fellow of this Academy. He was a great scientist and was responsible for the propogation of Science through the mother tongue. He was closely associated with the Academy and took an active part for its uplift".

सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

शोक प्रस्ताव

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के गणित के अध्यापकों की यह सभा डॉ. गोरख प्रसाद के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करती है। डॉ. साहब का इस विश्वविद्यालय से आरम्भ से ही सम्बन्ध था। आपने उच्च शिक्षा यहीं से प्राप्त की थी और यहीं पर अध्यापन कार्य आरम्भ किया था। आप जीवन भर हिन्दी प्रेमी रहे। जब तक प्रयाग विश्वविद्यालय की सेवा में रहे, लेखनी द्वारा हिन्दी की सेवा करते रहे। वहाँ से अवकाश प्राप्त करने पर आप हिन्दी विश्वकोश को विज्ञान विभाग के सम्पादक के रूप में पूर्ण रूप से हिन्दी सेवक बन गये। यह उन्हीं के अध्यवसाय का फल था कि विश्वकोश का प्रथम खण्ड इतनी साज-सज्जा के साथ निकल सका। आप के निधन से हिन्दी और विज्ञान के क्षेत्र की अपूरणीय क्षति हुई है।

ईश्वर दिवंगतात्मा को शान्ति दे और उनके परिवार के सदस्यों को इतना बल दे कि इस दारुण दु:ख को सहन कर सकें।

दिनांक ६-५-१९६१

ब्रजमोहन

अध्यक्ष, गणित विभाग

प्रयाग विश्वविद्यालय कार्यकारिणी समिति

Allahabad University Executive Council

A meeting of the Executive Council of Allahabad University was held on Sunday, Shri P.K. Kaul, Vice-Chancellor, presiding.

On a reference made by the Vice-Chancellor on the sad and tragic death of Dr. Gorakh Prasad, a sitting member of the Executive Council, the Council passed the following condolence resolution, all memebers standing as a mark of respect of the memory of the deceased :

"This meeting of the Executive Council places on record its deep sense of sorrow at the sad and tragic death of Dr. Gorakh Prasad at Varanasi."

He retired from University only three years ago and was appointed Joint Editor of Hindi Vishwakosh. He was a well-known figure in the academic world and had written a number of books on high class Mathematics and Science. He had endeared himself to the staff and students by his efficient teaching and great personal qualities.

In his death, the University has lost a great scholar, a popular teacher and a perfect gentleman.

श्रद्धांजलि

जैसा था गौरवमय जीवन, वैसी ही है मृत्यु सहान;
सेवकजन हित देह विसर्जन कर तुम गये स्वर्ग सुखधाम।
शोक! गये तुम इतनी जल्दी, हे आचार्य सरल शुचि नेक;
छोड़ अधूरा विश्वकोष को, संपादित कर लेख अनेक।
हिन्दी में सब ज्ञान सुलभ हो, यही साधना थी अंतिम;
विश्वकोष के संपादक वर, हिंदी हुई दीन इस दिन।
विश्व कोष का प्रथम खंड छप सका समय से जो सत्वर;
उसका श्रेय अधिकतर तुमको, विविध कला पारंगत कर।
हिंदी बने शीघ्र ही माध्यम शिक्षा का बस यह था ध्येय;
उत्तर देश माध्यमिक शिक्षा परिषद के सदस्य श्रद्धेय!
रहा नहीं अब उस परिषद् में हिंदी सेनानी तुम सा;
है अवरुद्ध प्रगति हिंदी की जाता हिंदी युग टलता।
दान भावना आरंभ ग्रह से, इस विचार के थे हामी;
पढ़ा लिखा कितने सम्बन्धी, बना दिया उनको नामी।
सत्य स्पष्टवादिता का गुण, तुममें एक अलौकिक ही;
जिसको देना वोट न होता, उससे कहते बात सही।
देखा सार लोकप्रियता का, रामायण में तुमने ही;
इसीलिए तुम बने लोकप्रिय लेखक सफल सहज में ही।
ज्ञान असाधारण यंत्रादिक वास्तुशास्त्र का था अनुपम;
बना गये प्रासाद अनेकों, एक मुद्रणालय उत्तम।
गीता के उपदेश निरंतर देते समय समय पर ही;
है अधिकार कर्म करने का फल-इच्छा नहिं उचित कभी।
यदपि नहीं तुम मध्य हमारे, मिले प्रेरणा जीवन से;
कर्मयोग आदर्श निभाया, बचकर रहे प्रलोभन से।

विष्णु पुराण सीरियल में से श्री सहस्रार्जुन जी के मिथ्या चरित्र हनन वाले एपीसोड्स हटाने की मुहिम

-प्रकाश मालवीय

-संपादक "कल्चुरियन कीर्ति'' भोपाल

विगत 2 माह से विष्णुपुराण का क्रमवार प्रसारण हमारे समाज में चर्चा का विषय बना हुआ है विगत 11 मई से यश राज फिल्म्स द्वारा इसका प्रसारण डीडी भारती पर प्रारंभ हुआ, जिसके एपिसोड क्रमांक 46 से 62 तक में हमारे **आराध्य श्री सहस्रार्जुन जी** व उनके पुत्रों के चरित्र हनन **(जबकि विष्णु पुराण सहित किसी भी पौराणिक ग्रन्थ में इस तरह का कोई उल्लेख ही नही है)** को इसमें दर्शाए जाने को लेकर समस्त कलाल, कलार, कलवार ,जायसवाल समाज इससे आहत है। यद्यपि करोना काल के कारण इसके मुखर विरोध की संभावनाएं क्षीण थीं, फिर भी इसके इन एपीसोड्स को रुकवाने के लिए भारत के कोने-कोने में कार्यरत हमारे स्वजातिय संगठनों द्वारा व्यापक स्तर पर प्रिंट मीडिया (दैनिक अखबारों पत्र-पत्रिकाओं)व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (व्हाट्सएप, ट्विटर, फेसबुक, ईमेल) के माध्यम से अपने अपने स्तर से निवेदन आग्रह आदि का क्रम चलता रहा। वस्तुस्थिति की जानकारी, वीडियो ग्रुप कालिंग, प्रत्यक्ष भेंट, प्रतिनिधि मंडलों द्वारा सूचना प्रसारण विभाग के मंत्री महोदय एवं व इस प्रभाग से सम्बंधित सी.ई.ओ. नियंत्रण एवं संचालन कर्ता एजेंसीज से स्वजातीय मंत्रीगणों, सांसदों विधायकों पत्रकारों, हाईकोर्ट के अधिमान्य अधिवक्ताओं फिल्मी दुनिया से जुडी हस्तियों आदि की सक्रियता से .... काफी हद तक कामयाबी का मार्ग प्रशस्त हुआ है। फलत: जी टीवी, डी डी रेट्रो व डी डी भारती पर अप्रिय एवं असम्मानजनक रूप से चल रहे ये अंश बंद हो गये, जो इस हाई-टेक युग में हमारे समाज की देशव्यापी एकजुटता का सशकत एवं ज्वलंत प्रमाण है। शुरुआती दौर में इस अभियान में इस प्रयोजन के एक ज्ञापन का प्रारूप भोपाल के समाजसेवियों द्वारा तैयार कर अधिकांश वाट्स अप ग्रुप में डाला गया था जोकि कमोवेश भारत वर्ष के लगभग 15 राज्यों (जिनमे उत्तर व मध्य भारतीय प्रदेशों के साथ-साथ असम, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, तेलंगाना, तमिलनाडु आंध्रप्रदेश केरल आदि) की राष्ट्रीय, प्रादेशिक व क्षेत्रीय स्तर की 74 संस्थाओं की ओर से माननीय प्रधानमंत्री जी सहित भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्री **श्री प्रकाश जावड़ेकर जी सीईओ** प्रसार भारती व सीईओ जी टीवी एवं अन्य संबंधितों के नियंत्रण निर्माताओं को प्रेषित किए गए। साथ ही भोपाल व दिल्ली में समाज के प्रतिनिधियों ने प्रत्यक्ष भेंट कर(माननीय जावडेकर जी व संबधित सी ई ओ को) ज्ञापन सौपे .... जिन पर गंभीरतापूर्वक कार्यवाही हेतु भारत सरकार के मंत्री **श्री नितिन गडकरी जी**, लोकसभा अध्यक्ष **श्री ओम बिरला जी** एवं हमारे समाज के केंद्रीय मंत्री **श्री श्रीपाद नाइक जी** लोकसभा उपसभापति **श्रीमती रमा देवी जी** की अहम भूमिका भी रही।

फिलहाल डीडी भारती एवं डीडी नेशनल पर इसके प्रसारण की फिर से शुरुआत कर दी गई है। इस प्रसंग में यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रसारण को रोके जाने की स्थिति अभी तक स्पष्ट नहीं हुई है। एक और व्यथित करने वाली बात है कि यूट्यूब पर भी यह उपलब्ध है। उससे भी हटवाने के लिए आवश्यक कार्यवाही की जानी है। **इस हेतु व्हाट्सएप पर बार-बार जन जागरण की दृष्टि से यह प्रचारित किया जा रहा है कि संघर्ष अभी बदस्तूर जारी है। अगला कदम उपरोक्त टीवी चैनलों एवं इलेक्ट्रॉनिक प्रसारण से इन विवादित एपिसोड को हटवाने/रुकवाने हेतु हमें एकजुटता के साथ अपनी ताकत का प्रदर्शन करना होगा।** यह बात भी उभरकर सामने आई कि किसी संस्था विशेष को महत्व न देते हुए, विविध उपनामों/वर्गों/उपवर्गों से संबोधित होने वाले समाज ने अपनी अपनी सहभागिता का बखूबी निर्वाह किया है। इसे भविष्य में इन परिस्थितियों के अतिरिक्त भी अन्य कल्याणकारी सामाजिक उत्थान के अभियान के लिए एक सर्वमान्य माडल के रुप में निस्सन्देह अंगीकार किया जा सकता है। हम अगले अंकों में भगवान सहस्रार्जुन के चरित्र हनन पर दर्शाए जाने वाले एपीसोड्स के विरोध में विभिन्न संगठनों द्वारा प्रेषित किए गए ज्ञापनों की सम्पूर्ण सूची प्रकाशित करेंगे। समाज के कुलदेव भगवान सहास्रार्जुन इन सभी समाज-हितैषी कार्यक्रमों में हमारी सक्रिय अभिरुचि बनाए रखने की प्रेरणा हमें देते रहें, यही कामना है।

–जय राजराजेश्वर सहस्रार्जुन

जायसवाल जागृति (भारत) पंजीकृत

पंजी सं-एस/24569/93

पंजीकृत कार्यालय: 19-सी, डीडीए (एम.आई.जी फ्लैट्स), गुलाबी बाग, दिल्ली-111007
पत्र व्यवहार का पता: डी-62, (LGF), गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-110049

अध्यक्ष	महासचिव	कोषाध्यक्ष
अशोक कुमार जायसवाल	ब्रजेश कुमार	माखन चौधरी
ए-66, द्वितीय मंजिल, कौशाम्बी	डी-62, (LGF) गुलमोहर पार्क	सी-54बी, रजत विहार, सेक्टर-62
गाजियाबाद-201010 (उ.प्र.)	नई दिल्ली-110049	गौतम बुद्ध नगर, नोएडा-201301
मो. 8700343878	मो. 9810528057	मो. 9650998902
ईमेल: akjaiswal.a66@gmail.com	advbrajesh@gmail.com	makhanchaudhary@gmail.com

दिनाक 15/06/2020

सेवा में,
माननीय श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी,
प्रधान मंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली।

विषय: दूरदर्शन पर पुन: प्रसारित होने वाले धारावाहिक विषणु पुराण में भगवान श्री राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुन के चरित्र को विकृत रूप से प्रदर्शित करने के कारण, इस धारावाहिक के आपत्तिजनक एपीसोड संख्या 46 से 63 तक को तत्काल प्रभाव से रोकने व हटाने के संबंध में।

महोदय,

आपको सादर अवगत कराना है कि दूरदर्शन पर धारावाहिक विष्णु पुराण का पुन: प्रसारण प्रारम्भ हो चुका है। इस धारावाहिक के सीरियल संख्या 48 से लेकर 63 तक में, कलवार कलार, कलाल समाज के कुलदेवता भगवान राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुन जी महाराज के चरित्र को, अशोभनीय और अपमानजनक तरीके से दिखाया गया है। जिससे भारत में रहने वाले समाज के लगभग 15 करोड़ लोगों की भावनाओं को गहरी ठेस पहुंची है। आज सारा कलाल समाज का मन आन्दोलित है।

यह भी विदित है कि सन 2003 में भी दूरदर्शन के द्वारा इस धारावाहिक के प्रसारित होने पर उस समय पूरे भारत वर्ष के रहने वाले कलचुरी वंशीय समाज ने कठोर आपत्ति प्रकट किया था। आज एक बार पुन: इस टीवी धारावाहिक के माध्यम से राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुज भगवान के चरित्र को अपमानित करने का दूषित प्रयास किया जा रहा है। देश भर में सैकड़ों समाज संगठनों द्वारा अपने-अपने स्तर पर, अपने-अपने तरीके से विरोध प्रकट किया जा रहा है और इस समय पुरे देश में कलवार समाज के लोगों में भारी आक्रोश है।

श्रीमान जी, भगवान राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुन महाराज की केवल आस्था से ही नहीं जुड़े हैं, परन्तु हैहयवंशीय क्षत्रीय, कलाल एवं समाज के आराध्य देव भगवान है।

अत: आप से अनुरोध हैं कि तत्काल प्रभाव से इसमें हस्तक्षेप करके, समाज की भावना का ख्याल रखते हुए इस धारावाहिक के सीरियल संख्या 48 से 63 तक के प्रसारण को माननीय श्री प्रकाश जावडेकर (केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री भारत सरकार) के माध्यम से हटाने और तुरंत रोकने के आदेश दें। जनहित में न्यायोचित निर्णय शीघ्र लेने की कृपा करें।

आपका विश्वासभाजन
(ब्रजेश कुमार)
महासचिव

प्रति :
(1) श्री ओम् बिड़लाजी माननीय लोकसभा अध्यक्ष
(2) श्री प्रकाश जाबड़ेकर माननीय केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री

राजराजेश्वर सहस्रार्जुन व कलचुरि वंश प्रश्नोत्तरी

शंकर लाल राय
अधिवक्ता व पूर्व बैंकर

कलचुरि साहित्य श्रृंखला ...

(अ) राजराजेश्वर सहस्रार्जुन प्रश्नोत्तरी

विभिन्न ग्रंथों में कलचुरियों को हैहय वंशी **चक्रवर्ती "संत सम्राट" राजराजेश्वर श्री कार्तवीर्य सहस्रार्जुन का वंशज बताया है,** जिनकी गौरवगाथा अनेक धार्मिक ग्रंथों व पुराणों में वर्णित है। पौराणिक व अन्य ग्रंथों में भगवान श्री सहस्रार्जुन का जितना गुणगान मिलता है उतना किसी का नहीं मिलता। श्री सहस्रार्जुन के विषय में जानकारी प्राप्त करने से पहले आवश्यक है कि हम उनकी पौराणिक पृष्ठभूमि व वंशावली की जानकारी प्राप्त कर लें।

विष्णु परंपरा के अनुसार-पौराणिक वंशावली में भगवान विष्णु की नाभि से ब्रह्मा जी उत्पन्न होते हैं, ब्रह्मा जी के नौ मानस पुत्रों में से एक मानस पुत्र **महर्षि** अत्रि व उनकी पत्नी महासती **अनुसुईया** से चंद्र होते हैं, जिनसे **"चंद्रवंश"** चलता है जिसे **सोमवंश** भी कहते हैं। चंद्र व तारा से बुध, बुध व इला से महाप्रतापी राजा **पुरूरवा** उत्पन्न होते हैं। पुरूरवा व उर्वशी से **आयु,** आयु से **नहुष** और महुष से **ययाति** उत्पन्न होते हैं। पुरूरवा व उर्वशी से आयु, आयु से नहुष और नहुष से ययाति उत्पन्न होते हैं। ययाति के पुत्र यदु, यदु के पुत्र **सहस्त्रजीत** (सहस्त्राद) होते हैं, सहस्त्रजीत से सतजीत उनसे **"हैहय वंश"** आरंभ होता है, **हैहय भगवान शंकर के अंश अवतार थे**) हुआ व कई पीढ़ियों बाद **महिष्मान** होते हैं। महिष्मान की कई पीढ़ियों बाद कनक या धनद होते हैं, जिनके पुत्र **कृतवीर्य व महारानी पद्मिनी से 'श्री सहस्रार्जुन'** उत्पन्न होते है, जिनसे कलचुरि वंश आरंभ होता है। इन्हीं भगवान श्री सहस्रार्जुन के विषय में प्रश्न-उत्तर के माध्यम से जानकारी एकत्रित की गई, जो यहाँ सबके लाभार्थ दी जा रही है :

प्रश्न 1. श्री सहस्त्रार्जुन का काल (समय) क्या है?
उत्तर: लगभग 5000 वर्ष ईसा पूर्व अर्थात् वर्तमान से लगभग 7000 वर्ष पूर्व।

प्रश्न 2. (अ) श्री सहस्त्रार्जुन किसके अवतार थे?
उत्तर: श्री सहस्त्रार्जून, श्री विष्णु के सुदर्शन चक्र" के अवतार थे। (सुदर्शन चक्रावतार)

प्रश्न 2. (ब) श्री सहस्त्रार्जुन के अवतार संबंधी पंडित विष्णु जटा शंकर जी जोशी द्वारा क्या कथा बताई गई है?
उत्तर: कथानुसार चक्र सुदर्शन ने भगवान विष्णु से कहा कि, "भगवान मैंने बहुत युद्ध किये किन्तु किसी भी युद्ध में संतोष प्राप्त नहीं हुआ।" भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से कहा कि, "युद्ध में हम ही तुम्हें संतुष्ट करेंगे, हे पुत्र! मृत्युलोक में जाओ, यथेष्ट राज करो, प्रजा की भलाई करो, अधर्मी दुष्टों, चोरों आदि का नाश करो, मैं भी तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करने व तुम्हें लेने जमदग्नि के यहाँ पुत्र के रूप में आऊँगा।" इतना कहकर विष्णु भी अन्तर्ध्यान हो गये।

प्रश्न 3. श्री सहस्त्रार्जुन के अवतार का क्या उद्देश्य था?
उत्तर: प्रजा की भलाई, अधर्मी, दुष्टों, चोरों आदि का नाश करना।

प्रश्न 4. श्री सहस्त्रार्जुन का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर: श्री सहस्त्रार्जुन का जन्म कलचुरि वंश की कुल राजधानी माहिष्मती" (महेश्वर, जो जिला खरगौन, मध्यप्रदेश में स्थित है) में हुआ था।

प्रश्न 5. श्री सहस्त्रार्जुन का जन्म कब हुआ था?
उत्तर: कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी, दिन रविवार को हुआ।

प्रश्न 6. श्री सहस्त्रार्जुन के पिता जी का क्या नाम है?
उत्तर: श्री सहस्त्रार्जुन के पिता जी का नाम चक्रवर्ती सम्राट कृतवीर्य था। कृतवीर्य के पिता जी महाराजा कनक (धनद) थे।

प्रश्न 7. (अ) श्री सहस्त्रार्जुन की माताश्री का नाम क्या है?
उत्तर: श्री सहस्त्रार्जुन की माताश्री के विषय में अनेक मत हैं, लेकिन अधिक मान्य माताश्री का नाम **सरमा देवी** (जो अपने शील गुणों व सौन्दर्य के कारण **पद्मिनी** कहलाती थी) है, जो सत्यवादी महाराजा हरिशचन्द्र की पुत्री थीं।

प्रश्न 7. (ब) श्री सहस्त्रार्जुन की पत्नी का नाम क्या था?
उत्तर: श्री सहस्त्रार्जुन की पत्नी का महारानी **मनोरमा** था।

प्रश्न 7. (स) श्री सहस्त्रार्जुन के सौ पुत्रों में से सबसे बड़े पुत्र का नाम बताएँ?
उत्तर: श्री सहस्त्रार्जुन के सबसे बड़े पुत्र का नाम **जयध्वज** था।

प्रश्न 7. (द) श्री सहस्त्रार्जुन के बड़े पुत्र के बड़े पुत्र (पोते) का नाम बताएँ?
उत्तर: श्री सहस्त्रार्जुन के पोते का नाम **महाराज तालजंघ** था, जिन्होंने उज्जैन (अंवतिका) में महाकाल की स्थापना की थी, जिसे गुप्तकाल तक तालजंघ महाकाल कहा जाता था, इनके

पुत्र अवन्ति ने अवन्तिका (उज्जैन या उज्जैयनी) नगरी बसाई थी।

प्रश्न 8. श्री सहस्त्रार्जून जी का जन्म किस वंश में हुआ था?

उत्तर: श्री सहस्त्रार्जून जी का जन्म **हैहय-क्षत्रिय वंश"** में हुआ था।

प्रश्न 9. माता-पिता ने श्री सहस्त्रार्जून का क्या नाम रखा था?

उत्तर: माता-पिता ने इनका नाम **अर्जुन"** रखा था।

प्रश्न 10. पुराणों में इनके कितने नाम प्राप्त है?

उत्तर: पुराणों में इनके 1000 नाम प्राप्त हैं।

प्रश्न 11. जैन धर्म के ग्रन्थों में इनका क्या नाम है?

उत्तर: जैन धर्म ग्रन्थों में इनका **"सहस्र किरण"** नाम है।

प्रश्न 12. श्री सहस्रार्जुन को राजराजेश्वर क्यों कहा जाता है?

उत्तर: राजाओं के राजा या वह चक्रवर्ती राजा जिसके राज्य में सूर्य अस्त न होता हो, तथा वह राजपुरुष जो यश, ऐश्वर्य, श्री, ज्ञान, वैराग्य, धर्म आदि 6 गुणों से परिपूर्ण हो, को राजराजेश्वर कहते हैं श्री सहस्रार्जुन में दोनों विशेषताएँ थीं।

प्रश्न 13. श्री सहस्रार्जुन को कार्तवीर्य क्यों कहा जाता है?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन के पिता श्री का नाम कृतवीर्य था, इसलिए श्री सहस्रार्जुन को कार्तवीर्य कहा जाता है।

प्रश्न 14. श्री सहस्रार्जुन को सहस्राबाहु क्यों कहा जाता है?

उत्तर: सहस्रबाहु कहलाने संबंधी अनेक मत हैं–

(1) **सुदर्शन चक्र** में सहस्त्रों दांते होते हैं, अत: सुदर्शन चक्रावतार होने के कारण।

(2) श्री सहस्रार्जुन के पास सहस्त्रों नौकाएँ होने के कारण।

(3) श्री सहस्रार्जुन के अनेक राज्यों में हजारों (सहस्त्रों) स्थायी "सैन्य दल" होने के कारण।

(4) 'मार्कण्डेय पुराण' व 'विष्णु पुराण' के अनुसार अधिक मान्य कारण था कि श्री सहस्रार्जुन ने भगवान श्री दत्तात्रेय की कठिन तपस्या कर अनेक वरदानों में से एक वरदान यह भी प्राप्त किया था कि "युद्ध के समय इनकी सहस्त्र भुजायें हो जायेंगी, वे इतनी हल्की होंगी कि जिनका भार शरीर पर नहीं पड़ेगा।" इसलिए "सहस्त्रबाहु" कहलाये।

प्रश्न 15. महाराजा कृतवीर्य के देवलोक जाने पर, जब श्री सहस्रार्जुन को राजगद्दी पर बैठाना चाहा तो उन्होंने क्या किया?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने राजगद्दी पर बैठने से इनकार कर दिया।

प्रश्न 16. श्री सहस्रार्जुन ने राजगद्दी पर बैठने से इनकार का क्या कारण बताया?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने कहा कि "एक राजा जो प्रजा जन से उनकी आय का एक भाग कर के रूप में लेकर, यदि उनकी पूरी रक्षा न कर सके, तो वह राजा पाप का भागी होता है व नरक में जाता है।" अत: राजा को पूर्ण योगी पद ग्रहण कर राजगद्दी पर बैठना चाहिए।

प्रश्न 17. श्री सहस्रार्जुन के राजगद्दी पर बैठने से इनकार से, उनकी किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन सिद्धांतवादी थे।

प्रश्न 18. मुनिश्रेष्ठगर्ग ने श्री सहस्रार्जुन को किसकी तपस्या की सलाह दी?

उत्तर: गर्ग मुनि ने श्री विष्णु के अंश के रूप में अवतरित सह्य पर्वत की गुफा में निवास कर रहे **भगवान श्री दत्तात्रेय** की तपस्या की सलाह दी।

प्रश्न 19. भगवान श्री दत्तात्रेय से राजकुमार श्री सहस्रार्जुन ने कितने वरदान मांगे?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने 10 वरदान मांगे।

प्रश्न 20. श्री सहस्रार्जुन ने "ऐश्वर्य शक्ति" प्रदान करने का क्या वरदान मांगा?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने वरदान मांगा कि ऐसी उत्तम ऐश्वर्य शक्ति प्रदान कीजिए जिसमें मैं प्रजा का पालन कर सकूं।

प्रश्न 21. श्री सहस्रार्जुन ने "मन की बात" संबंधी क्या वरदान मांगा?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने "मन की बात" संबंधी वरदान मांगा कि "मैं दूसरों के मन की बात जान सकूं।"

प्रश्न 22. श्री सहस्रार्जुन ने युद्ध संबंधी क्या वरदान मांगा ?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने युद्ध संबंधी वरदान मांगा कि युद्ध में कोई मेरा सामना न कर सके, युद्ध करते समय मुझे 1000 भुजाये प्राप्त हों, किन्तु वे इतनी हल्की हों जिससे इनका भार मेरे शरीर पर न पड़े।

प्रश्न 23. श्री सहस्रार्जुन ने अंत (मृत्यु) संबंधी क्या वरदान मांगा?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने अंत (मृत्यु) संबंधी वरदान मांगा कि "मेरा अंत मेरी अपेक्षा मुझसे श्रेष्ठ पुरुष के हाथों हो।"

प्रश्न 24. सहस्रार्जुन ने अबाघ गति संबंधी क्या वरदान मांगा?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने अबाध गति संबंधी वरदान मांगा कि "पर्वत, आकाश, जल, पृथ्वी, पाताल में मेरी अबाध गति हो।"

प्रश्न 25. श्री सहस्रार्जुन ने उपदेशक संबंधी क्या वरदान मांग?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने उपदेशक संबंधी वरदान मांगा कि "यदि मैं कुमार्ग पर चलू तो मुझे सन्मार्ग दिखाने वाला उपदेशक प्राप्त हो।"

प्रश्न 26. श्री सहस्रार्जुन ने अतिथि संबंधी क्या वरदान मांगा?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने अतिथि संबंधी वरदान मांगा कि "मुझे श्रेष्ठ अतिथि प्राप्त हो।"

प्रश्न 27. श्री सहस्रार्जुन ने धन संबंधी क्या वरदान मांगा?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने धन संबधी वरदान मांगा कि "निरंतर दान करने पर भी मेरा धन कभी समाप्त न हो।"

प्रश्न 28. श्री सहस्रार्जुन ने किसमें अनन्य भक्ति संबधी वरदान मांगा?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने वरदान मांगा कि "आप **(भगवान श्री दत्तात्रेय)** में मेरी अनन्य भक्ति बनी रहे"।

प्रश्न 29. श्री सहस्रार्जुन ने किस विषय का ज्ञान प्राप्त होने संबंधी वरदान मांगा?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने वरदान मांगा कि "**मोक्ष**" के विषय का मुझे ज्ञान हो।"

प्रश्न 30. भगवान श्री दत्तात्रेय ने श्री सहस्रार्जुन द्वारा मांगे गये वरदानों के अतिरिक्त और क्या आशीर्वाद दिया?

उत्तर: भगवान दत्तात्रेय ने श्री सहस्रार्जुन को चक्रवर्ती सम्राट होने का आशीर्वाद भी दिया।

प्रश्न 31. श्री सहस्रार्जुन को "अहिंसा-प्रेमी" क्यों कहा जाता था?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने राज्याभिषेक के समय घोषणा करवायी "आज से मुझे (राजा को) छोड़कर जो कोई भी शस्त्र ध ारण करेगा या जो दूसरों की हिंसा में प्रवृत्त होगा वह लुटेरा समझा जाएगा, उसका मेरे हाथों वध होगा।" इस धारणा के कारण ही उन्हें "अहिंसा प्रेमी" कहा जाता है।

प्रश्न 32. श्री सहस्रार्जुन को पर्जन्य क्यों कहा जाता है?

उत्तर: ब्रह्माण्ड पुराण में वर्णित है कि "श्री सहस्रार्जुन अपने योगबल से अतिवृष्टि (अधिक वर्षा) एवं अनावृष्टि (वर्षा न होना) पर नियंत्रण कर लेते थे" **वे आवश्यकतानुसार योग बल से "मेघ-रूप" होकर वर्षा करते थे इसलिए इन्हें पर्जन्य कहा जाता है।**

प्रश्न 33. सहस्रार्जुन के अतिरिक्त कौन-कौन स्तुति-गामी है?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन के अतिरिक्त श्री दत्तात्रेय, नारद, व्यास, शुकदेव, हनुमान व गोरखनाथ भी स्मरण मात्र से उपस्थित होकर भक्तों के दु:ख दूर करते हैं।

प्रश्न 34. विष्णु पुराण में श्री सहस्रार्जुन द्वारा किसको बंदी बनाने का वर्णन है?

उत्तर: दिग्विजय के लिए निकले रावण को महिष्मती पुरी (महेश्वर) में बंदी बनाने का वर्णन है।

प्रश्न 35. आनन्द दीप या नंदादीप क्या है?

उत्तर: जब श्री सहस्रार्जुन ने रावण को बंदी बनाकर राज दरबार में प्रस्तुत कर, उसके दस सिरों पर विजयोत्सव मनाने के लिए "दस दीपक" जलवाकर रखवाये, वह दृश्य देखकर दरबारियों को आनन्द प्राप्त हुआ, तो इन दीपों को "**आनन्द दीप**" या "**नन्दादीप**" की संज्ञा दी गई है।

प्रश्न 36. क्या श्री सहस्रार्जुन "प्रथम दीपावली" के जनक हैं?

उत्तर: हाँ, सहस्रार्जुन "प्रथम दीपावली" के जनक हैं, क्योंकि रावण के दस सिरों पर, दस दीपक जलवाने पर, दीपकों की एक कतार बन गयी, यहीं से दीपकों को कतार में रखकर जलाये जाने की परम्परा कालांतर में "दीपावली उत्सव" कहलायी। अर्थात् इस प्रकार श्री सहस्रार्जुन के दरबार में "प्रथम दीपावली" मनाने की घटना घटी।

प्रश्न 37. विजयोत्सव संबंधी लोकोक्ति क्या है?

उत्तर: "**दसो शीश दस दीपक बारी। नृत्य करें रम्भादिक नारी।**"

प्रश्न 38. श्री सहस्रार्जुन को "चक्रदेव" क्यों कहा जाता है?

उत्तर: **"चक्रदेव" से तात्पर्य "काल-चक्र" से है, यह "काल-चक्र" भगवान शंकर के पास था, जिसे उन्होंने "सुदर्शन चक्र" चक्र के रूप में भगवान विष्णु को प्रदान किया, इस कारण श्री सहस्रार्जुन को "चक्रदेव" के नाम से भी जाना जाता है।**

प्रश्न 39. श्री सहस्रार्जुन को "समय" व "धन" का देवता क्यों कहा जाता है?

उत्तर: काल (समय) अनंत, अनादि, अपार, अजय व वर्तमान है, यही कारण है कि काल का अवतार श्री सहस्रार्जुन वर्तमान में "**जागृत देव**" है व उनके तंत्र-मंत्र-यंत्र वर्तमान में भी प्रभावी है, यह भी माना गया है कि, "समय (काल) ही धन है", अर्थात् श्री सहस्रार्जुन समय व धन के देवता है।

प्रश्न 40. श्री सहस्रार्जुन "धन के देवता" है, इसकी पृष्टि कैसे होती है?

उत्तर: "श्री यंत्र" जो लक्ष्मी प्राप्ति का "तंत्र-विद्या" का "यंत्र-राज" है। इसके द्वारा ललिता व त्रिपुरी सुन्दरी (जो अपने उपासकों को धन, ऐश्वर्य प्रदान करती है।) की उपासना की जाती है। इस "**श्री यंत्र**" में पूर्व की ओर "**जय राजराजेश्वरयै: नम:**" अंकित है, राजराजेश्वरयै का मूल

शब्द "राजराजेश्वर" है, जो श्री सहस्रार्जुन जी का एक नाम है।

प्रश्न 41. श्री सहस्रार्जुन को "दाम्पत्य-सुख" का देवता क्यों कहा जाता है?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन "शुक्र ग्रह" के स्वामी हैं, शुक्र ग्रह के उदय के साथ ही विवाह आदि मांगलिक कार्यों के मुहूर्त आरंभ होते हैं।

प्रश्न 42. श्री सहस्रार्जुन को तंत्राचार्य भी माना जाता है, क्यों?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन "**अथर्ववेद**" के मानने वाले थे, जिसमें पूजा-पाठ की विधि के अतिरिक्त तंत्र-मंत्र संबंधी श्लोक भी हैं, इसलिए इन्हें तंत्राचार्य भी कहा जाता है।

प्रश्न 43. तंत्राचार्य श्री सहस्रार्जुन के चमत्कारी यंत्र-मंत्र-तंत्र से किन बाधाओं का निवारण होता है?

उत्तर: **सहस्रार्जुन के चमत्कारी यंत्र-मंत्र-तंत्र से दैविक, दैहिक, भौतिक बाधाओं का निवारण होता है व समृद्धि-सिद्धि प्राप्त होती है।**

प्रश्न 44. श्री सहस्रार्जुन का गुणगान कितने पुराणों में मिलता है?

उत्तर: 18 पुराणों में से 12 पुराणों में यज्ञाचार्य, योगाचार्य, तंत्राचार्य श्री सहस्रार्जुन का गुणगान मिलता है।

प्रश्न 45. श्री सहस्रार्जुन को यज्ञाचार्य क्यों कहते हैं?

उत्तर: पद्म पुराण के अनुसार उन्होंने पूरी पृथ्वी "क्षत्रिय धर्म" के अनुसार जीत कर 10000 यज्ञ किये, इन यज्ञों में स्वर्ण के स्तम्भ व वेदियाँ बनायी जाती थीं। पर्याप्त दान-दक्षिणा बांटी जाती थी, सब देवतागण इसमें उपस्थित होते थे।

प्रश्न 46. श्री सहस्रार्जुन को "प्रकृति प्रेमी" क्यों कहा जाता है?

उत्तर: जब सूर्यदेव ने श्री सहस्रार्जुन से अपना तेज बढ़ाने हेतु भोजन स्वरूप "खाण्डव वन" की समस्त वनस्पति, वृक्ष, जड़ी-बूटियाँ आदि अग्नि में भस्म करने को कहा तो श्री सहस्रार्जुन ने यह कहते हुए मना कर दिया कि "यह सारी वन सम्पदां मेरे द्वारा रक्षित है, मैं इसे नहीं जला सकता हूँ।"

प्रश्न 47. श्री सहस्रार्जुन ने जीव-जन्तु, जानवरों के संरक्षण हेतु क्या किया?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने राज्य में **"मांस-भक्षण" निषेध** कर दिया था।

प्रश्न 48. श्री सहस्रार्जुन ने कृषि विकास के लिए क्या किया?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन ने सिंचाई सुविधा के लिए कृत्रिम नालों व नदियों का निर्माण करवाया। श्री सहस्रार्जुन के द्वारा निर्मित नदी वर्तमान में उत्तर प्रदेश में **सहस्रवाँ** या **अर्जुनेय** (**बाहुदा**) पवित्र नदी के रूप में पाई जाती है।

प्रश्न 49. एक अज्ञात लेखक ने श्री सहस्रार्जुन को क्या कहा?

उत्तर: **अज्ञात लेखन ने श्री सहस्रार्जुन को "अवधूत" कहा, जिसका अर्थ होता है "वह श्रेष्ठ पुरुष जो संसारिक मोह माया से दूर हो, अजर-अमर ब्रह्मा का चिंतन करे, सुख-दुख, लाभ-हानि, हार-जीत जैसी भावनाओं से ऊपर उठकर, सबके कल्याण की भावना रखे, श्री सहस्रार्जुन ऐसे ही "संत सम्राट" थे, जिन्होंने पूरी पृथ्वी जीतकर धर्म का शासन चलाया।"– अज्ञात**

प्रश्न 50. श्री सहस्रार्जुन का सबसे प्रमुख मंदिर कहाँ स्थित है?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन का प्रमुख मंदिर, उनकी जन्मस्थली महेश्वर (महिष्मति) में स्थित है। महेश्वर मध्यप्रदेश के खरगौन जिले में स्थित है जहाँ उन्होंने भगवान शंकर की मूर्ति में समाधि ली थी।, यहाँ सैकड़ों वर्षों से 11 शुद्ध घी से प्रज्ज्वलित "नन्दादीप" या "आनन्ददीप" भी है।, इस मंदिर को "राजराजेश्वर मंदिर" के नाम से जाना जाता है। यह स्थल इंदौर से 90 किलोमीटर, खण्डवा से 100 किलोमीटर, ध ामनोद से 13 किलोमीटर दूर है। धामनोद, इंदौर-शिर्डी या मुम्बई राजमार्ग पर स्थित है।

प्रश्न 51. श्री सहस्रार्जुन को मानने वाले भारत वर्ष में कौन-कौन हैं?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन को मानने वाले भारत वर्ष में कलचुरियों के साथ-साथ, ताम्रकार, मारु, बुनकर, सोमवंशी, व्याहुत आदि समाज के लोग हैं।

प्रश्न 52. जापान में श्री सहस्रार्जुन की पूजा किस रूप में की जाती है?

उत्तर: जापान में **"दया के देवता" "क्वानोन"** के नाम से पूजा की जाती है।

प्रश्न 53. चीन में किस संग्रहालय में श्री सहस्रार्जुन की हजार भुजाओं वाली प्रतिमा रखी है?

उत्तर: चीन के **ताईपेई नगर** के संग्रहालय में हजार भुजाओं वाली श्री सहस्रार्जुन की प्रतिमा रखी हुई है।

प्रश्न 54. भारत के किस पड़ोसी देश में श्री सहस्रार्जुन का प्राचीन मंदिर है?

उत्तर: **नेपाल** में अमलेशगंज मार्ग पर परवानीपुरा एवं सेमरा के बीच 8 किलोमीटर पूर्व की ओर श्री सहस्रार्जुन का प्राचीन मंदिर है।

प्रश्न 55. श्री सहस्रार्जुन के विश्व में कहाँ-कहाँ अनुयायी पाय जाते हैं?

उत्तर: श्री सहस्रार्जुन के अनुयायी भारत के अतिरिक्त उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान, अफगानिस्तान के उत्तरी भाग, जर्मनी, जापान, नेपाल, भूटान आदि क्षेत्रों में पाये जाते हैं।

समाज शिरोमणि डाक्टर गोरख प्रसाद

डाक्टर गोरख प्रसाद जी न केवल हैहय क्षत्रिय समाज के जगमगाते रत्न थे वरन् इलाहाबाद के भी गणमान्य प्रतिष्ठित नागरिक थे। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के गणित के लोकप्रिय प्रोफेसर थे जिससे उनके विद्यार्थी उनका बहुत सम्मान करते थे। वे न केवल उच्चकोटि के उद्भट विद्वान थे वरन् उससे अधिक उच्चकोटि के मानव थे। **एक शब्द में वे हैहय क्षत्रिय समाज के आदर्श रत्न, आदर्श शिक्षक और आदर्श नागरिक के साथ-साथ आदर्श महामानव भी थे। तभी तो उनकी दृष्टि में सारे मानव समान थे। वे 'आत्मवत सर्वभूतेषु' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के अनुगामी थे। इस प्रकार उनका मन-मस्तिष्क भारतीय सभ्यता संस्कृति से ओत-प्रोत था। वस्तुतः वे ऋषि परम्परा के पोषक थे और विद्यार्थियों तथा युवाओं को सार्थक जीवन जीने का मंत्र दिया करते थे। वे स्वतन्त्र, सम्पन्न, समृद्ध राष्ट्र के स्वप्नदृष्टा थे जिसे युवाओं के हाथों साकार कराना चाहते थे। ऐसी ही कामना कभी आचार्य चाणक्य ने भी की थी और भारत को उत्कर्ष का सूत्र प्रदान किया था जिसके फलस्वरूप भारतीय इतिहास ने करवट बदली थी।**

डाक्टर गोरख प्रसाद जी का जन्म **28 मई 1896** को गोरखपुर में हुआ था। यह उनका जन्म क्षेत्र अवश्य था किन्तु ज्ञानार्जन के लिए वे काशी विश्वविद्यालय चले गए थे और 1918 में उन्होंने एम.एस-सी. गणित में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर यश अर्जित किया। उनकी इस योग्यता के आधार पर विश्वविद्यालयीन अधिकारियों ने उनके नाम की अनुशंसा पी.सी.एस. की नौकरी के लिए की। **इधर पी.सी.एस. में चयन से परिवार में खुशी की लहर फैल गयी उधर गुरु डा. गणेश प्रसाद जी जो काशी विश्वविद्यालय के गणित के विभागाध्यक्ष थे, उनके लिए इस प्रकार की नौकरी में जाना उपयुक्त नहीं समझ रहे थे। वे तो उन्हें गणितीय गवेषणा में लगाना चाहते थे। अपने गुरु की इच्छा के सम्मुख वे नत मस्तक हो गए और अपनी दिशा ही बदल ली। इनकी प्रतिभा और लगन से प्रभावित होकर पंडित मदन मोहन मालवीय ने काशी विश्वविद्यालय से आर्थिक सहायता प्रदान करा कर उन्हें गणित की गवेषणाओं के लिए एडिनबरा भेजा। वहां से वे खगोल विज्ञान में गवेषणा पूर्ण कर डी. एस-सी की उपाधि प्राप्त कर लौट आए। तत्पश्चात प्रयाग को अपना कार्य क्षेत्र मानकर सन् 1925 में गणित विभाग के रीडर का पद प्राप्त कर सेवा निवृत्ति की अवधि तक 32 वर्षो तक पदस्थ रहे।**

इस अवधि में उन्होंने विद्यार्थियों के हितैषी, शुभचिंतक, मार्गदर्शक, निर्माता आदि की महत्वपूर्ण भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। अब उनकी दृष्टि विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण पर केंद्रित हो गयी जिससे वे अपने शक्ति भर देश सेवा करते हुए एक सम्पन्न समृद्ध राष्ट्र का निर्माण कर सके। वे हृदय से चाहते थे कि **हमारा देश प्रत्येक दृष्टि से विकसित राष्ट्र की कोटि में स्थान ग्रहण करे। हम बिना किसी की सहायता-सहयोग के आत्मनिर्भर हों। इन सपनों के दृष्टा होते हुए वे इनकी पूर्ति में प्राणपण से जुट गए।** विद्यार्थियों की प्रत्येक समस्याओं का निराकरण वे अपने स्तर पर हल करने में निपुण थे। किसी भी छात्र की पुस्तकों, आर्थिक सहयोग, पठन-पाठन की कठिनाइयों तथा अन्य प्रकार की उलझनों को सुलझाने में प्रवीण थे। **वस्तुतः वे तो एक ऐसे कुंभकार थे जो गीली मिट्टी को पात्र ही नहीं वरन् सुपात्र बनाने की क्षमता रखते थे। तभी तो अपने जीवन काल में हजारों विद्यार्थियों को बहुमूल्य पात्र बनाया था। वे तो ऋषि परम्परा का पोषण करते हुए अपने शिष्यों को मुक्तहस्त से विद्यादान करने में सदा तत्पर रहते थे। संक्षेप में डाक्टर गोरख प्रसाद जी ऐसे पारस पत्थर थे कि जिसे वे छू लेते वह कान्तिमय स्वर्ण बन जाता था। जीवन भर उन्होंने सही कार्य करते हुए असीम आनन्द का अनूभव किया था। उनके जीवन की गाढ़ी कमाई विद्या, विद्यार्थी और विश्वविद्यालय ही था।**

परतन्त्र भारत में जन्म लेकर स्वतन्त्र भारत की आकांक्षा उनके मन में भी लोगों की भांति बलवती थी। वे भी देश की स्वतन्त्रता के लिए सजग-सतर्क थे। उन दिनों इलाहाबाद में स्वतन्त्रता आन्दोलन की जो ज्वाला प्रज्वलित हो रही थी वे उसके मात्र मौन दर्शक भर नहीं थे वरन् परोक्ष रूप से इसमें आहुतियाँ भी देते रहे। विद्यार्थियों में स्वतन्त्रता के प्रति ललक-लगाव उत्पन्न करने में अध्यापक समुदाय भी सक्रिय था। वे भारत के भावी कर्णधारों को अभिमंत्रित कर रहे थे तो उनके हृदय में स्वतन्त्रता की अग्नि भी धध

का रहे थे। एक प्रकार से वे दोहरे दायित्व का निर्वाह उन दिनों कर रहे थे। एक ओर पाठ्य पुस्तकों के विषय-अध्यापन का कार्य कर रहे थे तो दूसरी ओर गाँधी, नेहरू, सुभाष, पटेल, लाल, बाल, पाल, द्वारा चलाये जा रहे स्वतन्त्रता आनदोलन का अध्यापन करते हुए युवा शक्ति में शंख फूंक रहे थे। अध्यापकों के उन दिनों के योगदान को कदापि भुलाया नहीं जा सकता।

उन दिनों डाक्टर गोरख प्रसाद जी **जब राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन** के सम्पर्क में आए तब उन्हें प्रेरणा मिली कि स्वतन्त्रता के साथ-साथ मातृभाषा हिन्दी को भी सम्मुन्नत बनाना है जिससे इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान किया जाय। इस हेतु उनके मन में ज्वलंत भावना बलवती हुई कि प्रचुर मात्रा में हिन्दी में साहित्य का निर्माण करना चाहिए। **सभी विषयों में चाहे सामान्य हो या तकनीकी प्रचुर मात्रा में प्रबुद्ध वर्ग को हिन्दी में लेखन कार्य करना चाहिए। इस उद्वेश्य की पूर्ति के लिए डाक्टर गोरख प्रसाद प्राणपण से हिन्दी की सेवा में जुट गए। विद्वानों को पूर्वाभास हो ही गया था कि स्वतन्त्रता तो प्राप्त होगी ही। उसे अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए भाषा, भूमि, जन, मन को भी समृद्ध-समर्थ बनाना अपेक्षित है। इस दिशा में डाक्टर साहब ने हिन्दी में प्रचुर मात्रा में साहित्य का सृजन किया। सामान्य जन से संबधित विषयों से हिन्दी में पुस्तकें लिखकर उन्होने बडा महत्वपूर्ण कार्य किया। फोटोग्राफी विषय पर उनकी फोटोग्राफी नामक पुस्तक बडी रोचक तथा उपयोगी है जिस पर उन्हें मंगला प्रसाद पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इसी प्रकार सरल विज्ञान सागर, तैरना, लकड़ी पर पालिश एवं फल विज्ञान पर पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इन पुस्तको की रचना में उनका दृष्टिकोण यह रहा कि व्यक्ति इनके ज्ञान के माध्यम से यह व्यवसाय अपने आप कर आजीविका भी चला सकता है। डाक्टर साहब की पुस्तकें-भारतीय ज्योतिष का इतिहास, नीहारिकाएँ, स्फेरिकल, स्ट्रॉनामी, सौर परिवार, चन्द्र सारिणी आदि बड़ी लोकप्रिय पुस्तकें है।**

डाक्टर साहब प्रयाग विश्वविद्यालय के विज्ञान परिषद् द्वारा निकलने वाली '**विज्ञान पत्रिका**' के जब सम्पादक हुए तब उन्होने पत्रिका को एक ओर आत्मनिर्भर बनाने के लिए सदस्या संख्या बढ़ाने का अथक प्रयास किया तो दूसरी ओर उसमें जनोपयोगी तथा व्यावसायिक लेखों से पत्रिका का आकर्षण बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया। इसी दौरान डाक्टर साहब ने ज्योषित विषेयक लेख-**तारे कितने बड़े** है, **तारा समूह, पंचागं शोध,** आकाश के 50 सबसे अधिक चमकीले तारे तथा तारे क्या है आदि लेख विज्ञान पत्रिका में लिखे। लगभग चार वर्षो तक विज्ञान पत्रिका के प्रधान सम्पादक रहते हुए इस पत्रिका को बड़ी लोकप्रियता प्रदान की जिसमें वे वैज्ञानिक साहित्य और वैज्ञानिकों को लेखन के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन देते थे। सूप्रसिद्ध गणितज्ञ होते हुए भी वे बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे।

प्रयाग विश्वविद्यालय में रहते हुये डाक्टर साहब ने कार्यकारिणी समिति के सदस्य की हैसियत से कई महत्वपूर्ण कार्य किये। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के परीक्षा मंत्री रहते हुए हिन्दी के प्रचार-प्रसार के यथेष्ठ कार्य किया। 28 वें हिन्दी साहित्य सम्मेलन के विज्ञान परिषद् के सभापति के रूप में हिन्दी को तीव्र गति से बढ़ाने पर बल दिया था और प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन को प्राथमिकता बताया था।

प्रयाग विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त कर डाक्टर साहब हिन्दी सेघा के लिए काशी नागरी प्रचारिणी सभा के विश्वकोश के सम्पादन हेतु काशी चले गए। वहां बड़ी लगन तथा कुशलता से सम्पादन कार्य सम्पन्न करने लगे। वस्तुतः ये अंग्रेजी के एंसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के आधार पर हिन्दी में विश्वकोश का प्रणयन और प्रकाशन तो पूर्व में ही करना चाहते थे किन्तु परिस्थितिवश ऐसा नहीं कर पाये। काशी पहुंच कर इस कार्य में पूरे मनोभाव से संलग्न हो गए। उनकी लगन और निष्ठा से विश्वकोश का प्रथम खण्ड प्रकाशित हो गया था।

दु:खद अंत

फिर एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना-चक्र ऐसा आया कि वे अपने सेवक को तैरना सिखाने के लिए गंगा ले जाया करते थे। एक दिवस सेवक डूबने लगा। डाक्टर साहब तत्काल उसकी प्राण रक्षा के लिए गंगा में कूद पड़े। परोपकार की उद्दाम भावना से प्रेरित वे स्वंय माँ गंगा की गोद में समा गए। उनका जीवन परहिताय का ऐसा पुंज था जो अंतिम क्षण भी '**परहित सरिस धर्म नहि भाई**' के धमार्थ आत्मोत्सर्ग करने में तनिक भी पीछे न रहे। सचमुच जिजीविषा तो जनकल्याणार्थ ही होनी चाहिए जिसके लिए डाक्टर गोरख प्रसाद जी एक आदर्श है। **अद्योपान्त वे राष्ट्र कल्याण, समाज कल्याण, हिन्दी कल्याण, विद्यार्थी कल्याण, के लिए समार्पित थे। ऐसे महामना को शत-शत वन्दन।**

ओम मालवीय, भोपाल

19-सी गुलाबी बाग डी.डी.ए. एम.आई.जी. फ्लैट्स, नई दिल्ली.11007

7521489

सं. जागृति/95/850

प्रिय श्री सुखराम जी,

संचार मंत्रालय के डाक-तार विभाग से समय-समय पर भारत के महापुरुषों, संतो, विद्वानों एवं सर्वोच्च कोटि के ऐसे महानुभावों जिनकी देन और छाप भारत-देश की सेवा के दरम्यान पड़ी है, उन पर एक विशेष डाक-टिकट निकाल कर उनकी स्मृति को संचार मंत्रालय ने सुदृढ़ एवं अक्षुण्ण कर एक अच्छा काम किया है।

कुछ ऐसे विद्वान भी इस देश में हुए हैं, जिनकी देन तो महती एवं अप्रतिम है, किन्तु उन पर संचार मंत्रालय का ध्यान आकृष्ट नहीं किया गया है। उनमें से एक महान गणितज्ञ **डा. गोरख प्रसाद** अपने समय के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान माने जाते थे। इनका जन्म 28 मार्च, 1896 को वाराणसी जनपद के रमासिंह पुर ग्राम में हुआ था। 1920 में उन्होंने काशी विश्वविद्यालय में गणित के प्राध्यापक के रूप में अध्यापन कार्य प्रारंभ किया। इसी समय से गणित पर उनकी अभिरुचि खोज एवं महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों की प्रशंसा होने लगी।

डॉ. गोरख प्रसाद ने केन्द्रीय सरकार द्वारा गठित कैलेंडर रिफॉर्म कमेटी, तकनीकी शब्दावली समिति, स्टेशनरी ऐडवाइजरी बोर्ड और ऐस्ट्रालोजी के सदस्य के रूप में देश की महान सेवा की। डॉ. गोरख प्रसाद काशी नागरी प्रचारिणी सभा में विश्व हिन्दी कोष के निर्माण में भारत सरकार की ओर से वैज्ञानिक शब्द कोष के सम्पादक रहे।

गणित की पुस्तकों में इनकी लिखी पुस्तकें भारत के तमाम विश्वविद्यालयों एवं उच्च कक्षाओं में पढ़ायी जाती है, जिनमें उल्लेखनीय हैं।

देश के ऐसे यशस्वी सपूत की स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए यह उचित होगा कि **आगामी 28 मार्च, 1996** को इनकी जन्म शताब्दी के अक्सर पर डाक टिकट जारी किया जाए ताकि आज हमारे देश वासियों को इनकी प्रतिभा से अवगत कराने में आपके विभाग को यश एवं श्रेय प्राप्त हो। पुरानी पीढ़ी की प्रतिभाओं को आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणा के श्रोत के रूप में प्रस्तुत करना, यह विभाग पर आपकी छाप होगी और ऐसी खोज जारी रखने की प्रेरणा देगी।

आप से नम्र निवेदन है कि इस सम्बन्ध में नियमत: जिस ढंग से सरकारी स्तर पर विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए विभागीय कमेटी को निर्देश देने की कृपा करेंगे ताकि उनकी सलाह समय पर मिल सके और महान गणितज्ञ डा. गोरख प्रसाद की जन्मशताब्दी पर डाक टिकट समयपर निकालने की व्याख्या हो सके।

आदर के साथ

आपका

वाल्मीकि चौधरी

सेवा में,

माननीय श्री सुखराम जी,

मंत्री, संचार मंत्रालय,

संचार भवन, नई दिल्ली

जायसवाल जागृति के प्रथम अध्यक्ष स्व. वाल्मीकि चौधरी जी ने लगभग 25 वर्ष पूर्व तत्कालीन संचार मंत्री श्री सुखराम जी को डॉ. गोरखप्रसाद जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर उनके नाम डाक-टिकट जारी करने का अनुरोध किया था। उसी पत्र की दुर्लभ प्रतिलिपि यहां प्रकाशित की जा रही है। उल्लेखनीय है कि यह कार्य अभी सम्पन्न नहीं हुआ। स्व. वाल्मीकि हमारे प्रथम राष्ट्रपति **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी** के निजी-सचिव थे। उनके सुपुत्र श्री कृष्णदास चौधरी जी हमारे वरिष्ठ पदाधिकारी हैं।

देश में समाज के समस्त शीर्षस्थ नेतृत्व से साग्रह अनुरोध है कि उनकी जन्म शताब्दी पर न सही तो कम से कम आगामी 28 मार्च 2021 को उनकी 125वीं जन्म जयन्ती पर ही सही हम सब मिलकर उनके नाम पर डाक-टिकट जारी करवाने का सार्थक संकल्प लें!

राजाराम जायसवाल

प्रधान सम्पादक

स्वर्गीय डॉ. गोरख प्रसाद जी और वैज्ञानिक साहित्य

डॉ. सत्य प्रकाश

पाँच मई, सायंकाल, को विचित्र परिस्थिति में डॉ. गोरख प्रसाद जी का आकस्मिक निधन हो जाना हमारे लिए हृदय विदारक घटना है। डॉक्टर साहेब का जन्म २८ मार्च १८९६ ई. को हुआ था। इस समय उनकी ६५ वर्ष की आयु थी। अच्छे तैराक थे और दूसरों को तैरना सिखाने में निपुण। इधर कुछ दिनों से मधुमेह आरम्भ हो गया था, बुढ़ापा आ ही रहा था, गंगा में डूबते हुए अपने एक सेवक की प्राण रक्षा के प्रयास में थक गये, और किनारे पर पहुँच सकने से पूर्व ही उनकी हृदयगति रूक गयी, ओर वह काशी नगरी में गंगा की भेंट हो गये।

गत पच्चीस वर्षों में मेरी और उनकी घनिष्टता बहुत बढ़ गयी थी, और हम दोनों वैज्ञानिक साहित्य के सृजन के अनेक प्रकार के स्वप्न देखा करते थे। डॉ. गोरख प्रसाद जी उन कुशाग्र बुद्धि के विद्यार्थियों में से थे जो मैट्रिकुलेशन से लेकर ऊपर तक की समस्त परीक्षाओं में सर्वप्रथम आये। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। वे अच्छे शिल्पी थे। साहित्य की रचना भी एक शिल्प है, जिसके वे कलाकार थे। गत तीस वर्षों के भीतर उन्होंने बहुत कुछ लिखा, विविध विषयों पर लिखा, आबाल-वृद्ध सभी के लिए लिखा; विशेषज्ञों के लिए भी लिखा, और जनता के लिए भी। **जिन पुस्तकों पर उनका नाम है, वे तो उनकी रचनायें हैं ही, कुछ ऐसी भी हैं, जिनके लेखक परोक्ष में डॉक्टर साहेब थे। अन्यों की कई पुस्तकों का सम्पादन और संशोधन इस प्रकार किया, कि वह नई पुस्तक ही बन गयी, पर प्रकाशित हुई मूल लेखक के नाम पर।**

उनकी सबसे पहली ख्यातिप्राप्त पुस्तक "**फोटोग्राफी**" थी, जिसका प्रकाशन इण्डियन प्रेस ने किया, और जिस पर संवत् १९८८ वि. में हिन्दी साहित्य सम्मेलन से **मंगला प्रसाद पारितोषिक** मिला। यह पुस्तक डॉक्टर साहेब ने अनुभव के आधार पर लिखी थी। डॉक्टर साहेब के लिखने का आदर्श यह था कि लोग उनके लिखे को पढ़कर कुछ करना सीख जायँ। केवल बौद्धिक तुष्टि से उन्हें सन्तोष न था। फोटोग्राफी पुस्तक की सफलता इसी बात में थी कि उसको पढ़कर फोटोग्राफी में रुचि रखने वाले को छाया चित्र में सहायताा मिले। उन्होंने '**फलसंरक्षण**' पुस्तक जिस समय लिखी, उस समय उनके घर पर जेली बनाने और डिब्बाबन्दी के प्रयोग प्रारम्भ हो गये। रोज किसी न किसी प्रयोग को करते, और उनके दिनों के प्रयोग में फलसंरक्षण सम्बंधी जो नया उद्योग प्रारम्भ हुआ था, उसके विस्तार को समझने का प्रयत्न करते। इसी प्रकार श्री दयाराम जुगड़ान ने विज्ञान परिषद् के पास 'मधुमक्खी पालन' पर एक छोटी-सी पुस्तिका लिखकर भेजी, तो डॉक्टर साहेब को इस विषय की धुन लग गयी, और मधुमक्खी पालन कला स्वयं समझने का प्रयास आरंभ किया। जब उसमें दक्ष हो गये, तब जुगड़ान जी की पुस्तक को इतने विस्तार से सम्पादित किया और स्वयं उसमें इतना लिखा कि उस ग्रंथ का रूप ही 'कार्टून और केरिकेचर' पुस्तक का अनुवाद मेरी पत्नी के सुपुर्द किया, जो परिषद् से '**व्यंग चित्रण**' नाम से प्रकाशित हुआ है। पुस्तक इसलिए डॉक्टर साहेब को पसन्द थी, कि इसके आधार पर नौसिखिया घर बैठे व्यंग चित्र बनाना सीख सकता है। हम लोग अंग्रेजी पुस्तक को समझने में बहुत भूलें करते थे, पर डॉक्टर साहेब की प्रतिभा ऐसी थी, कि उन्होंने व्यंग चित्रण की समस्त बारीकियां समझ लीं, और इस प्रकार उनकी सहायता से सुन्दर पुस्तक तैयार हो सकी। ऐसी ही एक पुस्तक 'कागज के फूल' बनाने के संबंध में थी, जिसका कुछ अंश डॉक्टर साहेब की सहायता से 'विज्ञान' में छपा।

डॉक्टर साहेब ने '**लकड़ी पर पालिश**', '**जिल्दसाजी**' '**कलम पैबन्द**' आदि पुस्तकें इसी दृष्टि से परिषद् से प्रकाशित करवायीं कि इनको पढ़कर लोगों के पल्ले कुछ पड़े। वे इस बात के इच्छुक थे कि हिन्दी में 'साइंटिफिक अमेरिकन इनसाइक्लोपीडिया आफ्र रेसिपीज' और 'होम डॉक्टर' की तरह की कोई पुस्तक हो। दो वर्ष उन्होंने इस संबंध में प्रयत्न किया, और स्वयं भी लिखा और दूसरों से

भी लिखाया। **'उपयोगी नुस्खे'** और **'घरेलू डॉक्टर'** नाम से इन दोनों को एक-एक खण्ड विज्ञान परिषद् से प्रकाशित हुए। वे बराबर इन दिनों भी कहा करते थे कि इन अपूर्ण ग्रन्थों को पूरा कर डालना चाहिए। **'सरल विज्ञान सागर'** ग्रन्थ उन्होंने अकेले एक खण्ड में सम्पादित कर डाला था और परिषद् से प्रकाशित कराया। विज्ञान परिषद् के पास प्रकाशन के लिए कभी धन न रहा, पर प्रकाशन के आर्थिक पहलू पर डॉक्टर साहेब ने कभी चिन्ता न की। वे कोरे साहित्यिक नहीं, कुशल व्यावसायिक भी थे। उन्होंने अनेक बार परिषद् के कार्य के लिए अपने पास से धन लगाया, और परिषद् को किसी आयोजना में घाटा न सहने दिया। **डॉक्टर साहेब व्यावहारिक व्यक्ति थे- उन्होंने जब कभी भी कोई आयोजना हाथ में ली, किसी में भी आर्थिक तंगी न रही।**

डॉक्टर साहेब गणित के प्राध्यापक थे, पर कहा करते थे कि उनको वास्तविक रुचि तो हाथ के काम में थी, वे इंजीनियर की प्रकृति के थे। भवन निर्माण में उनकी रुचि विशेष थी, पर उन्होंने गणित विषय की सूक्ष्मता की कभी उपेक्षा न की। यही कारण है कि उनकी उच्च पुस्तकें गणित के अध्ययन-अध्यापन क्षेत्र में इतनी प्रिय हुई। **डॉक्टर साहेब उन इने-गिने व्यक्तियों में थे जो भारतीय और पाश्चात्य दोनों ज्योतिषों के मर्मों को समझते-बूझते हों। उन्होंने हिन्दुस्तानी एकेडमी से 'सौर परिवार' नामक** बड़ा भव्य ग्रन्थ प्रकाशित कराया। खेद की बात है कि इस ग्रन्थ का एक ही संस्करण निकलकर रह गया यह ग्रन्थ इतने सरल और सुगम विस्तार के साथ लिखा गया था। कि एक बार पढ़ना आरम्भ कर दीजिए, तो पूरा किये बिना छोड़ने को मन न होगा। डॉक्टर साहेब ने बिहार-राष्ट्रबाद-परिषद् में नीहारिकाओं पर व्याख्यान दिए जो **'निहारिका'** नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। काशी नागरी प्रचारिणी सभा से आपकी **'चन्द्र सारणी'** प्रकाशित हुई। ज्योतिष की गणना के लिए ऐसी सारणियों की नितान्त आवश्यकता रहती है। पुरानी सारणियों के अनुसार जो गणना की जाती है, उनमें त्रुटियाँ उत्पन्न हो गयी हैं, और वे प्रत्यक्ष वेध के प्रतिकूल ठहरती हैं। **डॉक्टर साहेब सदा इस पक्ष के थे कि पंचांगों को तैयार करने के लिए त्रुटिहीन सारणियाँ हों। इन सारणियों को तैयार करने के लिए परिश्रम-साध्य गणनायें करनी पड़ती हैं।** डॉक्टर साहेब ने **'भारतीय ज्योतिष का इतिहास'** लिखा जो हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश, से १९५६ ई. में प्रकाशित हुआ। एक पुस्तक **'गणित ज्योतिष'** नाम की डॉ. गोरख प्रसाद ने मध्य प्रदेश सरकार की आयोजना में लिखी थी, पर बाद को वह उन्होंने स्वत: 'पोथीशाला' से प्रकाशित करायी।

डॉ. गोरख प्रसाद ने कई वर्ष 'विज्ञान' पत्रिका का भी सम्पादन किया था और जब उनका नाम प्रधान सम्पादक के रूप में नहीं भी जाता था, तब भी वे विज्ञान के लिए बहुत कुछ लिखा करते थे। 'विज्ञान' के पृष्ठों में उनकी लिखी सामग्री के संकलन कराने की आवश्यकता है। बच्चों के लिए भी उन्होंने लोकप्रिय भाषा में बहुत लिखा। ('बालसखा' की पुरानी फाइलों में उनके लेख मिलेंगे)। बच्चों के लिए वे तुकबन्दी भी कर लेते थे। अभी कुछ महीनों की ही बात है, कि उनकी **दौहित्री, सुधा,** का विवाह मिर्जापुर में था, उन्होंने अपनी **पोती, राशि,** को रुड़की पत्र में लिखा- **'नानी जातीं रोज बजार। चीजें लाती कई हजार।। सुधा बहिन की शादी होगी। बोलो राशि तुम क्या लोगी'** उनके पोती-पोता, नाती-नतिनी, और उनके मित्रों के परिवार के बच्चे उनके बड़े प्रसन्न रहते थे। उन्हें तरह-तरह के खिलौने बनाकर वे देते। उनके घर में छोटी सी वर्कशाप थी, फोटो खींचने का कक्ष था, पर वे अपने चित्र खिंचाने में सदा संकोच करते, किसी न किसी बहाने से टाल जाते। अपने विषय में कभी बातें करते ही न थे। डॉक्टर साहेब की विज्ञान-विषयक रेडियो वार्त्तायें भी बड़ी सफल होतीं। मैंने कई बार उनसे कहा कि उन वार्त्ताओं की एक प्रतिलिपि परिषद् को दे दिया करें। यदि इन वार्त्ताओं का संग्रह हो जाय, तो वह भी बड़ा उपयोगी रहेगा।

आजकल तो वह काशी नागरी प्रचारिणी सभा के विश्वकोश के विज्ञान-अनुभाग के सम्पादक थे। यह सौभाग्य की बात थी कि विश्वकोष के लिए सेवायें प्राप्त हो गयीं। इसके लिए वे बड़ा परिश्रम कर रहे थे और हमें पूरा विश्वास था कि उनके सहयोग से यह विश्वकोष हमारे साहित्य का गौरव बन सकेगा। डॉ. गोरख प्रसाद जी के आकस्मिक देहावसान से जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना सरल नहीं है।

—बेली रोड, इलाहाबाद

डॉक्टर गोरख प्रसाद–जीवन वृत्त और विचार, उन्हीं के शब्दों में

संकलनकर्ता–जटाशंकर द्विवेदी

शिक्षा

जब मैं इंटरमीडियेट में पहुँचा– मैं उस समय गोरखपुर के सेंट ऐंड्रयूज कॉलेज का छात्र था– तो मैंने एक दिन अपने गणित अध्यापक की मेज पर **डॉक्टर साहेब** (डॉ. **गणेश प्रसाद**) की बनाई "**डिफरेंशियल कैलकुलस**" नाम की पुस्तक पड़ी देखी। उस समय मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि एक हिन्दुस्तानी भी इतना बड़ा पंडित हो सकता है कि इतने कठिन विषय पर पुस्तक लिख सके– मैंने उस समय तक उच्च गणित पर अन्य कोई हिन्दुस्तानी की लिखी पुस्तकें नहीं देखी थीं। इंटरमीडियेट की हमारी सब पाठ्यपुस्तकें अंग्रेजों की लिखी थीं।

मैंने बी. एस-सी. सेंट्रल हिन्दू कॉलेज, बनारस से पास किया। वहीं एम. एस-सी. के लिये गणित पढ़ा। फाइनल परीक्षा मार्च १९१८ में होने वाली थी। इसी बीच में खबर मिली कि हिन्दू विश्वविद्यालय की स्वीकृत सरकार से आ गई। परीक्षायें हम लोगों को इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में देने के बदले काशी विश्वविद्यालय में देनी होगी। यह भी पता चला कि समयाभाव के कारण परीक्षायें मार्च के बदले जुलाई में होंगी। खैर, यह तो अपने हाथ में नहीं था कि परीक्षायें इलाहाबाद ही में दे इसलिये जुलाई तक उन सब बातों को स्मरण रखने का लगातार परिश्रम करना पड़ा जिससे मार्च में परीक्षा देने के बाद छुट्टी मिल जाती। इस बीच में मेरा नामिनेशन डिप्टी कलेक्टरी के लिये हो गया। जुलाई में, परीक्षा तिथि से चार दिन पूर्व, मैं नैनीताल में इंटरब्यू के लिये बुलाया गया। इसी बीच में मैंने फिनैंस डिपार्टमेंट की कम्पीटीशन परीक्षा में शरीक होने की स्वीकृति भी प्राप्त कर ली। चूँकि मैं बी. एस-सी. में सर्वप्रथम हुआ था, इसलिए मेरे अध्यापकों को बहुत आशा थी कि मैं फिनैंस डिपार्टमेंट में चुन लिया जाऊँगा। परन्तु जुलाई के पहले ही डॉक्टर साहेब की नियुक्ति सेंट्रल हिन्दू कॉलेज के प्रिन्सिपल और काशी-विश्वविद्यालय के गणिताचार्य के पदों पर हो गई। कॉलेज खुलते ही उन्होंने मुझे बुला भेजा और मुझसे बहुत देर तक बातें की। यही डॉक्टर साहेब से मेरी पहली भेंट थी।

डॉ. गणेश प्रसाद का प्रभाव

डॉक्टर साहेब ने मुझे समझाया कि डिप्टी कलेक्टरी में क्या रखा है। रोज कलेक्टर की डांट सुननी पड़ती है। अपने अन्त:करण के विरुद्ध अक्सर काम करना पड़ता है। फिर, डिप्टी कलेक्टरों के पास कुछ धन नहीं बचता। यह भी कहा कि "मैंने पचास हजार रुपया बैंक में जमा कर लिया है, यद्यपि थोड़े ही दिनों से मुझे अच्छा वेतन मिल रहा है। भला किसी डिप्टी कलेक्टर के पास इतना धन जमा हो सकता है। और फिनेन्स डिपार्टमेंट में ही क्या रखा है? अकाउंटैंट जनरल और क्लार्क में अन्तर ही क्या है? अकाउंटैंट जनरल भी क्लार्क ही है, केवल वेतन भर अच्छा है। **प्रोफेसरी से बढ़कर कोई उद्यम नहीं। गणित में खोज करने से जो ख्याति मिलेगी वह न तो डिप्टी में और न फिनैंस डिपार्टमेंट में मिल सकती है। यदि तुम गणित को ही अपना जीवन समर्पित करो तो तुम्हें कभी पछताना न पड़ेगा। ७५ मासिक की छात्रवृत्ति भी दिला देंगे; परन्तु यह प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी, "तुम डिप्टी कलेक्टरी के लिये इंटरब्यू में न जाओगे और न फिनैंस की परीक्षाओं में बैठोगे।"**

मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। जिस महान पुरुष के बारे में मैंने इतनी बातें सुनी थीं उन्हीं कि मातहती में मैं गणित का अध्ययन कर सकूँगा, उसमें नयी बातें निकाल सकूँगा, पीछे गणित का आचार्य बन सकूँगा, इससे बढ़कर क्या चाहिए था। मैंने तुरन्त प्रतिज्ञा की। घर वालों से कह दिया कि डिप्टी कलेक्टरी के लिये परीक्षा से चार दिन पहले इंटरब्यू में जाना पड़ेगा। बीच में घुड़सवारी की सर्टीफिकेट भी लेनी पड़ेगी। समय कम है। घुड़सवारी के पीछे पड़े तो हो सकता है इधर हाथ-पैर भी टूटे, उधर डिप्टी कलेक्टरी भी न मिल और ऊपर से परीक्षा भी बिगड़ जाय। फिर, डिप्टी क्लेक्टरी मुझे विशेष अच्छी भी नहीं जँचती। इस प्रकार से तो डिप्टी क्लेक्टरी से जान छुड़ाई। फिनैंस के लिये मैंने यह कह दिया कि उसका क्या ठिकाना? भारतवर्ष के अच्छे से अच्छे लड़के उसमें परीक्षा देते हैं। केवल तीन-चार लिये जाते हैं। क्या पता

उसमें आ सकेंगे या नहीं? **इधर गणित की असिस्टेंट प्रोफेसरी का मिल जाना एक प्रकार से निश्चय है। पिता जी मेरी इच्छा देख कर राजी हो गये। फिर क्या वाधा थी? मैं बी. एस-सी. की परीक्षा देने के बाद से ही डॉक्टर साहेब का शिष्य हो गया और निश्चय रूप से कह सका हूँ कि डॉक्टर साहब की बात मानने के कारण कभी मुझे पछताना नहीं पड़ा।**

१९१८ की जुलाई से लेकर अन्तिम तिथि तक डॉक्टर साहब और मेरे बीच गुरु और शिष्य का सम्बन्ध बना रहा। जैसे-जैसे मेरा उनसे सम्बन्ध घनिष्ट होता गया, तैसे-तैसे उनके प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ती गई। मैंने उनके बराबर परिश्रम करने वाला– उनका आधा भी परिश्रम करने वाला– नहीं देखा।

जब मैं १९२८ में सहायक प्रोफेसर के पद पर काशी विश्वविद्यालय में नियुक्त हुआ तब डॉक्टर साहेब ने मुझे सलाह दी कि जब तक कि चारपाई छोड़ना असम्भव न हो जाय तब तक पढ़ाने में नागा न करना चाहिए।

सरल वैज्ञानिक साहित्य के प्रणेता–डॉ. गोरख प्रसाद

बकटलाल ओझा

"आपका सुझाव तो ठीक है, पर हम विज्ञान परिषद् की ओर से हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों पर पाठ्य-पुस्तकें इसलिए प्रकाशित करना नहीं चाहते कि कहीं परिषद् लाभ के लोभ में आकर पूर्ण व्यवसायी न बन जाए, जिससे परिषद् अपने सेवा क्षेत्र से एकदम अलग-अलग हो जाए और साथ ही उस पर रीडर बाजों का अधिकार हो जाए, जैसा कि आजकल अन्यत्र संस्थाओं में देखा जाता है। हम तो चाहते हैं कि व्यवसायी प्रकाशकों के लिए मार्ग प्रशस्त किया जाए। पहले परिषद् ने विज्ञान प्रवेशिका भाग १ और २ प्रकाशित की थी, पर जब माँग बढ़ी और दूसरे प्रकाशक इस क्षेत्र में आए तो परिषद् इस क्षेत्र से हट गई। इसीलिए परिषद् आज स्वार्थियों से बची हुई है, अन्यथा यह भी स्वार्थियों का अखाड़ा बन जाता।"

ये शब्द भाई **डॉ. गोरखप्रसाद के हैं**, जो उन दिनों विज्ञान परिषद् के संभवत: प्रधानमंत्री और 'विज्ञान' के प्रधान संपादक थे। उन दिनों परिषद् की आर्थिक अवस्था बड़ी ही शोचनीय थी। किसी प्रकार परिषद् जीवित थी और उसके मासिक पत्र 'विज्ञान' ने २८ वें वर्ष में प्रवेश किया था। **आचार्य रामदासजी गौड़** के निधन के बाद परिषद् और उसके 'विज्ञान' का संचालन-भार **डॉ. गोरखप्रसाद के कंधों पर आ गया था।** १९४२ में प्रयाग में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक थी और मैं भी वहाँ पहुँच गया था। दर्शनार्थ डॉक्टर साहब की सेवा में पहुँचा और परिषद् की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये उपर्युक्त सुझाव मैंने रखा था, जिससे परिषद् आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो और प्रकाशन आदि के अतिरिक्त उसका **अपना भवन भी बन जाए। यह संतोष की बात है कि परिषद् आज भी अपने ध्येय पर चट्टान की तरह अडिग खड़ी है, तिलमात्र नहीं डिगी।**

वास्तव में देखा जाय तो विज्ञान परिषद् के वर्तमान विकसित रूप में डॉ. गोरखप्रसाद जी का बहुत बड़ा योग है। सरल हिन्दी में वैज्ञानिक लेख लिखने में तो गोरखप्रसादजी सिद्धहस्त थे ही, अपने प्रधान संपादन काल में 'विज्ञान' का काया पलट कर दिया। लोकोपयोगी नित्य व्यवहार के विषयों पर विशेषकर घरेलू दस्तकारी, हाथकारीगरी, आदि पर अनेक लेख स्वयं लिखे और अन्य लोगों से भी लिखवाए। उनके प्रधान संपादन काल का 'विज्ञापन' इस प्रकार के सचित्र लेखों से भरा पड़ा है जिसके केवल हिन्दी जानने वाले लोगों में 'विज्ञान' की ग्राहक संख्या बढ़ी। वे बड़े चाव से 'विज्ञान' पढ़ने लगे।। फल संरक्षण व्यंग चित्रण, जिल्दसाजी, आदि का प्रकाशन आपकी सुरुचि का ही प्रमाण है। खेद है कि, घरेलू डॉक्टर, उपयोगी नुस्खे, तरकीबें और हुनर, सरल विज्ञान सागर, जैसी पुस्तकों के, एक-एक भाग ही प्रकाशित हो सके, इनके बाद के भागों का प्रकाशन नहीं हो सका जिसका **डॉ. गोरखप्रसाद जी को सदा खेद बना रहता था। उनकी स्मृति की रक्षा के लिये इससे बढ़ कर और क्या कार्य हो सकता है कि इन अधूरे प्रकाशनों को पूर्ण किया जाए जिससे उनकी आत्मा स्वर्ग से हमें आशीर्वाद दे। उनके अपूर्ण संकल्प को पूर्ण करने का**

दायित्व अब हम सब पर आ गया है। आशा है परिषद् और गोरखप्रसाद जी के सहयोगी अब इस कार्य में अपना पूर्ण योग देंगे।

बी. एस-सी. की परीक्षा में गोरखप्रसाद जी सर्व प्रथम आए थे और एम. एस-सी. की अंतिम परीक्षा मार्च १९१८ में देने वाले थे। इसी बीच हिन्दू विश्वविद्यालय की स्वीकृति सरकार से मिल गई। इसलिए प्रयाग विश्वविद्यालय के बजाय उन्हें हिन्दू विश्वविद्यालय में ही परीक्षा देनी थी, जो मार्च के स्थान पर जुलाई में होने वाली थी। **परीक्षा तिथि से चार दिन पूर्व नैनीताल में डिप्टी कलेक्टरी के लिए उम्मेदवारों को छांटने के लिए बुलाया गया था, जिनमें गोरखप्रसाद भी एक थे। दूसरी ओर अर्थ विभाग की प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने की स्वीकृति भी उन्हें मिल चुकी थी। गणित लेकर बी. एस-सी. में सर्वप्रथम आने से सभी को आशा थी कि अर्थ विभाग में उनका चुना जाना निश्चित है, परन्तु हुआ ठीक आशा के विपरीत। नियति ने तो उनके लिए दूसरा ही कार्य चुना था।**

हिन्दू विश्वविद्यालय के सर्वप्रथम गणिताचार्य डॉ. गणेशप्रसाद नियुक्त हुए, जिनकी गणित के संबंध में गवेषणाएँ विश्व-विख्यात हैं। संसार के गणितज्ञों में उनका सर्वोच्च स्थान है। ऐसे गणितज्ञ ने गोरखप्रसाद जी की जीवन धारा बदल दी। डिप्टी कलेक्टरी के दलदल से बचा कर गणितज्ञ बना दिया। इस संबंध में वे लिखते हैं "डॉक्टर साहब ने मुझे समझाया कि डिप्टी कलेक्टरी में क्या रखा है। रोज कलेक्टर की डांट सुननी पड़ती है। अपने अंत:करण के विरुद्ध अकसर काम करना पड़ता है। फिर, डिप्टी कलेक्टरों के पास कुछ धन नहीं बचता।" यह भी कहा कि "प्रोफेसरी से बढ़ कर कोई उद्यम नहीं। गणित में खोज करने से जो ख्याति मिलेगी वह न तो डिप्टी कलेक्टरी में और न अर्थ विभाग में मिल सकता है।"

"मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। जिस महान् पुरुष के बारे में मैंने इतनी बातें सुनी थी उन्हीं की मातहती में मैं गणित का अध्ययन कर सकूँगा, पीछे गणित का आचार्य बन सकूँगा, इससे बढ़ कर क्या चाहिए मैंने तुरन्त प्रतिज्ञा की। घर वालों को कह दिया, पिताजी मेरी इच्छा देख कर राजी हो गए। फिर क्या बाधा थी, डॉक्टर साहब का शिष्य हो गया और मैं आज निश्चित रूप से यह कह सकता हूँ कि डॉक्टर साहब की बात मानने के कारण कभी मुझे पछताना नहीं पड़ा।"

यह है भावी डिप्टी कलेक्टर या अकाउंटेंट जनरल मिस्टर गोरखप्रसाद के स्थान पर गणितज्ञ डॉ. गोरखप्रसाद बनने का रहस्य, स्वयं उन्हीं की जबानी।

इसी प्रकार गोरखप्रसाद जी को हिन्दी का सिद्धहस्त लेखक बनाने का श्रेय आचार्य रामदासजी गौड़ को है। उन्हीं की प्रेरणा और प्रोत्साहन पाकर गोरखप्रसाद जी ने हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों पर लिखना आरंभ किया। इनका पहला लेख फोटोग्राफी पर 'विज्ञान' में ही छपा। बहुत कम लोगों को पता है कि गोरखप्रसाद जी अपनी प्रारंभिक अवस्था में कविता भी किया करते थे। उनका एक कविता संग्रह हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। डी. एस-सी. करने के लिए उन्हें विलायत जाना था और धन की सख्त जरूरत थी, इसलिए गौड़जी की सिफारिश पर नकद दाम पर कविता संग्रह प्रकाशनार्थ एजेन्सी ने लिया था। बस यही गोरखप्रसाद जी का प्रथम और अंतिम कविता संग्रह था।

फोटोग्राफी के सिद्धान्त और प्रयोग नामक ग्रंथ पर **मंगला प्रसाद पारितोषिक** भी डॉ. गोरखप्रसाद जी को मिला था। यह ग्रंथ आज भी हिन्दी ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं में बेजोड़ है। **सौर परिवार, नीहारिका, आकाश की सैर, चन्द्रसारिणी, भारतीय ज्योतिष का इतिहास** आदि अनेक ग्रंथों के रचयिता के रूप में उनकी बहुत बड़ी देन हिन्दी जगत को है। अंग्रेजी में भी इनकी पुस्तकें हैं, जिनके कारण विदेशों से गणित विज्ञान की पाठ्य-पुस्तकों का विश्वविद्यालयों के लिए आना बन्द हो गया।

श्रद्धेय डॉ. गोरखप्रसाद

डॉ. हरिश्चन्द्र गुप्त

श्रद्धेय डॉ. गोरखप्रसाद बीसवीं शताब्दी के उन विद्याप्रेमियों में थे जिनका अपना विशिष्ट स्थान था। जीवन पर्यन्त जिस लगन और परिश्रम से उन्होंने सरस्वती की सेवा की वैसी विरले ही व्यक्ति कर पाते

हैं। किसे आशंका था कि ज्ञान का यह महारथी अकस्मात् ही हमारे बीच से चला जायगा! पाँच मई १९६१ का सायंकाल निश्चय ही महान दुर्भाग्य का समय था। (इसी तिथि को नेपोलियन बोनापार्ट का भी स्वर्गवास हुआ था।) सदा की भाँति इस दिन भी वे गंगा पर तैरने गये। साथ में उनका सेवक भी था। उसे तैरना सिखा रहे थे। सहसा सेवक ने भयपूर्ण चीत्कार किया और डॉक्टर साहब उसके प्राणों की रक्षा करते-करते स्वयं को ही गँवा बैठे। **यद्यपि गंगा की पावनी तरंगों ने उनके पार्थिव देह को अपने में समा लिया परंतु उनके कर्त्तव्य भावी पीढ़ियों के लिये प्रकाश स्तंभ का कार्य करेंगे।**

डॉक्टर साहब में चतुर्मुखी प्रतिभा का वास था। इसी प्रतिभा के बल पर उन्होंने प्रकांड पांडित्य और अध्यवसाय के साथ विभिन्न विषयों पर अनेकों पुस्तकों को अध्यवसाय द्वारा समझने और समझाने की क्षमता उन जैसी अन्यत्र दुर्लभ प्रतीत होती है। इसी सूझबूझ के कारण, केवल स्वाध्याय के आधार पर, वे अपनी देख-देख में प्रथम वर्ग के मुद्राणालय की स्थापना करने में सफल हुए। घर पर ही फोटोग्राफी का मोटा सामान, मनोरंजन के लिये नाव और खिलौने आदि बना लेना उनके लिए बाएँ हाथ का खेल था। **वे सही अर्थ में उद्योगधंधों के व्यक्ति थे।**

भारतीय छात्रों को सभी विषयों का ज्ञान मातृभाषा हिन्दी से सरलतापूर्वक सुलभ हो– इस विचार के वे प्रबल समर्थक थे। **उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के सर्वाधिक प्रतिष्ठित सदस्य के रूप में उन्होंने इंटरमीडियेट कक्षाओं तक की शिक्षा पद्धति में हिंदी को उच्च स्थान दिलवाया।** हिंदी का यह स्थान अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए उन्होंने हिन्दी में अपने विषय गणित और ज्योतिषशास्त्र ही नहीं किंतु फोटोग्राफी और तैरना, फलसंरक्षण आदि तकनीकी विषयों पर भी अत्यंत सुन्दर और प्रामाणिक पुस्तकों की रचना की। कुछ क्लिष्ट वैज्ञानिक पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद भी किया। फोटोग्राफी की पुस्तक उन्होंने १९३० में बड़े परिश्रम से लिखी जिसमें कितने ही अपने अनुभव से खोज किये हुए मिश्रणों आदि की चर्चा है। कोई आश्चर्य नहीं कि इस पुस्तक पर उन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक के विभूषित किया गया। केवल परिपक्व मस्तिष्क के लिए ही पुस्तकें लिखी हों, सो बात नहीं। सौर-परिवार और सरल विज्ञान सागर की रचना किशोरावस्था के बालकों के हित को दृष्टि में रखते हुए की गयी।

काव्य कौशल भी डॉक्टर साहब में किसी अंश तक था। छात्रावस्था में ही 'Jack and Jill went up a hill to fetch a pail of water शीर्षक की कविता का किया हुआ पद्यानुवाद एक प्रकाशक ने सहर्ष छाप डाला। इस सफलता पर अन्य कोई व्यक्ति कवित्व की लहरों में बह जाता और उससे मुक्ति न पाता; किंतु डॉक्टर साहब मूल में वैज्ञानिक थे इसीलिए उन्होंने कल्पना शक्ति को सूझबूझ में परिणत कर लिया। **उनकी उक्तियाँ अकाट्य होती थीं। आकाशवाणी से प्रसारित उनके भाषण अत्यंत ताथ्यिक, सुस्पष्ट और तर्क पूर्ण होते थे। लिपि सुधार पर 'सरस्वती' पत्रिका में छपे लेख सदा के लिए तर्कपूर्ण विवेचन के प्रमाण रहेंगे। सौर परिवार, नक्षत्र मंडल, आकाश की सैर आदि कितने ही विषयों पर उन्होंने लोकप्रिय सुबोध वार्ताएँ दीं।**

इस प्रकार छोटे-बड़े, विशेषज्ञ, जन साधारण सभी को उनके मस्तिष्क एवं सिद्धहस्त लेखनी से निरंतर कुछ-न-कुछ मिलता ही रहा। प्रयाग विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् आपने नागरी प्रचारिणी सभा को अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। जीवन के अंतिम दिनों में वे इस सभा से प्रकाशित होनेवाले '**हिंदी विश्वकोष**' का संपादन कर रहे थे। इन्हीं के सतत प्रयत्नों के फलस्वरूप **हिंदी विश्वकोष का प्रथमखंड** इतनी तत्परता से जनता के हाथों में आ गया। पुस्तक लेखन से आरंभ कर मुद्रण और प्रकाशन करने के सभी पहलुओं में निपुण होने के कारण और उनके सतत परिश्रमी होने के कारण यह सब संभव हो सका। **अंत्येष्टि के समय विश्वकोष के प्रधान संपादक डॉ. धीरेंद्र वर्मा के ये उद्गार कि 'अब या तो विश्वकोष निकलेगा नहीं और निकलेगा भी तो कूड़ा निकलेगा' डॉक्टर साहब के योगदान की महत्ता के सूचक हैं।**

जैसा डॉक्टर साहब का मस्तिष्क उन्नत था वैसा ही उनका हृदय विशाल था और व्यक्तित्व प्रभावशाली। जिन मानवीय गुणों का समावेश उनमें था वे विरले व्यक्तियों में ही मिलते हैं। सत्यनिष्ठ डॉक्टर साहब जीवनपर्यन्त स्पष्टवादी रहे। गंभीर प्रकृति के होने पर भी वे बालकों के

साथ खेलने में विशेष आनंद का अनुभव करते थे। **नन्हें बालकों के साथ बाल सुलभ वार्ता में तल्लीन हो जाना उनके स्वभाव की विशिष्टता थी।** भाँति-भाँति के खिलौने बनाकर वे बालकों का मन बहलाना जानते थे। प्रथम परिचय में ही प्राय: बच्चे उनसे हिलमिल जाते थे। बच्चों के अनुशासन में भी सत्यता को प्राथमिकता देते थे। बालकों को प्राय: अवज्ञा के लिए कोई दंड-विधान न सुनाते और उसे समझा बुझाकर सही मार्ग पर लाने का प्रयत्न करते। किन्तु यदि कभी चर्पट-दंड की घोषणा करने को बाध्य होना पड़ता तो अवज्ञा पर अवश्य ही चाँटा लगाकर अपने वचन को पूरा करते। **उनका विश्वास था कि मिथ्या धमकी देने से बालक उद्दंड हो जाता है और उसे दंड का भय नहीं रहता।**

संयम और नियमपूर्ण जीवन व्यतीत करना ही उनके जीवन का लक्ष्य था। लगभग १० वर्ष से वे मधुमेह से पीड़ित थे किंतु नपे-तुले भोजन और इंसुलिन के इंजेक्शन द्वारा उन्होंने रोग को नियंत्रित कर रखा था। मिर्च, मसाले, छोंक आदि से रहित सात्विक भोजन ही उन्हें रुचिकर था। सेवा काल में यद्यपि निरंतर सूट ही पहनते रहे किंतु उसमें भी सादगी थी। जाड़ों में सदा नेवीब्लू रंग का सूट और काली टाई, गर्मियों में सफेद-सूट और काली टाई, श्वेत कमीज– यह उनकी अपरिवर्तनीय वेषभूषा थी। उनका कहना था कि वस्त्र की डिजाइन, रंग आदि न बदलने से कपड़े के छांटने का झंझट नहीं रहता और व्यक्ति की पहचान दूर से ही हो जाती है। **नागरी प्रचारिणी सभा में कार्य करते समय श्रद्धेय श्री गोविन्द वल्लभ पंत के सम्पर्क में आने के कारण वे खादी पहनने लगे थे।**

उनके सम्पूर्ण जीवन पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि वे झूठे यश, प्रपंच और लंबी-चौड़ी निरर्थक बातों से सदा दूर रहे। आधुनिक नेताओं की जैसी विज्ञापनबाजी को उनके जीवन में कोई स्थान प्राप्त न था। ऐसा प्रतीत होता है कि अँग्रेजी कहावत 'Charity begins at home' का उनके मन पर विशेष प्रभाव भा। **परिजन हितकारिता में उनका दृढ़ विश्वास था। अनेकों संबंधियों को योग्य बनाया और उनके विवाह आदि संस्कार किये। अपने छात्रों पर उन्हें परम स्नेह था। मैं तो छात्रावस्था से आरंभ कर उनके कुटुम्ब का सदस्य-सम ही बन गया।**

जिन संस्थओं को उनके सहयोग एवं सेवा का सुअवसर अथवा सौभाग्य प्राप्त हुआ उनमें **प्रयाग की विज्ञान परिषद्** का नाम उल्लेखनीय है। सन् १९३५ के लगभग जब परिषद् असह्य उतार-चढ़ाव एवं कठिनाइयों में था तभी डॉक्टर साहब का आर्थिक एवं मानसिक सहयोग उसे प्राप्त हुआ। उनके प्रयत्नों से परिषद को एक नया जीवन प्राप्त हुआ तभी से वह उत्तरोत्तर उन्नति पथ पर अग्रसर है।

उच्च नैतिकता, स्पष्टवादिता, अर्थ लोलुपविहीनता आदि सद्गुणों के कारण आप मित्रों, सहयोगियों, छात्रों एवं परिजनों आदि में सदैव समान स्नेह पाते रहे। झूठे यश अथवा पदोन्नति के लिए आप चाटुकारिता को घृणित एवं जघन्य अपराध मानते थे। आत्मसम्मान को कभी भी उन्होंने ठेस नहीं लगने दी। परोपकार का उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान था। गीता तथा रामचरित मानस उनके श्रद्धास्पद ग्रंथों में से थे। तुलसीदास जी तो सफल कवि होने के नाते भी उनके आदर्श थे। उनकी सफलता की कुंजी को वे अपनी गणित की पुस्तकों में भी प्रयुक्त करते थे। प्रत्येक हिंदू घर में रामचरितमानस की एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए– इस पर वे विशेष बल दिया करते थे। मानस के कितने ही दोहे तथा चौपाइयाँ उन्हें कंठस्थ थीं। गीता के निम्नलिखित श्लोक का अनुकरण करने में उनकी आस्था थी:

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा ये प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।।

दूसरों को भी यही उपदेश देते कि गीता के इस श्लोक का अनुसरण करो तो चित्त को शांति प्राप्ति होगी।

जीवन पर्यन्त महान कार्यों को प्रतिपादित करते हुए इस महान् आत्मा ने इस संसार में परोपकार की उच्च भावना से प्रेरित होकर इस नाशवान् देह को अपने सेवक के प्राण बचाने में त्याग दिया। यद्यपि वे उसे न बचा सके पर उनका यह त्याग न जाने कब तक हम लोगों को इस उच्च आदर्श पर चलने को प्रेरित करता रहेगा। **डॉक्टर साहब आज हमारे मध्य नहीं है परन्तु अपने कार्यों के कारण वे मर कर भी अमर हैं। परोपकार में रत व्यक्ति सदैव ही मर कर भी अमर रहते हैं। हमें उन पर गर्व है।**

"डॉक्टर साहब को जैसा मैंने देखा"

(डॉक्टर गणेश प्रसाद के जीवन संस्मरण से- विज्ञान, सितम्बर १९३५)

विज्ञान-परिषद् से सम्पर्क

– डॉ. गोरख प्रसाद

मैं उन दिनों हिन्दू विश्वविद्यालय में नया-नया असिस्टेंट प्रोफेसर हुआ था। गौड़ जी भी वहीं रसायन के प्रोफेसर थे परन्तु ओरियंटल (प्राच्य) विभाग में मैं डॉक्टर गणेश प्रसाद साहब के निजी कमरे में बैठा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। गौड़ जी भी वहाँ उन्हीं की तलाश में आये। परन्तु डॉक्टर साहब के न मिलने के कारण वे भी वहीं बैठ गये। बातचीत शुरू हुई। उन्होंने मुझसे कहा कि हिन्दी में क्यों नहीं कुछ लिखा करते। मैंने शायद यह कहा कि हिन्दी में लिखने योग्य कोई उपयुक्त विषय मुझे नहीं सूझता और हिन्दी में लिखने की योग्यता मुझमें नहीं है। वहीं "सायंशिया" नामक एक पत्रिका पड़ी थी, जिसमें विज्ञान विषयक कई एक मनोरंजक लेख थे। उनमें से एक लेख चुनकर उन्होंने कहा कि आप इसी का अनुवाद हिन्दी में करने की चेष्टा कीजिए। जो शब्द या वाक्य आप हिन्दी में न कर सकें, उन्हें ज्यों का त्यों रहने दें। मैं हिन्दी कर दूँगा। मुझे स्मरण नहीं है कि मैंने उस लेख का कोई भाग अनुवाद किया या नहीं, परन्तु इतना निश्चय है कि उसके कुछ ही दिनों बाद इलाहाबाद से **श्रीयुत सालिग्राम जी भार्गव** और **गोपाल स्वरूप जी भार्गव** बनारस पहुँचे। उनके जाने का कारण एक विचित्र झगड़ा था। उन दिनों स्वर्गीय पं. सुधाकर द्विवेदी की लिखी पुस्तक **"समकीरण मीमांसा"** विज्ञान-परिषद् की ओर से छप रही थी। इसके छपने के लिये प्रान्तीय सरकार ने १२०० की सहायता दी थी और शायद काशी-गणित-परिषद् (बनारस मैथेमेटिकल सोसायटी) को उक्त पुस्तक का सम्पादन सुपुर्द किया था। **मैथेमेटिकल सोसाइटी ने मुझे और सुधाकर जी के सुपुत्र पं. पद्माकर द्विवेदी** को उक्त पुस्तक का सम्पादक नियुक्त किया। विज्ञान परिषद् ने यह नियम बना रखा था कि विभक्तियाँ शब्दों के साथ ही छपें। शब्दों और विभक्तियों के बीच कोई स्थान न छोड़ा जाय। परन्तु पं. पद्माकर द्विवेदी इसके बहुत विरोधी थे। मैं इस विषय पर उदासीन था। परन्तु पद्माकर जी और परिषद् दोनों अपने-अपने मत पर इस दृढ़ता से डटे थे कि पत्र व्यवहार से इसका तय होना असम्भव था। इसी प्रश्न को हल करने के लिये श्री सालिग्राम जी भार्गव और गोपाल स्वरूप जी भार्गव काशी पहुँचे। अन्त में विभक्तियों को पृथक रखने की बात बहाल रही। परन्तु इस सिलसिले में इस अवसर पर गौड़ जी और दोनों भार्गव महाशयों ने मुझसे हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों पर लेख लिखने का विशेष अनुरोध किया। इन्हें वे "विज्ञान" के लिये चाहते थे। उन दिनों सालिग्राम जी विज्ञान परिषद् के मंत्री और गोपाल स्वरूप जी "विज्ञान" के सम्पादक थे। मैं लेख लिखने में तब ही हिचकिचा रहा था क्योंकि मैं समझता था कि मैं हिन्दी में कुछ लिख न पाऊँगा। परन्तु मुझे गौड़ जी और गोपाल स्वरूप जी दोनों ने आश्वासन दिया कि यदि मुझे कहीं थोड़ी-सी भी कठिनाई पड़े तो मैं उन स्थानों में अंग्रेजी शब्द या वाक्य लिख सकता हूँ, और वे उन्हें ठीक कर लेंगे। इस प्रकार गौड़ जी और सालिग्राम जी के प्रोत्साहन से ही मैं हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों पर लिखने लगा। **मेरा पहला लेख फोटोग्राफी सम्बन्धी था और वह 'विज्ञान' में छपा।**

डॉ. गोरखप्रसाद का अध्यक्षीय कार्यकाल

अखिल भारतवर्षीय हैहय-क्षत्रिय महासभा के, मार्च 1932 में बिहार प्रान्त के **भागलपुर** में सातवें **अधिवेशन** में डॉ. गोरखप्रसाद जायसवाल जी अध्यक्ष चुने गये। इस अवसर पर महासभा ने वर्ग बंधन तोड़ने और दहेज प्रथा रोकने का प्रस्ताव पारित किया।

आपने जायसवाल वर्ग के होते हुये भी अपनी पुत्री का विवाह रायबहादुर डॉ. हीरालाल जी (राय) के भतीजे **डॉ. चन्द्र भानु राय** के साथ किया था जो तत्कालीन रूढ़िवादी समाज में लीक से हटकर असाधारण घटना थी।

आपके कार्यकाल में महासभा की बहुत प्रगति हुई, महासभा का विधान तैयार कराया गया और उसका पंजीयन भी कराया गया।

आपने हैहय क्षत्रिय जनवरी-फरवरी 1936 अंक ''**हीरालाल कुसमाँजली**'' का संपादन किया जिसमें **विश्वविख्यात बहुविद्याविद राय बहादुर डॉ. हीरालाल जी पर महापंडित राहुल सांकृत्यायन, मैथिली शरण गुप्त, डॉ. गंगानाथ झा, डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल, डॉ. हीरानंद शास्त्री, महामहोपाध्याय प्रो. विष्णू वासुदेव मिराशी, रायबहादुर पंडित लज्जाशंकर झा, पंडित कामता प्रसाद गुरू, रायबहादुर जगन्नाथ प्रसाद भानु, सर जार्ज ग्रियर्सन आदि सहित 79 विभूर्तियों के संस्मरण और श्रद्धांजलि को प्रकाशित किया गया है, जिसके पुनर्मुद्रण का प्रकाशन 01 अक्टूबर 2019 को एंव लोकार्पण राजेश बहुगुणा संभागायुक्त जबलपुर संभाग के कर कमलों द्वारा समारोह पूर्वक किया गया।**

ओम मालवीय गोपाल

अतिथि संपादक

कुछ स्मृतियाँ

डॉ. बाबू राम सक्सेना

इलाहाबाद युनिवर्सिटी में डॉ. गोरख प्रसाद मेरे दो एक साल बाद आए। डॉ. गणेश प्रसाद मुझ पर भी कृपा करते थे और यह उनके पट्ट शिष्य थे। इसलिए हम दोनों का सौहार्द हो जाना स्वाभाविक था। कालक्रम से यह सौहार्द बढ़ता ही गया।

गोरख प्रसाद जी स्पष्टवादी, सरल प्रकृति के थे। १९३४ में मैं युनिवर्सिटी की कार्यसमिति की सदस्यता का इच्छुक था, दो चुने जाने थे और चार उम्मीदवार थे। मैं भी लोगों के पास गया, पर जो स्पष्टवादिता मैंने गोरख प्रसाद जी में पाई, वह अन्यत्र दुर्लभ थी। वह बोले "बाबूराम जी! आपका नम्बर तीसरा आता है"। यह स्पष्ट नकारात्मक उत्तर था। बहुत लोगों ने इंगित और आकार से ऐसा दिखाया कि वोट देंगे पर दिया नहीं। मैंने गोरख प्रसाद जी स्पष्ट बात को अत्युत्तम समझा।

गोरख प्रसाद जी को लोग बहुत गंभीर समझते थे, पर थे वह बहुत विनोदप्रिय। हमें याद है कि जब हमारे एक मित्र विलायत से लौटने वाले थे और विलायती सज-धज से, जब मित्रों को यह सूझी कि उनका स्वागत करते समय स्टेशन पर कुछ मजाक भी बनाया जाय। सोचा गया कि थोड़ा सा 'लाइसोल' उनके आने के पहले स्टेशन पर छिड़क दिया जाय। योजना गोरख प्रसाद के साथ बनी और यह लाइसोल गोरख प्रसाद जी ने दिया था और वह बाकायदा छिड़क दिया गया। ट्रेन से हमारे मित्र गर्मी के दिनों में विलायती ऊनी सूट पहने उतरे। पर उनके चारों ओर उतरते हुए हर एक यात्री के नाक पर रूमाल था और सब कह रहे थे कि बड़ी बदबू है।

लोगों को आशा थी कि ५५ वर्ष पूरे होने पर प्रो. अमिया चरण बनर्जी रिटायर हो जायेंगे और सीनियर होने के नाते गोरख प्रसाद जी गणित विभाग के अध्यक्ष बनेंगे। पर बनर्जी साहब को पाँच साल का कार्यकाल और मिल गया। परिणामस्वरूप हताश होकर गोरख प्रसाद जी ने प्रेस खोल लिया और अधिकांश ध्यान उस पर लगा दिया। उनकी व्यवहारिक कार्यपटुता से इनका यह काम चमक उठा और युनिवर्सिटी का काम गौण हो गया।

प्रो. बनर्जी वर्ष पूर्व जब गोरख प्रसाद जी रिटायर होने वाले थे, तब हिन्दी विश्वकोश के विज्ञान भाग के सम्पादक पद के लिए नाम परामर्श मंडल के सामने रखा गया। पाँच वर्ष का कार्यकाल था, किसी ने कहा कि ६२ के हो गए हैं, दो या तीन साल के ही नियुक्ति करिए। मैंने कहा कि उनका स्वास्थ्य ऐसा अच्छा है कि अभी कम से कम दस साल और काम कर सकते हैं। **मंडल के सभापति पं. गोविन्दवल्लभ पन्त के निवास स्थान पर ही बैठक हो रही थी। पन्त जी को मेरी बात जँची ओर गोरख प्रसाद जी की नियुक्ति ५ साल की हो गई। कौन जान सकता था कि जिस शरीर को मृत्यु अन्यथा न ले जा सकती थी उसे डुबा कर ले जाएगी। पं. देवी प्रसाद शुक्ल कहा करते थे:**

क्षणादूर्ध्वं न जानामि विधाता किं करिष्यति।

मैंने गोरख प्रसाद जी के साथ जगह-जगह काम किया था। वह व्यवहार पटु थे। कठिन समस्या उपस्थित होने पर वह कोई न कोई समाधान खोज लाते थे। आज उनके निधन पर ऐसा लगता है कि जैसे कोई बहुत स्नेही, कर्मठ सहयोगी बहुत जल्दी चला गया।

ईश्वर उनको सद्गति दें।

अध्यक्ष
भाषा विज्ञान विभाग,
सागर विश्वविद्यालय

कुछ संस्मरण

डॉ. रामदास तिवारी

सन् १९६४ की बात है, मैं कानपूर में इन्टरमीडियेट में पढ़ता था। एक दिन यह पता चला कि प्रयाग विश्वविद्यालय के डॉक्टर गोरख प्रसाद जी आए हैं उनका ज्योतिष विज्ञान के विषय में एक भाषण होगा। मैंने उस भाषण को सुना और उसे सुनकर उसी दिन से डॉक्टर साहब की विद्वता तथा महानता का भक्त बन गया।

उसके बाद जुलाई १९६५ में विश्वविद्यालय में बी. एस. -सी. में प्रवेश लिया और फिर उनके कई भाषण गणित, ज्योतिष, फोटोग्राफी आदि अनेक विषयों पर सुने और तबसे उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप मेरे ऊपर पड़ गयी। जब यहाँ अध्यापक हुआ तो उनके और निकट आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और फिर विज्ञान परिषद् से सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर तो उनके बिल्कुल निकट संपर्क में आ गया।

डॉक्टर साहब गणित के उच्चकोटि के विद्वान तथा अध्यापक थे। आपके अनेक शिष्य उत्तर प्रदेश के कोने-कोने में तथा भारतवर्ष के अन्य राज्यों की शिक्षा संस्थाओं में कार्य कर रहे हैं। डॉक्टर साहब का स्थान उन उच्चकोटि के गुरुओं में है जो अपने शिष्यों की उन्नति पर गर्व करते हैं और प्रसन्न होते हैं। सब से आदर्श प्रसन्नता को प्राप्त होता है। डॉक्टर साहब इसी प्रकार के अध्यापक थे। उनके शिष्य उनका सम्मान करते थे।

गणित के कुशल अध्यापक होने के अलावा डॉक्टर साहब अन्य विषयों में भी बड़ी जानकारी रखते थे। फोटोग्राफ उनका सबसे प्रिय विषय था। विश्वविद्यालय के **फोटोग्राफी एसोसिऐसन** को उन्होंने जन्म दिया और आरंभ से अवकाश ग्रहण करने तक डिप्लोमा कोर्स के विद्यार्थियों को प्रति सप्ताह लगभग दो लेक्चर पढ़ाते रहे। फोटोग्राफी पर अपने एक सामान्य तथा जनोपयोगी पुस्तक भी लिखी जो इतनी लोकप्रिय हो गयी कि समय-समय पर इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए उनके पास अनेक पत्र आया करते थे। अनेक आद्यौगिक विषयों पर भी डॉक्टर साहब ने हिन्दी में कई पुस्तकें लिखीं- लकड़ी पर पालिश, उपयोगी नुसखे, घरेलू डॉक्टर, सरल विज्ञान सागर। ये पुस्तकें ऐसी हैं कि किसी साधारण व्यक्ति के लिए उनका लिखना असंभव है। 'उपयोगी नुसखे' तो इतनी लोकप्रिय हो गई हैं कि अनेक व्यवसायी तथा अन्य लोग डॉक्टर साहब को पत्र लिखकर यह पूछा करते थे कि अमुक नुस्खे से बनाने पर उनको ठीक चीज मिली या न मिली और आगे उनको क्या करना चाहिए।

हिन्दी के कुशल लेखक होने के साथ ही डॉक्टर साहब की सबसे बड़ी देन **लेखकों को हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य लिखने के लिए प्रोत्साहित करना था।** इसके फलस्वरूप प्रयाग में ही नहीं अन्य स्थानों के लेखकों को इस कार्य में बड़ी सहायता मिली।

डॉक्टर साहब की सज्जनता, उदारता, स्पष्टवादिता, सच्चाई, मिलनशीलता, चरित्र की महानता, दूसरों के प्रति सहानुभूति आदि चिरस्मरणीय रहेंगे। डॉक्टर साहब में एक विशेष गुण था अपने उत्तरदायित्व को निभाने की क्षमता।

विश्वविद्यालय में इतने वर्ष रहने पर भी वह यहाँ की राजनीति से बिल्कुल अलग रहे। अवकाश ग्रहण करने के बाद हम लोगों के बड़े प्रयत्न करने पर डॉक्टर साहब रजिस्टर्ड ग्रेजुएट से कोर्ट की सदस्यता का चुनाव लड़ने को तैयार हुए। यह चुनाव (Single transsferable vote) की प्रणाली से होता है और प्रत्येक उम्मीदवार अधिक से अधिक प्रथम (first preference) वोट पाने का प्रयत्न करता है और इसके लिए मतदाताओं को लिखता है। डॉक्टर साहब ने जो पत्र अपने मित्रों को लिखे, उनमें यह लिखा कि वे उनको जो ऊँची से ऊँची मान्यता सरलता से दे सकें दें। किसी को प्रथम के लिए नहीं लिखा। यह था डॉक्टर साहब का व्यक्तित्व। वह किसी को वाध्य नहीं करना चाहते थे। डॉक्टर साहब कोर्ट में काफी मतों से निर्वाचित हुए और फिर कोर्ट से कार्य-समिति (executive council) में भी चुने गये। वह कार्य-समिति के एक बड़े प्रभावशाली सदस्य थे तथा उनकी उपस्थिति से विश्वविद्यालय का बड़ा लाभ हुआ। डॉक्टर साहब कार्य-समिति के कुछ उन गिने-चुने सदस्यों में से थे जिन्होंने सन् १९५९ में प्रयाग विश्वविद्यालय के अन्दर पी.ए.सी. के बुलाए जाने का घोर विरोध किया था। कारण कि इस घटना ने विश्वविद्यालय के नाम को जितना कलंकित किया है अन्य किसी घटना ने नहीं।

डॉक्टर साहब की असायमिक मृत्यु से एक महान क्षति हुई है जिसका पूरा होना असंभव है। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा अन्य व्यक्तियों में वह क्षमता प्रदान करे कि वे उनके प्रारंभ किए हुए कार्य को आगे बढ़ा सकें।

प्राध्यापक
रसायन विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

पूज्य बाबू जी की याद में

श्रीमती माधुरी जायसवाल

ता: ६ मई की शाम को जिस समय तार द्वारा यह हृदय विदारक समाचार मिला Dr. Gorakh Prasad drowned in Ganges. कुछ क्षणों के लिये जैसे बेहोशी सी छा गई। मेरा मन बार-बार यही कहता था, मेरे बाबू जी इतना अच्छा तैरना जानते थे वह कभी डूब नहीं सकते। जरूर किसी हतभाग्य की प्राणरक्षा के लिये, किसी को डूबने से बचाने के लिए ही उन्होंने अपने प्राणों का बलिदान किया होगा और दूसरे दिन अखबार द्वारा पूरी घटना का विवरण ज्ञात हो गया।

हम सब भाई बहनों के लिए वे कितने स्नेहमय पिता थे! उनकी स्नेहमयी छत्रछाया में हम लोग पढ़े लिखे, बड़े हुए और क्या नहीं सीखा! हम लोगों ने उनसे तैरना सीखा। मैं सब भाई-बहनों में छोटी होने के कारण माता-पिता की अत्यन्त लाड़ली रही। पर यह लाड़ ऐसा न था कि मुझे गलत रास्ते पर ले जाता। मुझे अभी भी याद है, मैं तैरना सीख जाने पर भी पानी से बहुत डरती थी। उस समय मेरी उम्र ९-१० साल की रही होगी। बाबूजी का सदा का नियम था कि **गर्मियों** में जब तक इलाहाबाद रहते थे नित्य नियम से गंगा जी स्नान के लिये जाते थे। हम सब भाई बहन भी व माँ भी उनके साथ ही जाते थे। बाबूजी ने पानी से मेरा डर छुड़ाने के लिए अपनी कमर तक पानी में खड़े होकर मुझे गोद में उठा लिया और अपने शरीर का सारा जोर लगा कर मुझे गंगा की बीच धाराओं में उछाल दिया। माँ एक दम चीख पड़ी– 'अरे लड़की डूबी'! बाबू जी बोले– "डूबेगी कैसे"? और क्षण भर में ही वह मेरे पास पहुँच गये। मैं किनारे पर आने के लिए प्राणपण से तैरने लगी। बाबूजी चुपचाप मेरे साथ-साथ तैरते हुए आ रहे थे कि अगर यह थक जाय तो सहारा दूँ। पाँच मिनट में ही मैं माँ के पास से तैरती हुई आकर अपनी कमर तक के पानी में खड़ी हो गई। बाबूजी ने स्नेहपूर्वक कहा "डूबी तो नहीं न? देखो तैरना आ जाने पर कोई भी व्यक्ति डूब नहीं सकता। चाहे वह कितने ही गहरे पानी में क्यों न तैरे।"

इसी तरह मेरी शादी के समय मेरे ससुराल पक्ष वालों को बाबूजी अपनी मोटर में बिठाकर त्रिवेणी स्नान के लिये गये। वहाँ मेरे पति के एक मित्र जिन्हें हम लोग रज्जा भइया कहते हैं जब यमुना की धाराओं में पड़ कर डूबने लगे तो देखते ही देखते बाबूजी उन्हें बचा लाये। आज कल वे नागपुर में डॉक्टर हैं। पर कौन जानता था कि इतना सब कुछ होते हुए भी नियति उनके साथ इतना क्रूर खेल खेलेगी, बाबूजी अपने नौकर की प्राण रक्षा करने के प्रयास में स्वयं ही अपने प्राणों का बलिदान कर देंगे।

बाबूजी की गणित, विज्ञान, ज्योतिष सम्बन्धी सेवायें साहित्यिक जगत के लिये सेवाएँ थी। इन सब के बीच भी वे हम सब भाई बहनों से खेलने के लिये थोड़ा समय निकाल ही लेते थे। छुट्टियों में मेरी बुआएँ आतीं तो वे सब बच्चों के लिये अपने हाथों से लकड़ी के खिलौने बनाते। उन्हें रंगते और हर खिलौने पर अलग-अलग हर बच्चे का नाम लिखते। जिस कमरे में वह यह सब काम करते उस कमरे का नाम हम लोगों ने "बढ़ई घर" रख दिया था। उस कमरे में बाबूजी के बढ़ईगीरी में काम आने वाले तरह-तरह के औजार संगृहीत थे।

यही नहीं, बाबूजी ने फल-संरक्षण पर भी पुस्तक लिखी। किस प्रकार जैम, जेली बन सकती है इसका उन्होंने लिखित विश्वास नहीं किया वरन् अमरूद, करौंदे आदि की जेली मुझसे घर में बनवा कर उसका परीक्षण भी किया। इस सब परीक्षणों में वे स्वयं सामने खड़े होंकर मेरी मदद करते और यदि कभी माँ विरोध भी करतीं तो मुस्करा कर टाल देते।

हाय! स्वप्न में भी न सोचा था हम लोग असमय में ही बाबूजी को खो बैठेंगे वह हम लोगों से इतने जल्दी बिछुड़ जायेंगे।

पूज्य नाना जी की दु:खद जल समाधि

अशोक कुमार जायसवाल

५ मई सन् १९६१ की उस कालरात्रि को मैं कभी न भूलूँगा जिसने मेरे पूज्य नानाजी को हम सबसे छीन लिया। नाना जी नित्य नियम के अनुसार मेरे व नौकर रामनिहोर के साथ उस दिन भी शाम के ६।। बजे के करीब गंगा स्नान के लिये गये। ४ ता. की शाम को नानी जी के घुटने में चोट आ गई थी जिससे वे हम लोगों के साथ उस दिन नहीं गई। दुर्भाग्यवश उस दिन लोग लंगर ले जाना भी भूल गये थे।

नाना जी बोले– "अब तो निहोर काफी तैरना सीख गया है अत: रस्सी नहीं ले चलेंगे।" करीब १५ दिन से नाना जी उसे तैरना सिखा रहे थे। ५ मई को भी मैं व नाना जी उसके साथ काफी तैरे। उसे काफी देर तक तैरना सिखलाया और फिर कहा 'अब तुम यहीं ठहरो, हम लोग कुछ दूर और तैर आयें। फिर घर चलें।'

हम लोगों के १०-१५ गज दूर चले जाने के बाद पता नहीं निहोर को अकेले में तैरने का शौक हुआ या उसके नीचे से बालू खिसक पड़ी, वह गहरे पानी में डुबकियाँ खाते हुए हताश स्वर में चिल्लाया– "बाबू जी बचाओ, मैं डूबा।" उसकी पुकार सुन कर नाना जी बेतहाशा तेजी से तैरते हुए उसकी ओर आये। मैं भी साथ ही साथ था। हम दोनों ने मिलकर निहोर को छिछले पानी में ठेलने का प्रयत्न किया। नाना जी ने निहोर को समझाया कि वह उनकी कमर पकड़ ले। पर होनी को कौन रोक सकता है। निहोर घबराहट में नाना जी का गला पकड़ कर झूल गया। इतने पर भी नाना जी उसे साथ लिये-लिये काफी दूर तक तैरे। मैंने जल्दी से थाह पाने की कोशिश की और अपनी छाती तक पानी में खड़े होकर चाहा कि नाना जी का कंधा पकड़कर उन्हें भी छिछले पानी में घसीटने की कोशिश करूँ। बहाव ज्यादा था। नाना जी शायद मेरी मजबूरी समझ गये थे। अंत समय नजदीक होते हुए भी उन्होंने अपना धीरज और आत्मविश्वास नहीं खोया। उन्हें पूरा भरोसा था कि मैं निहोर को बचा लूँगा। पर शक्ति जवाब दे चुकी थी। वह मुझसे केवल इतना ही बोले– "अशोक क्या नाव ला सकोगे? मैं बहुत थक गया हूँ।"

मैं जल्दी-जल्दी नाव के पास पहुँचा जो १५-२० गज दूर थी। मुझमें न जाने कहाँ से बल आ गया कि जिस नाव को हम तीनों ने मिल कर रेती में घसीटा था उसे गहरे पानी में ठेल कर भरसक तेजी से खेता हुआ उस स्थान पर पहुँचा जहाँ मेरे पूज्य नाना जी मृत्यु और माँ गंगा की वेगवती लहरों से अपने नौकर को गोद में सँभाले संघर्ष कर रहे थे।

वहाँ पहुँच कर देखा नानाजी नहीं हैं। मेरे वहाँ से जाने के कुछ क्षणों बाद ही माँ गंगा ने सदा के लिये उन्हें अपनी गोद में सुला लिया था।

अनमोल स्मृतियाँ

कृपा शंकर जायसवाल

श्रद्धेय बाबूजी, डॉक्टर गोरख प्रसाद जी, से मेरा प्रथम साक्षात्कार जनवरी सन् १९४६ में हुआ था। उस समय आप नागपुर यूनिवर्सिटी की सिनेट बैठक के सिलसिले में पधारे थे। वे हमारे पड़ोसी डॉक्टर शब्दे के यहाँ ठहरे थे। जिस समय आप हमारे घर मिलने आये नेवी ब्लू कोट, पतलून पहने और काली टाई बाँधे थे। देख कर ही मन में श्रद्धा होती थी। गरमी में सफेद कोट पतलून और काली टाई, ठण्ड में नेवी ब्लू कोट, पतलून और काली टाई– उनका सदा पहनने और बाँधने का नियम था जिसका कभी व्यतिक्रम न हुआ।

जिस समय आप मिलने के लिये घर पर पधारे थे मुझे यह न मालूम था कि **यही मेरे भावी ससुर हैं और आगे चल कर आपके द्वारा मुझे पिता से बढ़ कर स्नेह और आदर मिलेगा।** आप सीधे बहुत थे व सदा अपने पठन-पाठन में लीन रहते थे जिसका एक उदाहरण यह भी है कि जब वे अन्य बारातियों को दहेज का सामान दिखला रहे थे तब स्वयं भी आश्चर्य चकित से एक-एक सामान देख कर कहने लगे, "यह सब सामान तो मैंने कभी ध्यान से देखा भी न था।" और **सचमुच यदि वह इतने ध्यान से दूसरी चीजों की चिन्ता करते तो साहित्य को, जो आप के द्वारा अमर देन प्राप्त हुई है, कभी न प्राप्त होती।**

पूज्य बाबू जी वचन के कितने पक्के थे यह इस प्रकार जाहिर है कि विवाह के अवसर पर आपने मुझसे कहा "बाबू कृपा शंकर जी, आपका कैमरा मेरे ऊपर उधार है। यह उधारी शीघ्र पटाने की कोशिश करूँगा।"

हम लोग तो इस बात को भूल गये पर बाबूजी नहीं भूले थे और विवाह के करीब ६-७ वर्ष बाद जब मुझे ४५० का इंश्योर्ड पार्सल मिला तब मुझे एकाएक स्मरण हुआ कि बाबू जी ने कैमरा देने को कहा था व इतने दिन बीत जाने पर भी वे अपना वायदा नहीं भूले हैं और कैमरा पार्सल द्वारा भेजा है।

वे विनोदप्रिय भी थे। पत्नी को लेने जब मैं इलाहाबाद

गया तो ८ बजे के करीब भोजन कर चुका था। उस दिन कार्तिक पूर्णिमा थी। अभ्यास के अनुसार आप (9:30 PM) ९ १/२ बजे खाने आये, मुझसे भी कहने लगे, "आइये हमारा साथ दीजिए।"

"आज कार्तिक पूर्णिमा होने के वजह से मैं बार-बार न खाऊँगा, ८ बजे के करीब मैं तो खा चुका हूँ" मैंने कह दिया। मुँह पर तो हँसी थी पर आँखों से गुस्सा दिखलाने का प्रयत्न करते हुए आप कहने लगे– "हैं? आप क्या कहते हैं? आप पर मानहानि का दावा किया जायगा।"

मैं पेशोपश में पड़ गया पर फिर भी अपनी बात पर जोर देते हुए बोला– "मैं सच कह रहा हूँ। आज कार्तिक की पूर्णिमा है। दिन भर के व्रत के बाद ८ बजे के करीब भोजन कर लिया है। इस वजह से बार-बार नहीं खाऊँगा।" मन ही मन मुझे आश्चर्य भी था कि इतनी सीधी सी बात इनकी समझ में क्यों नहीं आती है।

आप फिर बोले– "देखिये मास्टर! आप मानते नहीं हैं। बार-बार वही बात दुहराते जाते हैं। कार्तिक तो मेरे छोटे भाई का नाम है। आप ने तो मेरी पत्नी को उनकी बना दिया। जनाब आपकी सास कार्तिक की पूर्णिमा नहीं है, गोरख प्रसाद की पूर्णिमा हैं। इसी से मैं कह रहा था कि आप पर मानहानि का दाबा किया जायगा।" और ठहाका मार कर हँसने लगे।

मैं आपकी विनोदशीलता पर दंग रह गया, जरा-सी बात पर कितना गहरा मजाक था। और तभी मुझे पहली बार पता चला कि माँ जी का नाम पूर्णिमा देवी है।

यही नहीं, सम्बल और धीरज देना भी खुब जानते थे। भूपाल स्टेट में जब सन १९५४ में मैं सहायक शाला निरीक्षक के पद पर नियुक्त होकर आया तो मेरी पोस्टिंग बेरसिया में हुई। उस समय वहाँ पर बिजली भी नहीं थी। (द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत अभी बाद में लगी है)। कच्चा मकान था। पत्र जो मैंने आप के पास भेजा था उसमें शायद नया काम संभालने की घबराहट का भी आभास था। उस समय आपने सांत्वना भरा पत्र जो भेजा था उसके एक-एक शब्द आज भी जैसे हृदय में गड़े हुए हैं, मुझे धीरज और सम्बल देते रहते हैं।

आपने लिखा था–

"नई नौकरी से घबराइये नहीं। रायबहादुर डॉक्टर हीरालाल जी भी एक समय इसी पद पर नियुक्त हुए थे व लगन और मेहनत से उन्नति करते गये। उनका ज्वलन्त उदाहरण आपके सामने है। परेशानियों का हिम्मत से सामना कीजिए व फुरसत के समय गीता पढ़ा कीजिए, आपको हिम्मत रहेगी।"

रायबहादुर डॉक्टर हीरालाल जी भी आपके निकट सम्बन्धी थे। आपकी बड़ी लड़की गिरजा देवी का विवाह रायबहादुर साहब के तीसरे भतीजे श्री वीरभानु राय से हुआ।

कौन जानता था कि वे इतने जल्दी हम लोगों से विदा ले लेंगे। सन् '६० की २७ मई को जब मैंने अपने पूज्य पिता को खोया था, मन में आशा थी कि अभी एक पिता का सहारा है। पर क्या पता था कि १९६१ की ५ मई मेरा यह सहारा भी छिन जायगा।'

मेरे विवाह के अवसर पर जब आप पिता जी व उनके साथ अन्य बारातियों को त्रिवेणी स्नान कराने ले गये, मेरे एक मित्र यमुना की धारा में डूबने लगे। उसी समय आपने उसे बचाया और मुझसे पूछा– "आप तैरना जानते है?" मेरे नहीं कहने पर बोले "बहुत आसान है। मैं आपको ५-६ दिन में ही सिखला दूँगा। किसी भी साल की गरमी की छुट्टियाँ आप यहीं पर बिताइयेगा।"

उसके बाद उनका स्नेह भरा निमंत्रण मुझे सदा प्राप्त होता रहा पर मैं उनके अनुरोध की रक्षा करने कभी भी गरमी की छुट्टियों में न जा पाया। इसका मुझे सदा दुख रहेगा। कभी विश्वास न था कि वे इतने अचानक बिछुड़ जाएंगे। तैरना वह कितना अच्छा जानते थे! तैरने पर एक पुस्तक भी लिखी थी, हर साल न जाने कितने लोग उनसे तैरना सीखते थे। न जाने कितने डूबते हुए लोगों की वह प्राण रक्षा करते थे पर कौन जानता था कि एक दिन उनकी यही कला उनके प्राणों की ग्राहक बन जायगी। अपने नौकर की प्राण रक्षा के प्रयत्न में उसे डूबने से बचा लेने के प्रयास में उनके प्राणों का बलिदान हो जायगा।

डॉ. गोरख प्रसाद के अनुसंधान लेखों की सूची

संकलकर्त्ता– डॉ. चन्द्रिका प्रसाद

1. "The effect of the Double Suspension Mirror on the Sensitiveness of the Balance"
   प्रोसीडिंग्स ऑफ बनारस मैथमेटिकल सोसायटी, १९१९, १, ९।
2. "On the expansion of the product of two parabolic cylinder functions in a series of parabolic cylinder functions"
   वही, १९२०, २, १।
3. "Parametric Equations of the Path of a Projectile in a resisting Medium"
   वही, १९२१, ३, १।
4. "Some New Properties of the Parabolic Cylinder Functions"
   वही, १९२२, ४, २१।
5. "On the Numerical Solution of Integral Equations"
   प्रोसीडिंग्स ऑफ एडिनबरा मैथमेटिकल सोसायटी, १९२४, ४२, ४६।
6. "Mean Absolute Magnitude of a Group of Stars. Note on a paper by Messers Young and Harper".
   मन्थली नोटिसेज ऑफ रायल एस्ट्रानामिकल सोसायटी, १९२४, ८४, ४९३।
7. "The Relation of Mean Parallax to Proper Motion and Apparent Magnitude "
   वही, १९२४, ८५, १५७।
8. "The Progression of Steller Velocity with Absolute Magnitude"
   वही, १९२५, २५, ४१७।
9. "On the Parabolic Cylinder Functions"
   प्रोसी. बनारस मैथ. सोसा. १९२५-२६, ७-८, १।
10. "The Numerical Solution of Partial Differential Equations"
    फिलासोफिकल मैगजीन, १९३०, ९ १०७४।
11. "Astronomical Evidence on the Age of the Vedas"
    जर्नल ऑफ बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी, १९३५, २१, १।
12. "On the Age of the Baudhayana Srauta Sutra"
    जर्नल ऑफ रायल एशियाटिक सोसायटी, १९३६, पृ. ४१७।
13. "The Astronomy of the Vedanga Jyautisa"
    गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टीच्यूट जर्नल, १९४७, ४, २३९।

छपते-छपते

समाज के समक्ष ज्वलंत प्रश्न

सम्प्रति हमारे समक्ष कुछ अनुत्तरीत प्रश्न मुँह बाये खड़े हैं: (1) डॉ काशी प्रसाद जायसवाल जैसी महान विभूति को भारत-रत्न प्रदान करवाने का संकल्प (2) डा. गोरख प्रसाद जैसी अभूतपूर्व प्रतिमा के नाम उनकी 125 वीं जन्म जयन्ती पर डाक-टिकट जारी करवाने का संकल्प तथा (3) विष्णु-पुराण के 42 से 63 एपीसोडों को दूदर्शन एवं यू-ट्यूब से हटवाने के लिए योजनाबद्ध अभियान, क्योंकि इनमें उनका मिथ्या व असम्मान जनक चरित्र-चित्रण किया गया है। शेष फिर कभी जय सहस्रार्जुन।

राजाराम जायसवाल
प्रधान-संपादक

आकाशवाणी, इलाहाबाद से प्रसारित डा. गोरखप्रसाद की उपलब्ध वार्ताओं की सूची

आकाशवाणी इलाहाबाद के सौजन्य से

	विषय	प्रसारण तिथि
1.	Barah Mihir	28. 11. 53
2.	तुम्हारे आस पास	2. 1. 57
3.	तुम्हारे आस पास	7. 4. 57
4.	तुम्हारे आस पास	5. 5. 57
5.	Why a new Calendar	11. 5. 57
6.	Background of Science: the Postulates of Science	9. 7. 57
7.	स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी वैज्ञानिक साहित्य	16. 8. 57
8.	एटम बम	13. 10. 57
9.	नकली चाँद	10. 11. 57
10.	परमाणु भट्टियों का उपयोग एवं भविष्य	22. 11. 57
11.	विज्ञान के चमत्कार: दो सौ इंच की दूरबीन	7. 12. 57
12.	भारतीय पंचांगों की परम्परा 1. सौर पंचांग	10. 2. 58
13.	भारतीय पंचांगों की परम्परा 2. चंद्र पंचांग	24. 2. 58
14.	भारतीय पंचांगों की परम्परा 3. पंचांग शोधन	10. 3. 58
15.	भारतीय पंचांगों की परम्परा 4. भारत का राष्ट्रीय पंचांग	24. 3. 58
16.	झूठ सच परखने की मशीन	12. 10. 58
17.	रडार	9. 11. 58
18.	हमारे सूर्य के ग्रह और उपग्रह	2. 1. 59
19.	वैज्ञानिक क्रान्तियाँ: आकर्षण का सिद्धांत	5. 2. 59
20.	राष्ट्रीय पंचांग की विशेषताएँ	22. 3. 59
21.	ये नवीनतम आविष्कार	19. 4. 59
22.	ये नवीनतम आविष्कार	17. 5. 59
23.	ये नवीनतम आविष्कार	21. 6. 59
24.	अणु विज्ञान की प्रगति	25. 9. 59
25.	Unravelling the mystery of Life in the Cosmological Principle	22. 3. 60
26.	विज्ञान की दुनिया	24. 4. 60
27.	विज्ञान की दुनिया	15. 5. 60
28.	विज्ञान की दुनिया	26. 6. 60
29.	सुधाकर द्विवेदी	28. 11. 60
30.	अंतरिक्ष के अद्भुत दृश्य	15. 3. 61

नोट:- उपरोक्त वार्त्ता केवल आकाशवाणी इलाहाबाद आकाशवाणी से प्रसारित है। गोरख प्रसाद जी की अन्य आकाशवाणी वार्त्ताओं का पूर्ण विपणन उपलब्ध नहीं हो सका है।

कर्मवीर डा. गोरख प्रसाद जायसवाल (डी.एस.सी.)

–राजकुमार गुप्त

डा. गोरख प्रसाद का जन्म **28 मार्च 1896** ई. को गोरखपुर में हुआ। आपके पिता बाबू **काशीनाथ** गवर्नमेंट जुबली हाई स्कूल में द्वितीय अध्यापक तथा छात्रावास के अधीक्षक थे। चार वर्ष की आयु में माता का निधन होने से पिता के संरक्षण में आपका लालन पालन एवं शिक्षा दीक्षा हुई। आपकी शिक्षा जुबली हाई स्कूल में हुई। 1910 की हाईस्कूल छात्रवृत्ति परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए तथा वाराणसी से इन्टरमीडिएट परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। 1916 में बी.एस.सी. पास किया और प्रदेश में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। इस उपलक्ष्य में आपको स्वर्णपदक, पुस्तक तथा नकद पारितोषिक प्राप्त हुए। तत्पश्चात् सेंन्ट्रल हिन्दू कालेज से गणित के साथ एम.एस.सी. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया।

डॉक्टर साहब ने कुछ समय तक अध्यापन कार्य करने के बाद शोध कार्य प्रारम्भ किया। इस बीच काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आप गणित के प्रोफेसर रहे। तीन वर्ष तक शोध कार्य करके 12 सितम्बर 1923 को **गणित एवं ज्योतिष** में डाक्टरेट प्राप्त करने के लिए आप **एडिनबरा** (इंग्लैण्ड) गये तथा 1925 में आपने वहा से **डी.एस.सी.** की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् समस्त यूरोप का भ्रमण करके आप भारत वापस आये और प्रयाग विश्वविद्यालय में **गणित के रीडर पद पर नियुक्त हुए।** आप का कार्यक्षेत्र इलाहाबाद ही रहा। अन्तिम पाँच वर्षों तक आप वाराणसी में हिन्दू विश्व कोष के विज्ञान का संपादन करते रहे।

प्रयाग विश्वविद्यालय में कार्यरत रहकर आपने धन व यश अर्जित किया। छात्र आपके प्रति अत्यंत श्रद्धा व भक्ति रखते थे। प्रयाग में आपका भव्य भवन, टेक्निकल मुद्रणालय एवं पोथीशाला आपकी कीर्ति के स्तम्भ है।

आपकी प्रतिभा व ज्ञान का भण्डार असीमित था। आपने अपने जीवनवाल में शिक्षण कार्य के अतिरिक्त बुद्धि व ज्ञान सम्बन्धी अनेक कार्य सफलतापूर्वक किए। आप कुशल शिल्पी तथा साहित्य रचना के मर्मज्ञ थे तथा आपने विविध विषयों में बहुत कुछ लिखा। आपकी पुरस्कृत पुस्तकों में **फोटोग्राफी, सौर परिवार नीहारिकाएं, सरल गणित, हिस्ट्री आफ इण्डियन एस्ट्रोनामी (सरल ज्योतिष गणित) उल्लेखनीय** है। इनके अतिरिक्त फल संरक्षण, लकड़ी पर पॉलिश, जिल्दसाजी, कलम पेबंद, उपयोगी नुस्खे, घरेलू डॉक्टर, सरल विज्ञान सागर, चन्द्र सारणी, तैरना, व्यग्य चित्रण आदि अनेक पुस्तकें सरल हिन्दी में लिखकर आपने जन साधारण की बड़ी सेवाएं की। बचपन से ही आपको चित्रकला का शौक था तथा फोटोग्राफी में आप सिद्धहस्त थे।

आपने कई वर्षों तक **विज्ञान पत्रिका** का संपादन किया तथा आपके विज्ञान सम्बन्धी बालोंपयोगी लेख **"बाल सखा"** में प्रकाशित होते रहे। विज्ञान सम्बन्धी आपकी वार्ताएं भी समय-समय पर आकाशवाणी से प्रकाशित होती रहीं। आप हस्त कला में भी काफी रूचि रखते थे। भवन निर्माण में आपकी विशेष रूचि थी। आप विभिन्न विश्वविद्यालयों के सदस्य, विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि, वाराणसेय गणित परिषद के अनेक वर्षो तक सदस्य रहकर शिक्षा के क्षेत्र में सेवा कार्य करते रहे। **केन्द्रीय सरकार द्वारा आयोजित कलेण्डर रिफार्म कमेटी के टेक्निकल शब्दावली कमेटी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा हिन्दी कोष के विज्ञान विभाग के सदस्य के रूप में आपने अपने ज्ञान भण्डार का सदुपयोग किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मंत्री के रूप में तथा 28वें हिन्दी साहित्य सम्मेलन अधिवेशन में विज्ञान सम्मेलन के अध्यक्ष रहकर आपने हिन्दी की महान सेवाएं की।**

आप उच्चकोटि के गुरु तथा महान लेखक थे। वाणी के वरदपुत्र, अनन्य विद्योपासक, विपुल ज्ञान सम्पन्न, सज्जनता और महानता के मूर्तिमान रूप अत्यन्त उदार एवं दान शील व्यक्ति थे। **आप मुक्त हृदय से निर्धन छात्रों एवं संस्थाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। आप कर्मयोगी थे। सादा जीवन उच्च विचार, आपके जीवन**

का ध्येय था। आप काम क्रोध से रहित, सदाचारी, कर्त्तव्य निष्ठ, परिश्रमी, आशावादी तथा आत्म विश्वासी व्यक्ति थे। आपकी दिनचर्या संयम नियम से पूर्ण थी। अतिथि सत्कार आपका विशेष गुण था। आपकी कीर्ति सदा अमर रहेगी।

आपका जातीय जीवन भी गौरवशाली था। आपने जाति की उन्नति में सदा हाथ बटाया। अ.भा. हैहय क्षत्रिय महासभा के मंच से आपने जाति को उपर उठाने का कार्य सदैव किया। कानपुर में आयोजित महासभा के तृतीय अधि वेशन में आपने सक्रिय भाग लेकर संघर्ष की स्थिति को बचाया। महासभा के पंचम अधिवेशन मिर्जापुर में छात्रों की सहायता करने का भार आप पर रखा गया। आपने छात्रवृत्तियों की व्यवस्था करके निर्धन छात्रों को सुयोग्य बनाकर जीवन निर्वाह के योग्य बनाया। सन् **1938 में आपने भागलपुर महासभा के सातवे अधिवेशन के सभापति पद को सुशोभित किया तथा विद्याप्रचार, विवाहादि में फजूल खर्ची, दहेज प्रथा निषेध, वर्गबन्धन तोड़कर रोटी-बेटी का संबन्ध, आचार विचार शुद्धि तथा यज्ञोपवीत आदि के प्रचार को जाति उन्नति के साधनों पर प्रकाश डालते हुए आपने जाति का उचित मार्ग दर्शन किया।**

आप हैदय क्षत्रिय पाठशाला, प्रयाग के लगभग 10 वर्षो तक सभापति रहे तथा उसकी उन्नति में सहयोग प्रदान करते रहे। सन् 1954 में प्रयाग में आयोजित महासभा के 12 वें अधिवेशन के मंच से कालेज की आर्थिक सहायता हेतु जोरदार अपील करके हजारों रुपयों का चन्दा प्राप्त किया, स्वयं एक हजार रुपये प्रदान किए। आप महासभा के अन्य अधिवेशनों में भी भाग लेते रहे तथा अपने बौद्धिक प्रयासों से जाति का मार्गदर्शन करते रहे। आपकी उदारता और सहृदयता अविस्मरणीय रहेगी। आपकी धवलकीर्ति जाति गगन में ही नहीं सारे देश के अन्तरिक्ष में सदा फैलती रहेगी।

5 मई 1961 को अपने सेवक, निहोर को गंगा में डूबने से बचाने के लिए आपने अपने को ही गंगा की गोद में सदा के लिए समर्पित कर दिया। आपका जीवन धन्य है। **यद्यपि आप अपने भौतिक शरीर से हमारे मध्य नहीं हैं, तथापि आपकी महान आत्मा जाति को सदा प्रेरणा तथा मार्ग दर्शन प्रदान करती रहेगी।**

राज कुमार गुप्त, महामंत्री
प्रबुद्ध जायसवाल कल्याण समिति लखनऊ

संपादक के नाम पत्र

सेवा में,
श्रद्धेय सम्पादक महोदय
जायसवाल जागृति, दिल्ली
महोदय,

अवगत करना है कि आपने जायसवाल जागृति के अक्टूबर-दिसम्बर 2019 के अंक में **विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार एवं स्वतंत्रता सेनानी, विधिवत्ता व मुद्राशास्त्रो डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल विशेषांक प्रकाशित कर अत्यन्त सराहनीय व प्रशंसनीय कार्य किया है, मैं आपके प्रति नतमस्तक हूँ। विशेषांक** में आपने श्री काशी प्रसाद जायसवाल को भारत रत्न दिलाने हेतु स्वजातीय वस्तुओं से सुविचारित राय भी आमंत्रित किया है।

इस सम्बन्ध में, मेरा झुकाव यह है कि राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर कार्यरत स्वजातीय सभाओं के अध्यक्ष, महामंत्रीगण स्वजातीय सांसद व विभिन्न प्रदेशों के स्वजातीय विधायक गणों की एक बैठक देश की राजधानी दिल्ली/नोएडा में आपके नेतृत्व में शीघ्र बुलाई जाय।

इस प्रस्तावित बैठक में डा. काशी प्रसाद जायसवाल को भारत रत्न देने की माँग, लगाव रखने वाले जिज्ञासु स्वजातीय बन्धुओं सर्व श्री राममनोहर जायसवाल (असम) श्री राधेश्याम जायसवाल (रजिस्ट्रर से, निजी विश्वविद्यालय पटना) डा. यू.पी. शाही, श्रीमती मनीषा (B.H.U.) ध्रुवचन्द्र जायसवाल (गोरखपुर) ई.सी.पी. जायसवाल (लखनऊ) डॉ. रामकुमार जायसवाल (वी.वी. गिरि उच्च अध्ययन संस्थान लखनऊ) डॉ. सुरेन्द्र जायसवाल (विभागाध्यक्ष इतिहास लखनऊ विश्वविद्यालय) श्री संजीव जायसवाल संजय, ई.बी. शरण, अजय कुमार वरिष्ठ पत्रकार (समस्त लखनऊ) डा. कमल जायसवाल (भी.रा. अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ) श्रीमती मृदुला जायसवाल (मेयर वाराणसी) श्री सीताराम जायसवाल (मेयर गोरखपुर) श्री रवीन्द्र जायसवाल पत्रकार लखनऊ, श्री शंकर प्रसाद जायसवाल (श्री राजाराम जायसवाल एवं IAS लखनऊ) श्री उदयशंकर जायसवाल (पूर्व DIG लखनऊ) आदि जिज्ञासु स्वजातीय बन्धुओं को बुलाया जाय।

उक्त बैठक दिल्ली के अतिरिक्त लखनऊ में भी बुलायी जा सकती है। बैठक के आर्थिक व्यय हेतु आप जो भी अपेक्षा करेंगे उसे पूरा करने का प्रयास किया जाएगा।

आपका
राजकुमार गुप्त, कोषाध्यक्ष, डॉ. काशी प्रसाद
जायसवाल चैरिटेबल ट्रस्ट, लखनऊ

तभी सार्थक होगा महिला दिवस

गौरी, काली, राधा हो तुम
सरस्वती, लक्ष्मी का हो अवतार
जानती हूं, सुना है बहुत बार
ये मान सम्मान न हो केवल
एक दिन का,
इसलिए सीखें खुद का जिक्र करना,
स्वयं की भी अहमियत जानना।
भाग्य को स्वीकार करूँ,
ये मेरा बड़प्पन है
पर बदलाव की गुंजाइश होने पर, कोशिश भी ना करूँ
ये तो सरासर बौड़ापन है।
हर कर्तव्य का निर्वहन करती हूँ मुस्कुरा कर,
तो हक नहीं किसी का रखे मुझे डराकर।
किसी की प्यारी सी डांट बढ़ा देती है अपनापन
पर लगातार ताने-उलाहने और उपेक्षा
दिखाते हैं छोटापन, बौनापन।
डट कर करो मुकाबला इन सबका
गिरा दो पक्षपात की दीवार,
भरे हुई हो इतनी ममता
क्यों भूलती हो अपनी क्षमता,
कोई करे कि ना करे,
अगर स्त्रियाँ करें एक दूजे का सम्मान
तो बना सकती हैं पुरुषप्रधान समाज को भी नारीप्रधान।
परिवार, समाज, देश का आधार हो तुम
अन्नपूर्णा हो, शक्ति हो, वात्सल्य-प्रेम की हो प्रतीक,
बिना लांघे मर्यादा, अनुशासन की लकीर,
खुलकर जियो
करो तर्क, कहो सटीक
बोलना सीखो
तभी सार्थक होगा महिला दिवस
हर दिन होगा महिला दिवस।

नीरजा जायसवाल, मुंबई

डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल

संजय प्रसाद सरस्वती

हे विद्वान इतिहासकार, कानूनज्ञ कलचुरि लाल।
करें प्रणाम आपको, डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल।

जन्म 27 नवम्बर 1881, पिता महादेव मिर्जापुर वासी।
मिशन स्कूल मिर्जापुर और बनारस शिक्षा शुरुआती।।

जब गए इंग्लैण्ड ऑक्सफोर्ड तब था आपका 25 वां साल।
करें प्रणाम आपको, डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल।

इतिहास में एम.ए. किया, पास किया कानून की पढ़ाई।
लौट कर भारत आए, परिवार में खुशियां छाईं।।

कलकत्ता में शिक्षण शुरू किया, सबके चहेते हुए जायसवाल।
करें प्रणाम आपको, डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल।

स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े, अंग्रेजों का गुस्सा झेला।
छोड़ दिया अध्यापन कार्य, जब बांटा गया बंगाल।
करें प्रणाम आपको, डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल।

इतिहास में शोध किया, मनु–याज्ञवल्क्य पर व्याख्यान दिया।
'हिन्दू पॉलिटी' किताब लिखी, हिन्दू राज्य व्यवस्था का बखान किया,
भारतीय थे यूनानियों से बेहतर, ये दिया निकाल,
करें प्रणाम आपको, डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल।

कोई पढ़ न सका जिसे, वो 'हाथी गुफा अभिलेख' पढ़ डाला।
लंदन में मौर्य कालीन सिक्कों पर, अद्भुत भाषण कर डाला।
लिखा 'हिस्ट्री ऑफ इण्डिया' और लिखा 'हिस्ट्री ऑफ नेपाल'
करें प्रणाम आपको, डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल।

अगनित पुस्तक लिखीं आपने, अगनित विषयों पर व्याख्यान दिया।
रामधारी सिंह दिनकर और राहुल सांस्कृतायन को गूढ़ ज्ञान दिया।
पटना संग्रहालय का अध्यक्ष बनकर प्राचीन धरोहरों को दिया संभाल।
करें प्रणाम आपको, डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल।

कई समितियों के सभापति बने कई सम्मेलनों को शोभायमान किया,
कई विश्वविद्यालयों की उपाधि पाकर समाज को गौरववान किया,
कायल बने सभी आपके चाहे हो महात्मा गाँधी चाहे हों जवाहर लाल,
करें प्रणाम आपको, डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल।

4 अगस्त उन्नीस सौ सैंतीस को किया आपने देहावसान,
चले गए छोड़कर इस धरती को, देकर बहुत-बहुत ज्ञान
कर्तव्य है हम सभी लोगों का, रखें आपकी विरासत संभाल,
करें प्रणाम आपको, डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल।

संजय प्रसाद 'सरस्वती'
5/191, विराम खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ।
(पूर्व अध्यापक, प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज)

ममत्व की डोर

तुम अभी चिडिया हो छोटी सी
डोर से बंधी,
उड़ जाना जब तलाश लो अपना घोंसला कोई
माना कि पंख हो चुके हैं सशक्त
पर आंधी तूफान से टकराने
लायक नहीं
मैं जानती हूँ कि
तुम हो निडर, बेबाक
पर डरती हूँ
हो ना जाओ बेलगाम
बंधे रहने दो खुद को
इस कच्ची डोर से
ये सहारा तुम्हारा भी है
हमारा भी
ये प्यार है, लगाव है
अपनेपन का एहसास है
इस डोर को कभी
टूटने मत देना
हमने तो मजबूती से पकड़ा है
तुम भी नन्हे पंजों से
सरकने मत देना,
दरकने मत देना
रिश्तों के विश्वास को
ये डोर यूँ ही बंधे रहने देना
ये डोर यूँ ही बंधे रहने देना

नीरजा जायसवाल, मुम्बई

हिंदी के जाज्वल्यमान नक्षत्र

सूर के छंदों में बाल कृष्ण लीला
तुलसी के चौपदों में राम की कथा
रसखान के सवैयों में अद्‌भुत मधुरता
भूषण के कवित्त में ओज शौर्य वीरता
सब कुछ है हिंदी में ही तो मिलता
दिनकर के काव्य में स्वतत्रंता की ललकार
पंत और **निराला** में छाया का गंभीर स्वर
महादेवी के गीतों में अंतस की अकुलाहट
मीरा के भजनों में हरि आवन की आहट
यह भी तो है हिंदी में ही मिलता
प्रेमचन्द के गोदान में ग्राम जीवन की ताज़गी
अज्ञेय के साहित्य में मन की वीरानगी
रेणु के लेखन में बोली का टटकापन
यह भी है हिंदी का अपना ही धन
पर हम छोड़ रहे अपनी विरासत
अपनी भाषा और अपनी ही ताकत
विदेश की चमक दमक में हम खो रहे
हिंदी को छोड़ पाश्चात्य को अपना रहे

-डॉ. ओम प्रभात

पूर्व अध्यक्ष-रसायन विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक एंव
पूर्व सदस्य-केंद्रीय हिंदी समिति, भारत सरकार

मुस्कानों के मेले में

उलझन की आपाधापी
में कोई क्षण अपना तो हो

मुस्कानों के मेले
में भी कोई मन अपना तो हो,

जहां जिस्म के रूपनगर में
उड़ते पंख कपोतों के,
'वेलेन्टाइन-डे' में भी क्यों
सपने भटके रिश्तों के?
अर्धनग्न तन के
उत्सव में कोई तन अपना तो हो,

खोने - पाने की उलझन में
लुटी चांदनी यौवन की
सम्बन्धों के बाजारों में
नजरें बदलीं दर्पन की,

महाजनो के मदिरालय
में कोई जन अपना तो हो,

पत्थर के इस महानगर में
दर्द की चीखें कौन सुने?
रिश्तों के कुहरिल आंगन में
घाव की चीखें कौन सुने?

धनवानों के स्वर्णमहल
में कोई धन अपना तो हो।

डॉ. राधेश्याम बन्धु
बी-3/163, यमुना विहार, दिल्ली-110053, 09868444666

Jaiswal Jagriti
Minutes of the Meeting held on 29th February 2020

A meeting of Senior members of Jaiswal Jagriti was held on Saturday, 29th February 2020 at 4:00 PM at D-17, Gulabi Bagh, Delhi, at the residence of Shri Raja Ram Jaiswal Chief Editor Jaiswal Jagriti. The following members attended the meeting:

1. Shri Raja Ram Jaiswal
2. Shri Ashok Kumar Jaiswal
3. Shri K. N. Gupta
4. Shri Brajesh Kumar
5. Shri Makhan Chaudhary
6. Shri Krishna Das Chaudhary
7. Shri Manoj Kumar Shah
8. Shri Shiv Kishore Jaiswal
9. Shri Awadhesh Kumar Shah
10. Shri Shankar Chaudhary
11. Shri Brij Mohan Jaiswal
12. Shri Ajay Kumar
13. Ms. MeenuJaiswal
14. Shri Panna Lal Jaiswal

Special Invitee

15. Shri Chhote Lal Gupta
16. Shri Ram Harsh Jaiswal

Shri Krishna Kumar, Shri Narvadeshwar Jaiswal and Dr. Ashok Chaudhary could not attend the meeting for personal reasons.

The gentry present was apprised of the issues as per agenda by Shri Brajesh Kumar, General Secretary.

After deliberation, the decisions taken are as follows:

1. Website, facebook

The updating of the website including reports of meeting, matrimonials, photographs shall be undertaken on routine basis. The content to be uploaded shall be finalized by a committee comprising - Shri Ashok Kumar Jaiswal, Shri Brajesh Kumar, Shri Awadhesh Kumar Shah, Shri Makhan Chaudharyand Shri Shankar Chaudhary in consultation with Shri Raja Ram Jaiswal. The content/s so finalized shall only then be mailed to Shri Ajay Kumar for uploading on the Website.

Shri Prabhas of Shubham Graphics to be instructed to simultaneously forward the soft copy of the entire contents of every issue of "Jaiswal Jagriti Patrika" to Shri Ajay Kumar for uploading on the Website while transmitting the same for printing. In case of non-receipt even after printing, Shri Ajay Kumar to contact and do the needful.

2. FACEBOOK

The profile on the "Facebook"in the name of 'Jaiswal Jagriti' is being presently operated by Shri Aditya Vardhanam but the content is found to be unconnected rather any of the office bearer has no say in regulating it. To overcome this anomaly, it was decided that a new profile on Facebook shall be created and, if duplication is not permitted, humble request be made to Mr.AdityaVardhanam to share the password so that its link can be displayed on the Home page of the website as well and ensure that contents relevant to Jaiswal Jagritiare uploaded and circulated.

2. Non receipt of Patrika by Life Members

Complaints of not getting the copies of the subscribed Patrika is a serious issue. To overcome this, those not receiving the copy by post **can avail the option of delivery by courier** but this facility is subject to payment of Courier fee. Although a courier charge of Rs.200/- was proposed, yet Shri Brajesh Kumar was assigned the job to negotiate the rates for the same. The complaints received may be forwarded by the aggrieved subscriber or any recipient of the complaint with corrected address to Jagriti Office at D-62 (Basement), Gulmohar Park, New Delhi - 110049, Telephone Number 26566367, email: advbrajesh@gmail.com who will take further action in the matter.

3. Matrimonial

Every proposer availing this website facility will be required to deposit Rs.500/- which he can do Online by using the Link available on the Website.

4. Area-wise meetings

Under outreach programme, area-wise meetings will be restarted. The first will be organized by Shri Raja Ram Jaiswal. The names of Conveners for other areas was finalized.

5. Bank Account/s

It was decided that henceforth, for the ease of operation, only one account with a Bank shall be maintained by 'Jaiswal Jagriti'. Steps for closure of the account maintained with Bank of India, Shahpur Jat, should be initiated and balance outstanding to this Account be deposited with main Account maintained with Axis Bank, Green Park Branch. A separate ledger be maintained in the books of Jaiswal

Jagriti for "RahatKosh".

6. Future Programme

Secretary General will finalise the future programme - Annual meeting, cultural programme at a meeting of senior members in Jagriti Office. The details of the programme, the organizers should be finalised at this meeting. Special efforts should be made to associate young people both male and female members in organizing the above programme.

In addition to the above, the following issue was also deliberated upon:

7. SahastrabahuKalchuri Charitable Trust Account

In view of lack of any significant progress in the SahastrabahuKalchuri Charitable Dharmashala project,it was decided to close the Trust Account maintained with Syndicate Bank. Shri Panna Lal Jaiswal informed that he has already issued letters to all the donors soliciting their view whether they would be interested in getting back the money donated by them or would prefer the same may be transferred to "Jaiswal JagritiRahatKosh" which, as above stated, will be maintained in a separate ledger.

Some of the donors have responded, Shri Panna Lal Jaiswal will contact them personally on phone and elicit their opinion and, after getting their replies, necessary action will be taken. The Account maintained with Syndicate Bank shall thereafter be closed.

8. Jamunapar Holi Milan Samorah

Shri Chhote Lal invited all the members of Jaiswal Jagriti to participate in the "Holi Mangal Milan Samaroh"to be held on Sunday, 8th March 2020 at the Community Centre, Seelampur.

Meeting concluded with vote of thanks by Shri Panna Lal Jaiswal who also appreciated the exemplary role of "Pioneer" Shri Raja Ram Jaiswal in building Jaiswal Jagriti during the last twenty five years and bringingit to the present stage and appealed to all present at the meeting to share the load borne by him. In particular, he desired to know the willingness of anybody present prepared to take over the responsibility and role played by Shri Raja Ram Jaiswal in view of his advancing age and physical inability to actively look after the organizational work.

—**Brijesh Kumar Jaiswal,** General Secretary.

जिला पुरातत्व संघ, जबलपुर में डॉ. हीरालाल राय की 152 वीं जयंती सम्पन्न

सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद् एंव इतिहासविद् रायबहादुर डॉ. हीरालाल राय जी की 152 वीं जयंती बड़ी ही धूम-धाम से रानीदुर्गावती संग्रहालय में मनाई गई। इसका आयोजन जिला पुरातत्व संघ की ओर से किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि संभागायुक्त, जबलपुर **श्री राजेश बहुगुणा,** आयोजक अध्यक्ष जिला कलेक्टर श्री भरत यादव, विशिष्ट अतिथि विधायक विनय सक्सेना एंव नगर निगम अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा वाल्मीकि द्वारा दीप प्रज्वलन कर डॉ. रायबहादुर हीरालाल राय जी की मूर्ति का अनावरण किया गया। तप्पश्चात् बालभवन की छात्राओं द्वारा गणेश वंदना की प्रस्तुति की गई एंव तीन अन्य छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना की गई। आकृति इंस्टीट्यूट् ऑफ फाइन आर्टस की निर्देशक **दीपा अग्रवाल** द्वारा तैयार किए गए तैलचित्र का भी अनावारण किया गया। ''**कुसुमांजलि**'' नामक पुस्तक का जो हीरालाल जी के जीवन पर आधारित है लोकर्पण भी किया गया। हॉबी एण्ड कलेक्टर्स एसोसिएशन अध्यक्ष **श्रीमान संजय सेठ** एंव सहयोगियों द्वारा आयोजित पुरावस्तुओं के संग्रहण की प्रदर्शनी का अनावरण भी मुख्य अतिथियों द्वारा किया गया। **सुश्री डॉ. छाया राय** एंव भोपाल से विशेष निवेदन पर आए **श्री ओम मालवीय** जी द्वारा डॉ. हीरालाल राय के जीवन पर प्रकाश डाला गया। कमिश्नर श्री बहुगुणा ने अपने उद्बोधन में उन्हें अद्भुत व्यक्तित्व वाली हस्ती बताया। सुमित्रा बाल्मिकि ने आश्वासन दिया कि, **वे सदन में प्रस्ताव रखेंगी कि, हीरालाल जी के नाम की मूर्ति नगर निगम परिसर में लगाई जाएगी या किसी चौराहे का नाम उनके नाम पर किया जाएगा।** कटनी से पधारे **श्री राजेन्द्र सिंह** ने आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि डॉ. हीरालाल राय जो 19 विधाओं में पारंगत होने के साथ-साथ इतने बड़े साहित्यकार भी थे परंतु फिर भी उनका नाम हिन्दी साहित्य में कहीं भी नहीं है। भारी संख्या में अधिवक्तागण, समाजसेवी, संघ के सदस्य व कलचुरि समाज के पदाधिकारीगण भी मौजूद रहे। मंच संचालन **श्रीमती अंशु राय** द्वारा एंव आभार प्रदर्शन श्रीमती प्रमिला राय द्वारा किया गया।

पुरावस्तुओं के सग्रंह की प्रदर्शनी तीन दिन दिनाँक 01/10/2019 से 03/10/2019 तक आम जनता के भ्रमण के लिए जारी रही। एंव दिनाँक 02/10/2019 को दो वर्गो में सभी शालाओं के विद्यार्थियों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता जिसका विषय ''जबलपुर के **ऐतिहासिक स्मारक एंव पर्यटन स्थल**'' है सुबह 11.00 बजे से आयोजित की गई। जो नि:शुल्क थी, एंव उसी दिन पुरस्कार वितरण भी किया गया।

कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार करने में **श्री निशांत राय** का अतुल्य योगदान रहा।

''आधारायण-ग्रंथ का विमोचन''

इन्दौर। दिनांक 4 फरवरी 2020 आधार कार्ड जनक सुनील जायसवाल इन्दौर द्वारा लिखित किताब 'आधारयण-ग्रंथ'' का विमोचन किया गया।

राष्ट्रीय कलचुरि एकता महासंघ (महाराष्ट्र प्रदेश, नागपुर इकाई) (कलार, कलाल, कलवार समाज के सभी वर्गों की प्रतिनिधि महासभा के तत्वावधान में **स्व. श्रीमती आशादेवी गोविंदप्रसाद जायसवाल** की स्मृति में तथा प्रमुख संयोजक **श्रीमती दीप्ति** एवं **श्रीमान दीपक गोविंद प्रसाद जायसवाल**, नागपुर एवं संरक्षक **श्रीमती अर्चना जायसवाल,** इन्दौर, के नेतृत्व में अध्यक्ष **मा. आयुष** राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं रक्षा राज्यमंत्री भारत सरकार **श्री श्रीपाद येशो नाईक**, सड़क परिवहन, राष्ट्रीय राजमार्ग तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग मा. **श्री नितिनजी गडकरी** (नागपुर), केन्द्रीय मंत्री विशेष अतिथि मा. श्री प्रदीप जायसवाल (मध्यप्रदेश), मा. **श्री रविन्द्र जायसवाल**, स्टॉम्प, न्यायालय शुल्क व पंजीयन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) उ.प्र.), सांसद **श्रीमती रमादेवी** सामाजिक न्याय व सशक्तिकरण समिति, मा. **डॉ. संजय जायसवाल** सांसद व सभापति स्थायी समिति, जलसंपदा भारत सरकार मा. **डॉ. ढालसिंह बिसेन** सांसद, सिवनी-बालाघाट (म.प्र.) के पावन सान्निध्य में समस्त कलचुरि समाज बन्धुओं के समक्ष **सुनील जायसवाल** की पुस्तक **'आधारायण-ग्रन्थ'** का विमोचन समाज द्वारा तालियों की गड़-गड़ाहट के बीच किया गया। सुनीलजी ने बताया कि 'आधारायण-ग्रंथ'' में 15 अगस्त 2005 से उनके द्वारा आधार कार्ड का शोध-पत्र लिखा गया है। तब से आज तक उनके दावे को प्रभावित करने वाला भारत सरकार से जो पत्राचार हुआ उस संघर्ष की कहानी एवं उन सभी साक्ष्यों को इस 1100 पृष्ठों के 'आधारायण-ग्रंथ'' के माध्यम से भारत सरकार एवं आम जनता के लिए उपलब्ध कराया गया है। इसका वजन 4.250 कि.ग्राम है। सुनील जी ने बताया कि 'परि-कल्पना'' उनके द्वारा की गई थी, जिसके समस्त साक्ष्य इस किताब के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत किए हैं। इसमें भारत सरकार से इन्होंने अपना विरोध भी जताया है। वे चाहते हैं कि इसका श्रेय उन्हें दिलाया जाए। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण कलचुरि वंश का इतिहास एक बार फिर से लिखा जाए जिससे कलचुरि वंश के प्रत्येक नागरिक को अप्रत्यक्ष रूप से कहीं न कहीं इसका लाभ मिले। वे चाहते हैं कि आगे की जंग कलचुरि समाज अपने हाथ में ले।

सूचनाः जब गूगल पर आप आधार कार्ड के जनक सुनील जायसवाल बोलेंगे तो यू-ट्यूब पर साक्ष्य स्वरूप सुनील जी की वीडियों खुल जाएगा।

सधन्यवाद

सुनील जायसवाल व श्रीमती यामा जायसवाल

होली के मोरपंखी रंग : दिल्ली जायसवाल समाज के संग

जायसवाल समाज जमुनापार दिल्ली (पंजी) के बैनर तले होली मंगल-मिलन समारोह एवं परिचय सम्मेलन का 40वां सालाना उत्सव समुदाय भवन, वेलकम सीलमपुर, दिल्ली 110053 में 08 मार्च 2020 दिन रविवार को संगठन के अधिष्ठाता **श्री छोटे लाल गुप्ता** के मार्गदर्शन एवं **श्री राम हर्ष जायसवाल** की अध्यक्षता में इंद्रधनुषी माहौल में सहोत्साह संपन्न हो गया। जिसमें समाज के वरिष्ठ, प्रबुद्धजनों के अतिरिक्त कोरोना वायरस के बावजूद हजारों की संख्या में स्त्री, पुरुष, युवा एवं बालकों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया । भव्य कार्यक्रम का शुभारंभ राजरजेश्वर श्री सहस्त्रार्जुन के तैल चित्र पर पुष्प अर्पित, दीप प्रज्वलित, आरती व गणेश वंदना के साथ किया गया।

महिला दिवस के अवसर पर आयोजित इस होली मंगल मिलन समारोह में समाज की **नारी शक्ति को सम्मानित** करने के साथ, मेधावी छात्र- छात्रों के सहित, समाज में विशेष क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले महानुभावों का भी अभिनंदन एवं सम्मानित किया गया । इस अवसर पर नन्हे-मुन्ने बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत कर जमकर दर्शकों की तालियां बटोरी। संपूर्ण होली मिलन कार्यक्रम का सफल संचालन **अखिल भारतीय जायसवाल (सर्व.) श्री आदित्यवर्धनम्** ने कुशलता पूर्वक करते हुए अभूतपूर्व वाणी कौशल, संतुलन, एवं समयबद्धता का प्रतिमान स्थापित किया।

इस कार्यक्रम की एक महत्वपूर्ण विशेषता **विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय** भी रहा, जिसमें बच्चों की भागीदारी सराहनीय रही । कार्यक्रम के मुख्य **अतिथि वयोवृद्ध समाजसेवी एवं मालवीय मिशन के संस्थापक व जायसवाल जागृति के संरक्षक श्री पन्नालाल जायसवाल** एवं विशिष्ट अतिथि अखिल भारतीय जायसवाल (सर्व.) आ.भा.जा., महासभा (सर्व.) के महासचिव श्री पूरनचंद झरीवाल, व जायसवाल जागृति के संरक्षक कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. (प्रो.) अरुण मोहन भारवि, श्री अशोक जायसवाल, दिल्ली के पूर्व मेयर श्री दिव्य जायसवाल, शिक्षाविद राधेश्याम जायसवाल, वरिष्ठ समाजसेवी श्री शंकरलाल जायसवाल, श्री संतलाल जायसवाल श्री अवधेश गुप्त, प्राचार्य श्रीमती नीलम भारवि, श्री लाल जी जायसवाल, श्री शैलेंद्र जायसवाल एवं श्री गोपाल जी जायसवाल रहे।

युवक-युवती परिचय सम्मेलन का संचालन **श्री राम नारायण जायसवाल**, मेधावी बच्चों को पुरस्कृत करने के कार्यक्रम का संचालन **श्री शंकर लाल जायसवाल**, बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन **श्री दयाशंकर जायसवाल**, सामाजिक महापुरुषों को उतरीय व माला पहनाकर सम्मानित करने का कार्यक्रम **श्री छोटे लाल गुप्ता, श्री राम हर्ष जायसवाल,** श्री तुलसीराम जायसवाल एवं श्री घनश्याम जायसवाल ने संभाली।

इस अवसर पर संगठन की मुखपत्रिका **"जायसवाल संदेश"** स्मारिका के 40 वें अंक का लोकार्पण भी संपन्न हुआ जिसमें बिरादरी की गतिविधियों को रेखांकित करने वाली रचनाओं के साथ ही 500 से ज्यादा विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय प्रकाशित किए गए हैं। प्रिंस ग्रुप एवं साथियों द्वारा प्रस्तुत श्री कृष्ण लीला की झांकी के कार्यक्रम ने चार चांद लगा दिए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए आदित्य वर्धनम ने श्री पन्नालाल जायसवाल, श्री पूरन चंद झरीवाल, श्री दिव्य जायसवाल, श्री छोटे लाल गुप्ता एवं डॉ. अरुण मोहन भारवि को होली की शुभकामनाएं देने के लिए आमंत्रित किया और वक्ताओं ने अपने उर्जावान व मार्मिक संबोधन में **सबको अक्रर्शित करते हुए** दिल्ली की विषम परिस्थितियों में कार्यक्रम की आशातीत सफलता और आयोजनकर्ता की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि -

चलो मनाएं इस तरह होली अबकी बार! इस होली में दे जला मन के सभी विकार!!

इस होली मंगल मिलन समारोह की सफलता के पीछे होनहार युवा शक्ति के सर्व श्री अमित कुमार जायसवाल, योगेंद्र जायसवाल, संजय जायसवाल, विजय कुमार जायसवाल, मुकेश जायसवाल, आशीष जायसवाल, आशाराम जायसवाल, कमलेश जायसवाल आदि का अप्रतिम योगदान सराहनीय रहा । कार्यक्रम अपनी सफलता, रोचकता, उपादेयता एवं शालीनता के लिए महीनों स्मरणीय रहेगा।

आदित्य वर्धनम, राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय जायसवाल (सर्व.) युवा महासभा, 98183 89050

श्री राजीव जायसवाल दिल्ली पुलिस में इंस्पेक्टर के पद पर पदोन्नत

हर्ष का विषय है कि द्वारका, सेक्टर-19 स्थित दिल्ली निवासी 40 वर्षीय युवा **श्री राजीव जायसवाल** की दिल्ली पुलिस में फरवरी 2020 से पुलिस इंस्पेक्टर के रूप में पदोन्नति हुई है। जायसवाल जागृति परिवार की ओर से उन्हें तथा उनके परिवार को हार्दिक बधाई। इनके पिता मधु विहार, दिल्ली निवासी **श्री के.एस.पी. जायसवाल** भी दिल्ली पुलिस से कुछ वर्ष पूर्व सब-इंस्पेक्टर (Communication) के पद से सेवा-निवृत्त हुए थे। इनकी माताजी **श्रीमती मीरा जायसवाल** कुशल गृहिणी हैं। परिवार में पत्नी **श्रीमती बीना जायसवाल** एवं पुत्री **अद्विका जायसवाल** तथा पुत्र **राजवीर जायसवाल** अध्ययनरत है। श्री राजीव जी वर्तमान में गृह मंत्रालय में तैनात हैं। अनेकशः शुभकामनाएँ।

–राजाराम जायसवाल

कुर्यात् सदा मंगलम्

नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य हैं। बेहतर होगा यदि आप या तो दो मोबाइल नं. दें अथवा एक मोबाइल और एक लैंडलाइन टेलीफोन नम्बर भी अवश्य दें।

वैवाहिकी

नोटः सदस्यों/पाठकों की सुविधा हेतु 'वैवाहिकी' को अंग्रेजी अल्फाबेट्स के क्रम में अर्थात अभिभावकों के नामों के अनुसार (वर्णक्रमानुसार) संकलित/वर्गीकृत किया गया है। मांगलिक एवं सामान्य वर्ग को अलग-अलग शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया गया है।

'वैवाहिकी' शुल्क

प्रत्येक अभिभावक / विज्ञापनदाता से अंतिम पृष्ठ पर ग्राहक / सदस्यता के लिए दर्शाए गए 1500/ रु. के शुल्क में वैवाहिक विज्ञापन के प्रकाशन का शुल्क शामिल है। पत्रिका की एक प्रति उन्हें भेजी जाएगी। सुधी एवं सम्मानित विज्ञापनदाताओं से यह भी आग्रह है कि वे पत्रिका में विज्ञापन के जरिए विवाह तय होने पर मंगल-निधि के रूप में अपनी सामर्थ्य के अनुसार यथेष्ट सहयोग राशि भेजने की कृपा अवश्य करें, क्योंकि इस स्तर की पत्रिका के प्रकाशन पर संस्था को आर्थिक व्यय का भार भी वहन करना पड़ता है। जनवरी-मार्च 2017 के अंक से वार्षिक सदस्यता पूर्णतः समाप्त कर दी गई है।

विवाह सम्बन्ध तय हो जाने पर प्रधान कार्यकारी संपादक महोदय को सम्बन्धित क्रम संख्या का हवाला देते हुए टेलीफोन अथवा कोरियर द्वारा पत्र भेजकर तुरंत सूचित करें। सदस्यता शुल्क अथवा विज्ञापन की राशि नीचे दिए गए पते पर भेजें। हमारे **AXIS Bank** के **A/C No.** 0150101-00247337 **IFSC-UTIB-0000015** में सीधे जमा कराके हमें तदनुसार सूचित करें। स्मरण रहे, **Net-Banking** द्वारा जमा की गई राशि की रसीद या उसकी प्रतिलिपि सलंग्न करना नितान्त अनिवार्य है।

'विशेष सूचना'

''वैवाहिकी स्तम्भ'' के अंतर्गत 'मांगलिक वर्ग' एवं 'सामान्य वर्ग' के अतिरिक्त एक तीसरा वर्ग *''तलाकशुदा (Divorcee) विधुर, विधवा आदि अन्य वर्ग''* भी आरम्भ किया गया है। हालांकि हमारी दृढ़ मान्यता है कि परिवारों में यह नौबत किसी भी स्थिति में आनी ही नहीं चाहिए। हर स्थिति में विवाह की पवित्र संस्था का प्रत्येक पक्ष को सम्मान देते हुए उसे बरकरार रखना चाहिए। किंतु देखा गया है कि कहीं मिथ्या दंभ व **Ego** के कारण तो कहीं अन्य अपरिहार्य कारणों से अलगाव प्रत्येक पक्ष के लिए अवश्यम्भावी हो जाता है। अतः जीवन के बिखरे सूत्रों को नए सिरे से पिरोना भी अनिवार्य हो जाता है। इसलिए इस विशेष वर्ग की आवश्यकता की पूर्ति हेतु ''तलाकशुदा **(Divorcee)** विधवा, विधुर आदि'' नामक तीसरा वर्ग आरम्भ किया गया है। यदि कोई सज्जन अपना या लड़के-लड़की का नाम गोपनीय रखना चाहते हैं तो इसकी भी व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे बंधुगण या तो हमसे या फिर संबंधित क्रमांक विशेष के टेलीफोन नम्बर से सम्पर्क कर सकते हैं। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः''। अस्तु। ❑ प्रधान सम्पादक

विशेष सूचनाः जिन वैवाहिक विज्ञापनदाताओं का विज्ञापन पिछले तीन वर्षों से लगातार प्रकाशित किया जा रहा था, उनके वैवाहिक विज्ञापन इस अंक से प्रकाशित नहीं किए जा रहे हैं। अतः ऐसे जो भी विज्ञापन-दाता पुनः आगे भी अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित कराने के इच्छुक हैं, वे कृपया हमारे कोषाध्यक्ष श्री माखन चौधरी से तुरंत सम्पर्क करके एवं 1500/- रु. का शुल्क अदा करके विज्ञापन पुनः प्रकाशित करवाने का कष्ट करें।

राशि स्थानीय रेखांकित चेक, रेखांकित बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा ''जायसवाल जागृति'' के नाम से देय होना चाहिए। शुल्क भेजते समय अपना पूरा पता, पिन कोड आदि स्पष्ट लिखें ताकि पत्रिका आपको नियमित रूप से मिलती रहे। विशेषः- जिन सज्जनों को डाक से पत्रिका प्राप्त करने में असुविधा हो रही हो, वे कृपया 200 रु. (दो सौ रुपये) वार्षिक शुल्क अलग से प्रेषित कर कोरियर द्वारा पत्रिका मंगवा सकते हैः-

राजाराम जायसवाल, प्रधान सम्पादक,
''जायसवाल जागृति'' 19-C, DDA (MIG) Flats, गुलाबी बाग, दिल्ली-110007,
Mob. 9013262811

(कृपया वैवाहिकी सहयोग के लिए अन्तिम पृष्ठ देखें)

मांगलिक वर्ग

A1. **अभिभावक :** श्री अनिल कुमार जायसवाल (Retd Judge) गोरखपुर, 215-एन-19, विकास नगर आवासीय कालोनी, खेतान अस्पताल के पीछे तथा झूलेलाल मंदिर के निकट पो. एवं जिला गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)M: 8009243232, 08174987887

पुत्र : आदित्य, 9-1-1986, (गौरखपुर-उ.प्र.) मांगलिक 5'11" गोरा, LLB (दिल्ली), उ.प्र. सिविल जज (न्यायधीश) हेतु सुंदर सुशील गोरी शालीन बधू अपेक्षित।

पुत्री : संजना जायसवाल, 10-5-1988, (गोरखपुर-11.16 दिन में) 5'3" गोरी, MBA (HR) बैंक ऑफ बड़ोदा में आफिसर हेतु सरकारी बैंक प्रतिष्ठित मल्टीनेशनल कं. में अधिकारी पद पर कार्यरत सुयोग्य वर अपेक्षित।

2. **अभिभावक :** श्री बलजीत कुमार जायसवाल 5/सी, एवन कालोनी, नवीन नगर, सहारनपुर (उ.प्र.)-247001 M : 9412453810

पुत्र : डॉ. कमल जायसवाल (आंशिक मांगलिक), 5'8", 15-9-87, गेहुंआ, B.P.T, MPT (Neuro physiothe rapist नोएडा स्थित Health Care Comp. Pvt में कार्यरत, पैकेज 5 लाख रुपये वार्षिक।

3. **अभिभावक :** मदन लाल जायसवाल, पीठ बाजार, ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तराखण्ड)-249407, (M) 9012654987

पुत्री : ज्योति जायसवाल (मंगली), 14-8-1989 5'4", एम कॉम, बेसिक कम्प्यूटर, दिल्ली।

4 **अभिभावकः राजकिशोर जायसवाल**, A-106/1, Fourth Floor, Joshi Colony, I.P. Extension, Delhi-110092, Mob-9717546924, 9810950426

पुत्री (1)- रीतू जायसवाल (मांगलिक) 11-8-1990, 4'9", colour Normal, B.com (Hons) CA (Inter)

पुत्री (2)- अल्का जायसवाल (आंशिक मांगलिक) 2-10-1992, 4'9", colour wheatish B.Com (Hons) CA (Foundation)

5. **अभिभावक- श्रीमती अन्नपूर्णा गुप्ता पत्नी स्व. श्री संतोष कुमार गुप्ता**, म. नं. 1306, गली नं. 23, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, वैस्ट करावल नगर, दिल्ली-110094, M.-9818289471, 011-22933951

पुत्री- सृष्टि (मांगलिक), जन्म 30-9-1989, जन्म समय शाम 6:00 बजे दिल्ली में, 4'10" गोरी, बी.ए., मास्टर डिग्री मॉश कमनिकेश्न, रेडियो, टी.वी. जनर्लिज्म डिप्लौमा, सर्विस Asst. Managar Marketing, Salary 20,000 P.M.

6. **अभिभावकः विजयकुमार जायसवाल**-टिम्बर मर्चेन्ट, सी-94/1, चन्द्रपुरी, चांदबाग, भजनपुरा रेडलाइट के पास, दिल्ली-110094 फोन नं. 09999285302

पुत्री-मेघा, (मांगलिक) जन्मतिथि-04 अगस्त 1989, 7 बजे सायं (दिल्ली), साफ रंग, 5 फिट 2 इंच, शिक्षा-**सी.ए., एम. बी.ए.** प्राइवेट कम्पनी ओखला, दिल्ली में कार्यरत, पैकेज 10-12 लाख वार्षिक। स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

सामान्य वर्ग

1. **अभिभावकः श्री अरुण कुमार गुप्ता**, (गार्ड 'A' ग्रेड, मुगल सराय) 519, AB, इंडियन इंस्टीट्यूट कालोनी मुगल सराय, चंदौली M : 9794849490, 9450181498, 8090946880

पुत्री- मीनाक्षी, 5'1" सुन्दर, आकर्षक डिप्लोमा (CS), B.Tech. (CS from Meerut), 20-04-1993, (09.12(AM) Patna, colour fair

2. **अभिभावक :** अशोक कुमार जायसवाल (PCS Retd.), वर्तमान में सदस्य किशोर न्याय बोर्ड, बरेली। 35/U/6 सिविल लाइन्स, रामपुर गार्डन, बरेली (उ.प्र.)-243001, M : 91-9837177302, 91-8218757163, 91-9411699419

पुत्र : शुभांग जायसवाल, 5'8" जन्म 1-2-1987, बी.टेक (आई.टी.), वर्तमान, Post Graduation program in Business analytics for Executives from Indian Institute of Management Lucknow (I.I.M. LKO), Accolit India Software Pvt. Ltd., Delhi, में कार्यरत **आय-16.5 लाख रु0।**

3. **अभिभावक :** श्री अरुण कुमार चौधरी, कोशी एक्सरे क्लिनिक, एम.जी.मार्ग., खगड़िया विहार-851204 M : 9431417963

पुत्री : श्वेता कुमारी, 5'5" जन्म 9-9-1988, (समस्तीपुर) B.C.A, गोरी स्लिम, PNB रायपुर में Probationary Officer.

4. **अभिभावक :** अनिल कुमार जायसवाल, 41/1-A/1 गली.14, ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली-110054, M : 9210705572

पुत्र (1) : हिमांशु जायसवाल **(मांगलिक)**, B.A. 5'8" जन्म 17-2-1993 (9.30 AM, Delhi) गोरा, प्रो. मयंक एंटरप्राइस (Ladies garments & Accessories) तथा Lace के होलसेल व्यवसायी। **आय-2 लाख रुपये मासिक।**

पुत्री (2) : आकांक्षा **(मांगलिक)**, 5'3" जन्म 17-2-1993 (9.05 AM Delhi) गोरी, MBA (final) from DU.

5. **अभिभावक-** अशोक कुमार साई, **पताः** साईसवाल (बैंक कर्मचारी) RZ-6 मानसकुंज, उत्तम नगर नई दिल्ली M.-8860281021, 9268075028

पुत्री- अभिलाषा, 5'7" 4-12-1986 (गुरगाँव) रंग साफ, B.Com. from Delhi, MBA from Rohtak, service in Banking.

पुत्री- नुपूर (मांगलिक), 5'4" 11-10-1991 (5:00 PM Delhi) compexion very fiar, M.A. in Art and craft cccopetion : Teacher

6. **अभिभावकः-** श्री अजय कुमार जायसवाल, मो काम्पलेक्व, घोड़ा सहन, पूर्वी चम्पारण, बिहार -845303, मो. न.-9507783504, 9012303260, 9310345576

पुत्र-आयुष कुमार जायसवाल Executive Engineer, Domodar Vally Corporation, 27 वर्ष, गोरा, 5-4 शिक्षा NIT, Email-ayush.aman497@gmail.com.

7. **अभिभावक-** डॉ. अनंत प्रसाद चौधरी, राजीव नगर, पटना M.-7543055511, 9430059993 Email, drkumkudtu@gmail.com

पुत्र- डॉ. कौस्तुव, 32 वर्ष MBBS, (General surgery) FMAS (with), FMIS (AIIMS) पैकेज 6 अंकों में 172 cm स्मार्ट, सुन्दर आकर्षक, स्वस्थ युवक।

8. **अभिभावक-** अरविन्द कुमार चौधरी (General Manager) M.-9953096808

पुत्र- ईशान कुमार चौधरी, 5'8" जन्म 9-10-1987, साफ रंग स्मार्ट, पैकेज 10 लाख Chartered Accountant (FCAI), B.Com. (Hons.) Asstt. Manager (Tax &

Audit)

9. **अभिभावक :** श्री अनिल कुमार जायसवाल, नन्दगंज मार्कट, नंदगंज, जिला-गाजीपुर (उ.प्र.) पिन-233302 M : 9453484040, 8303517704

पुत्र : शरद कुमार जायसवाल, B.A, MA (Economics), M.Ed, Net, UPTET, CTET, CCC, 6'2" जन्म 27-11-1988 (8:40 PM) Revenue sub inspector (उ. प्र. सरकार)

पुत्री : जया जायसवाल, 28 वर्ष, 5'2" साफ रंग. सुंदर, MA, MEd, Net, TET, CTET, बस्ती (उ.प्र.) में Village Development Officer.

9a. **अभिभावक :** श्री अनिल कु. जायसवाल 160, अनूप नगर रोठा रोड, मेरठ-250001 (उ.प्र.) M : 9219613863

पुत्र : अंकित जायसवाल, 4-11-1993 (9.25 PM मेरठ, 5'6", गेहुँआ, B. Com., ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, वार्षिक आय 4 लाख स्मार्ट व्यक्तित्व।

10. **अभिभावक :** श्री ओमप्रकाश जायसवाल (चावल के थोक व्यवसायी) D-II, 397-398, पहली मंजिल, Sector-7 रोहिणी, दिल्ली-110085 M : 9899424368, 8178845541

पुत्र : सुधीर कुमार जायसवाल, 22-2-1988 (7.42 AM सिलीगुड़ी, प. बंगाल), 5'7", IDI MIA, नोएडा में Sr. Software Enginner, B.Tech, साफ, स्मार्ट व्यक्तित्व, Email : Sudhirjustme@gmail.com.

11. **अभिभावक–**श्री अनिल कुमार जायसवाल, (Retd. supdt. Archeological Survey of India)–74/22, Shipra Path, Mansarovar, Jaipur फोन न.–0759792110, 09929660874

पुत्र–आकाश जायसवाल, जन्मतिथि–5-11-1988, (4.35 AM देहरादून) 5'10', M.Com, MBA (IBS) Credit manager, Barclays Bank) पैकेज 17.5 लाख, शिक्षित परिवार, स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

12. **अभिभावक–**Anil Kumar Jaiswal (Engineer), Prop. Shubham Builders, H.No. 2708, DLF City, Phase-IV, Gorgaon, (Near Galaria Market Shopping Complex), M.9811663284, (0124) 2386815

पुत्र–Abhimanyu Jaiswal, DOB, 27 January 1994, 5'9", MBA Finance (New York USA) Noridian Healthcare Solution, LIC Compensation Consultant, House: West FARGO, North Dakoota, U.S. Phone: (940) 3909979

13. **अभिभावक–**अखिलेश जासवाल, जायसवाल फार्मा 171ए, ठेठरी बाजार चौक, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश, फोन न.–9532252230, 9911515253

पुत्री–सुष्मिता जायसवाल, जन्मतिथि–11-11-1992, (सुल्तानपुर) 5'3', fair, M.Tech (E.C.) Gold Medalist, Ph.D Ist Year M.N.N.IT. Allahabad U.P.

B14. **अभिभावकः श्री बिंदु चौधरी,** म.न. 276, सोनिया गांधी कैंप, समलका रंगपुरी नई दिल्ली-110037, M : 7838462147

पुत्री- पूजा, 5'3" 7-12-1996 (सीतामढ़ी) 12वीं पास, खजान इंस्ट्रीट्यूट से BC उत्तीर्ण की साफ गेहुआ रंग स्मार्ट आकर्षक।

15. **अभिभावक :** स्व. श्री बिहारी लाल जायसवाल दिल्ली दरवाजे बाहर,दारू गोदाम के पास कोठिया पावी मोहल्ला, अलवर (राजस्थान) M : 7014453944, 9667152823, 9309232213 **पुत्र (1) :** टिंकू, 10-12-1994, 12th, ITI, self Business. **पुत्र (2) :** पिंकू 6-6-1996, Diploma in mechanical, self business

16. **अभिभावकः** भोलानाथ जायसवाल-सरकारी नौकरी, गोत्र-कश्यप, पता : एफ-83,कुंवर सिंह नगर, नागलोई, दिल्ली-110041, फोन नं. 09968936545

पुत्री- सुमन, जन्मतिथि-01-06-1993, साफ रंग, 5 फिट 4 इंच, शिक्षा-बी.काम., जे.बी.टी.(टीचर ट्रेनिंग कोर्स), कार्यरत कम्प्युटर आपरेटर, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, प्रतिमाह वेतन-15000/ रू0

17. **अभिभावक-** बबन प्रसाद, हनुमान नगर, पटना (बिहार)-20 M.-9835871038, 9334827500

पुत्र- विकास कुमार, 5'8" 32 वर्ष Compaxion, prefrance Govt. Officer deployed in UP

18. **अभिभावक-** भगवान सिंह जायसवाल (बिजनेस मेन) M.-9810103658, 8826371371

पुत्र- निशान्त जायसवाल, 5'7" 28-1-1990 (00:4am Delhi) wheatish brown, Qualification B.Tech E and C from BBDIT Ghaziabad, Sr. Accountant (Ministry of Agriculture, Govt of India)

19. **अभिभावक : श्री बाल रवि प्रकाश गुप्ता** (वायु सेना से Jr. Warrant Officer के पद से सेवानिवृत), फ्लैट नं. 313 Sanvi Sankalpam NAGONDANHALLI, White field, बंगलौर-560066 (कर्नाटक) M. 9482593364 (Whatsapp No. 9453621296)

पुत्री- विभा गुप्ता, D.O.B- 20-05-1993 (21.43 Hrs देहरादून) 5'4", सुंदर, B.E., बंगलौर स्थित HARMAN INTERNATIONAL प्रा.लि. में Sr. Software Engr. स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

20. **अभिभावक :** श्री सी.पी. गुप्ता (Sr. Advocate), 193, कल्पना नगर, सिविल लाइन्स, इटावा-20600। प्रतिष्ठित परिवार (M) 9410485758, 7417715565

पुत्री : डॉ. निधि गुप्ता, जन्म-24-01-1980, (16.20 P.M. इटावा उ.प्र.), MBBS, DOMS, (GRMC ग्वालियर), Pursing MD in Microbiology (BHU), 5 फुट 1 इंच, स्लिम, सुन्दर, गौरवर्ण, आकर्षक, स्मार्ट व्यक्तित्व। पेंटिंग पठन-पाठन, पाक-कला एवं गृह-सज्जा का शौक। चार वर्ष तक Rural PGI, सैफई इटावा के नेत्र विभाग में Sr. Resident, परिवार में अन्य सदस्य सिविल जज अथवा मेडिकल व्यवसाय में संलग्न।

21. **अभिभावक–**श्री देवेन्द्र जायसवाल, पता–D-219 आनंद विहार, दिल्ली-110092, फोन न.–9212725140, 9555541050
भतीजी–मेघा जायसवाल, जन्मतिथि–16-12-1984, 5'2", MA (ECO), B.Ed, Pursuing Ph.D. स्मार्ट fair, Hobbies : Reading, teaching.

22. **अभिभावक**-श्री फुलेन्द्र चौधरी सम्पर्क डॉ. सत्यदेव गुप्ता जायसवाल L-1/56, श्री कृष्ण पुरी, बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) M-9308741023
पुत्री-प्रियंका चौधरी, B.A., 5'6" 4-9-1988 अति सुन्दर गोरी, स्लिम दिल्ली पब्लिक स्कूल में टीचर, पति की अल्प बीमारी के कारण मृत्यु दो पुत्र क्रमशः 9-10 वर्ष बच्चों को नाना-नानी रखने को तैयार योग्य संस्कारी वर अपेक्षित विधुर भी मान्य।

23. **Father's-** Shri G.L. Chouksey, Retd. From Forest dept., M.P. Govt., Bhopal, 43 Prakash Nagar, Ayodhya Bypass road, Piplani, Bhopal-462022 Ph. 7987142364, 9981770414.
Daughter : MEENAL CHOUKSEY, 09-06-1985 (Time 00.10), Prakash Nafar, Bhopal, M.P., Height-5'.3", Fair, B.Sc., MBA (Finance), PGDCA, Manager, F.C.I. (Govt. of India), West Zone, M.P. Region, 10 Lakhs P.A.

24. **अभिभावक-** गंगा राम जायसवाल, **पताः** Station Road, Purani Basti, Near purani Thana Basti, District Basti (UP)-272002 M.-9044015597, 8604262492
पुत्र- विशाल जायसवाल, 5'7" 15-1-1987 Qualification B.A. profession; SBI Life Insurance Advisior + SBI ATM Guard Income 2.5 Lac.

25. **अभिभावक :** श्री हरि प्रकाश जायसवाल म.न. 1292/28 फ्रेन्डस कॉलोनी सिद्धेश्वर मंदिर के पास झांसी (उ.प्र.) -282001 M : 07460000268, 09839419372
पुत्र : विकास जायसवाल, 29 वर्ष, कद 5'8" . B.Arch. Master in Architecture (N.I.T. Bhopal) राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत **आय 1 लाख- रु. प्रतिमाह।**

26. **अभिभावक-** श्री हरीलाल गुप्ता (व्यवसायी) A-416, शास्त्री नगर, दिल्ली-110052 M.-9810129465, Email : spacocable@yahoo.co.in
पुत्री- ज्योति, 5'3" 3-08-1990 (06.35 PM Delhi) सुन्दर C.A., B.Com (Hons.) D.U. Asstt. Manager (A/CS), Jubliant Consumer

I27. **अभिभावक :** श्री इंदकुमार जायसवाल (B.Tech, MBA) Asian Paints Ltd, Mumbai में वरिष्ठ पद पर कार्यरत 402 धनशिला अहिंसा मार्ग, खार (पश्चिम) मुंबई-400-052 ड रू 09820215011ध09820194569 (मूल निवास-इलाहाबाद)
पुत्री : स्मृति, 8-9-1985 B.M.S. (Bachelor of Management Science), M.Com, CFA (Leve l I & II), MBA (free Mumbai), 5'2", स्लिम सुंदर आकर्षक मुंबई स्थित बैंक ऑफ अमेरिका में कार्यरत, अच्छा वेतन।

J28. **अभिभावक :** श्री जवाहर लाल जायसवाल IP/B, Ist floor, हुमायूंपुर, S.J. Enclave, New Delhi-110029, M : 09650508397
पुत्र : राहुल कुमार, MBA, Advertising & Travel Co. में कार्यरत 26 वर्ष, स्वस्थ, गोरा, आकर्षक, स्वयं का फ्लैट, अच्छी आय।

29. **अभिभावक :** श्री जुगल किशोर जायसवाल (व्यवसायी) मण्डी चौक, विकासनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
पुत्री : स्वप्निल जायसवाल, (आंशिक मांगलिक) M.Tech (Comp. Sc), 5'4", 26-10-1989, (8.35AM, देहरादून) MNC नोएडा में कार्यरत, पैकेज 2.50 लाख रुपये।

K30. **अभिभावक–** श्री कृष्णा प्रसाद एवं सविता चौधरी, F124, पॉडव नगर गली न० 6, दिल्ली- 110092, मो० 919560444808 (सुलतानगंज (बिहार) के रहने वाले हैं।)
पुत्री (1) निक्की उम्र 31 वर्ष, उजली गोरी 5'10" कम्प्यूटर ग्राफिक्स में कैरियर, बी.ए (अर्थशास्त्र) प्राइवेट कंपनी दिल्ली में नौकरी पाक कला में प्रवीण।
(2) सोनी उम्र 28 वर्ष सुन्दर गोरी 5'5" कम्प्यूटर ग्राफिक्स की जानकारी। बी.ए. (अर्थशास्त्र) दिल्ली में प्राइवेट नौकरी।

31. **अभिभावक-** काशी प्रसाद जायसवाल, **पताः** D35/334, जगाम्बरी, वाराणसी-221001 M.-9415369550, 0542-2451627
पुत्री- शिखा जायसवाल, 5'2" 12-2-1988, fair, PHD (Pursing) Textile Design B.H.U. Varanasi.

32. **अभिभावक :** लक्ष्मण सिंह बेनीवाल, शिक्षा विभाग में कार्यरत, 6/231, NEB Exension, Preet vihar transport nagar, Alwar (Rajasthan)-301001, M : 8766022928, 9351653004. 8890593175
पुत्री : निशा रानी, MA (Political science and English and B.Ed) 5'3" जन्म 5-7-1990 (11:15 AM) अलवर, गोरा, प्राइवेट स्कूल में कार्यरत।

M33. अभिभावक : श्री मनोज कुमार गुप्ता, (Sr. Sec. Officer Afcs) 1240/C-5 प्रीत विहार, चाणक्य अपार्टमेंन्ट के सामने आदर्श नगर, नमोदा रोड, जबलपुर-482001 (मध्यप्रदेश), Ph : 09752418123, 8349231125 **पत्र व्यवहार का पताः** श्री श्रीराम जायसवाल Retd SP/CBI, 10 शांति निकेतन, 89, नर्मदा

रोड, जबलपुर (म.प्र.)-482001

पुत्र : सोमेश कुमार, 22-4-1991, (5:10 AM, जबलपुर) 5'6", सुन्दर स्मार्ट, B.Tech. MS(CS), मोर्गन स्टेनली में Technical Associate, न्यूयार्क (अमेरिका) पैकेज 1 लाख डॉलर +बोनस।

34. **अभिभावक : श्री महेन्द्र जायसवाल B.E., MBA (Category 'A' Surveyor & Loss Assessor), E-87, लाला लाजपत राय सोसायटी "फ्लैट नं. 401, ग्रीन पार्क अपार्टमेंट्स, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 (म.प्र.) M-09425012242, टे. (0755)-3591817, स्थानीय सम्पर्क: श्री राजाराम जायसवाल (नानाजी) M-9013262811**

पुत्र : एकांश जायसवाल, जन्म 28/29-10-1988 (दिल्ली रात्रि 12.45 में), B.Sc (Hospitality & Tourism Managment) from Amity University, MBA (Marketing & sales), 6'3", स्मार्ट, आकर्षक, सुडौल व्यक्तित्व (Forward looking young man) Associate Director Ananta Group of Hotel and Resorts (उदयपुर अजमेर एवं पुष्कर में) पैकेज 13 लाख Good Physique Sportsman दिल्ली में स्वयं का मकान। दिल्ली में तैनात।

35. **अभिभावक :** श्री मनोज कुमार जायसवाल, B-33, विमला टावर, न्यू पुनाई चाक (नजदीक राजवंशी नगर SBI, बेली रोड, पटना-800023 Ph : 09472021184, 9570365020, 9868721763

भांजी : शिम्पी जायसवाल, 4-9-1993, (फार्बेसगंज) 5'4", गेंहूआ B.Com., CMA, from Kolkata.

36. **अभिभावक :** श्रीमती माला जायसवाल 214/184-A, नई बस्ती, बाराखम्बा, कीडगंज, इलाहाबाद (उ.प्र.), (M) 8174867157

पुत्री : सौम्या जायसवाल, M.Sc. (Biochemistry) M.Ed, 12-7-1990 इलाहाबाद (3.20A.M.), 5'3", प्रतापगढ़ (उ.प्र. सरकार) अपर प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका पैकेज 5 लाख रुपये सुंदर आकर्षक स्मार्ट।

37. **अभिभावक-** मुकेश कुमार जायसवाल, स्टेट बैंक वाली गली, मकान नं. 1597, कच्ची मंडी कोसी कलामथुरा-281403 M.-8533800619, 7906018745

पुत्र- रोहित जायसवाल, 6'1" 27-5-1988 (8:25 PM Kosikalan) B.A. Rajasthan University Exam by D.G.C.A. (all cleared) CPL and PPL, Licence Business Lazy Mozo Back Peeker Foreigners Guest House at Civil Line Jaipur (Rajasthan)

38. **अभिभावक : श्रीमती मीना देवी जायसवाल**, D. 14/88, टेढ़ी नीम, दशाश्वमेघ, वाराणसी (उ.प्र.) M 9935470506

पुत्र- सूरज कुमार जायसवाल 15-07-1989 (6.20 P.M. वाराणसी) 5' 5", स्मार्ट, आकर्षक ग्रेज्युएट, B.H.U में Music Teacher तथा सितार और तबला आदि वाद्य उपकरणों के व्यापारी, स्वयं का मकान।

39. **अभिभावक–**श्री मेधाव्रत जायसवाल (Gift shop business) जायसवाल होम अप्लायेसेस, 171, ठठेरी बाजार, सुल्तानपुर

फोन न.–8090242532, 8765770123 (whtsapp) 8896404464, 9208747409

पुत्र–अनुदीप जायसवाल **(मांगलिक)**

जन्मतिथि–12-9-1980, (खंडवा, म.प्र.) 5'8', M.C.A. Sr. Software Engr. in Nokia solutions and Network Noida, He wishes to settle in Delhi, पैकेज 10 लाख

40. **अभिभावक–**श्री मोहनीश जायसवाल, (व्यवसायी), फोन न. –9654778803

भाई–श्री प्रशान्त जायसवाल, 26-6-1990, (10.33 AM) 5'7', B.Com, spectacle frames wholesaler, स्मार्ट, पैकेज 1 लाख प्रति माह

N41. **अभिभावक :** श्री नारायण सोमवंशी, सरकारी विभाग में कार्यरत, जयपुर रोड, उमरैण, जिला अलवर राजस्थान-301001, M : 9887607300, 9694178713, 7734936915

पुत्र : राहुल सोमवंशी, BBA and MBA 5'6" 27 वर्ष Samsung में samsung express consuitant के पद पर कार्यरत है। पैकेज 3.5 LPA

42. **अभिभावक–**नीरव जायसवाल (एडवोकेट) गुडगांव हरियाणा फोन न.–9810891524

पुत्री–तृप्ति जायसवाल, जन्मतिथि–22-10-1991, 8:10 रात्रि दिल्ली 5', fair, PHD (psychology) from punjab university Chandigarh, UGC NET qualified.

43. **अभिभावक :** डॉ. ओंकार नाथ जायसवाल, दिलदार नगर बाजार, गाजीपुर, उ.प्र.-232326, M- 9506793062

पुत्री : प्रिया जायसवाल, 25-6-1988, (M.A. & ITI computer application), 5', गोरा

44. **अभिभावक :** श्री ओम प्रकाश चौकसे (किसान) एवं श्रीमती आभा चौकसे, करेली, नरसिंहपुर (म.प्र.) M : 9826611582

पुत्री : वसुन्धरा चौकसे, 17.8.1988ए (करेली म.प्र. 6.03 AM) 5'7", B.E. (IT) from LNCT Bhopal. Rank Asstt. इंडियन कोस्ट गार्ड में Commandant, Air station चेन्नई में Logistics office के पद पर तैनात 3-5 वर्ष की service seriority.

45. **अभिभावक :** श्री ओम प्रकाश जायसवाल Prop. Navjoyti Enterprises, ब्लॉक UP, प्लाट नं. 55 प्रथम मंजिल पीतमपुरा, दिल्ली-110034, M : 9810562034 Email : rahul.regard@gmail.com.

पुत्र (1) : राहुल, 02-01-1989, (5.35,pm कोलकाता), 5'7" गौरवर्ण, स्मार्ट, MBA, स्वयं का व्यवसाय (Electrical Accessories)

पुत्र (2) : विनय, 26-05-1990, (4.17,pm दिल्ली) MCA, 5'8", MNC में software engineer अच्छा पैकेज गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।

पुत्री (1) : नमिता, 24-08-1992, (8.15,am कोलकात), 5'2", B.Tech (MDU University), MNC में software engineer अच्छा पैकेज गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।

46. **अभिभावक :** श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (AAO, U.P. Govt), 4 निर्माण निगम कालोनी, तिकोना पार्क, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025, M : 9971143601

पुत्र : सिद्धार्थ जायसवाल, 5'10" जन्म 8-4-89, B.Tech (Electronics & Communication), नेटवर्क इंजीनियर HCL, ग्रेटर नोएडा, पैकेज 6 लाख रु. शुद्ध शाकाहारी साफ आकर्षक स्मार्ट व्यक्तित्व।

47. **अभिभावक :** प्रदीप कुमार जायसवाल (Business man), मकान नं. 1076, Ward No. 3 कैनाल रोड, हर्वटपुर (देहरादून)-248142, M : 91-7017792611, 91-9412150835

पुत्री : कनिका जायसवाल, 5'2" जन्म 16-7-1990, M.Com वर्तमान में Del. Ed. कर रही है तथा विद्यालय में पढ़ा भी रही है। तथा बैंक की तैयारी भी कर रही है। गोरा, इकहरा वदन, सुन्दर।

48. **अभिभावकः** प्रमोद कुमार (सुपुत्र डॉ. सत्यदेव गुप्ता) C/o L-1/56 श्री कृष्णपुरी बोरिग रोड, पटना-800001 (बिहार) फोन 9430060645, 9308741023, 0612-2541587

पुत्री-मुदिता 15-3-89, 5'4" B.A. (Hons. Eng.) PGDM, सुंदर गोरी आत्मनिर्भर संस्कारी वर अपेक्षित।

49. **अभिभावक :** श्री प्यारे लाल जायसवाल, (व्यवसायी), 176, मूनगली, गार्डन, साहुकार लाइन, हलद्वानी (नैनीताल) उत्तर प्रदेश

पौत्र : आकाश कुमार, पारिवारिक कारोबार में सलग्न सुंदर, स्वस्थ, स्मार्ट, आकर्षक, 25 वर्ष, B.Tech, जन्म 15-8-1991, (02:42 pm हलद्वानी)।

50. **अभिभावक :** श्री पी.सी. जायसवाल, 23/47/111 महादेवी भवन, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश-211006 M : 0532-2500624, 09415702805, Email: abhishekjaiswal128@gamil.com

पुत्र : अन्शुल जायसवाल 10-04-1987, 5'10" Fair, Slim, Handsome, कॉनवेन्ट एजुकेटेड B.Tech (Electronics Communication) राष्ट्रीयकृत बैंक में असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत Civil Services के लिए प्रयासरत।

51. **अभिभावकः प्रदीप कुमार जायसवाल,** नियर सागर आर्ट, P.O. Kharmanchak, Bhagalpur (Bihar) Pin-812001 फोन-8709162766, 8252924240

Email = rimajaiswal64@gmail.com

पुत्री- रीमा जायसवाल : 30-3-1991, 5'1", रंग- साफ, M.Com (ACCT) Diploma in Computer Application. Banking. संगीत व पाकशास्त्र की रूचि।

R52. **अभिभावक :** श्री रामलखन जायसवाल (Redt. HAL) क्वा. नं. -13/8 एच.ए.एल. कॉलोनी, रामादेवी, कानपुर-208007 फोन : 09452525520

पुत्री : ऊषा, जन्म 31.5.1982, कद 5'2" गोरी, आकर्षक, स्मार्ट, गृह कार्य में निपुण, शिक्षा-बी.एस.सी., एम.सी.ए., सॉफ्टवेयर इंजीनियर (नोएडा में) पैकेज 5.89 लाख वार्षिक।

53. **अभिभावक :** श्री रमेश बाबू जायसवाल (Ex-Air India), गौत्र-सौगारा, सी-7/207, यमुना विहार, दिल्ली-110053 (M) 9818970975

पुत्री : शिल्पा जायसवाल 26-11-1995, (7.00 A.M. Delhi) 5'3", B.A. (History Hon.) Doing D.I.E.T. from Gwalior in 2nd year, सुंदर आकर्षक स्मार्ट।

54. **अभिभावक :** श्री राकेश जायसवाल (Own two renowned Hotels at Moga, Real Estate Business, and Rental Income), M : 9316273798, 9888043798

पुत्र : शुभम जायसवाल B.A, L.L.B, Preparing for Judicial, 5'8", 26-1-1991, (3.11PM, मोगा) गोरा, आकर्षक।

55. **अभि० –** श्री रजित राम गुप्ता, (Serving in National Institute of Immunology), 760, DDA FLATS, LADO SARAI New Delhi-110030 M 9899188680 (मूल निवासी: श्रावस्ती, उ. प्र.)

पुत्र– नरेन्द्र गुप्ता 10-10-1989 (4:30 A.M. दिल्ली) B. Tech (Instrumentation & control), Fujitsu Consulting India (नोएडा) में Technical Assit. के रूप में कार्यरत, पैकेज- 8 लाख रुपए 5'7", स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व। M- 9654172929.

56. **अभिभावकः श्री राजकुमार जायसवाल (व्यवसायी)** 230 Scheme No.-4 राजेन्द्र नगर अवलर-301001 फोन-9950006152, 7240705562

पुत्री- नेहा जायसवाल M.com and pursing B.Ed, 5'4", 14.2.1996 गोरवर्ण DPS school, Alwar में शिक्षिका

57. **अभिभावकः श्री रंजीत जायसवाल (जनरल स्टोर)** शारदा काम्पलेक्स के सामने, निकट रेलवे क्रासिंग के सामने, ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तराखण्ड)-249407 फोन-9152423670

पुत्री- प्रियंका जायसवाल (आंशिक मांगलिक) जन्म 14-2-1993, 5'3", रंग साफ, इंटर आईटीआई, (ऑफिस अस्सिस्टेंट कम कम्पयूटर ऑपरेटर) अतिरिक्त योग्यता खाना बनाना एवं गृहकार्य में दक्ष।

58. **अभिभावक :** श्री राजकिशोर जायसवाल A-106/1, चौथी मंजिल मंजिल, जोशी कॉलोनी, इंद्रप्रस्थ एक्सटैशन दिल्ली-110092, M : 9810950426

पुत्री (1) : ऋतु (मांगलिक), 11-08-1990, 4'9", गेहुंआ, B.Com (Hons), CA (Inter)

पुत्री (2) : अलका (आंशिक मांगलिक), 2-10-1992, 4'9", गेहुंआ, B.Com (Hons), CA (foundation)

59. **अभिभावक :** श्री रजनीश जायसवाल 124, शिवालिक कॉलोनी, अम्बाला सिटी, हरियाणा-134003, M : 9355702194

पुत्र : अंकुर जायसवाल, 12-02-1992, 5'7", (8.40 PM, अम्बाला) B.E. (Mech.), Scientific Asstt at Govt institute

for plasma research Gandhi Nagar (Gujrat) pakage 10 लाख वार्षिक।

59a. **अभिभावक :** श्री राजेश कुमार, 56/L-I, कृष्णपुरी, साउथ बोरिंग रोड पटना-800001, M-9234757531, 8521342371.
पुत्रीः मुदिता जायसवाल 15-3-89 5'4", Fair, B.A, PDGM, Comp. Sc., सम्पन्न परिवार अपेक्षित वर, बिहार पटना के समीप और सर्विस या व्यवसाय हो।

60. **अभिभावक :** श्री राजेन्द्र भरसकले PSU में कार्यरत 29/ III ENG Enclave, GMS रोड, देहरादून-248001 Email : tvarita91@yahoo.co.in M-9410391647, 06000675049, 9410397116.
पुत्री (1) : Tvarita Bharsakle, Dob. 14-9-91 Time 12.15 pm, (Dehradun) 5'3", Fair M.S. (ENT) from Govt. Medical College, Kota MBBS (Bhubaneswar); MS/MD/Medico/IAS/IPS/IFS/ IRS लड़के को वरीयता।

S61. **अभिभावक :** श्री सुरेन्द्र कुमार जायसवाल (Engineer), D-3, Rachna Vihar, Borkute Layout, Narendra Nagar, Nagpur-440015 (M) 09595483195, 09372718546,
Email : skjaiswal5@rediffmail.com
पुत्र : अनुराग जायसवाल, जन्म 28.2.1980 (5'9') रंग-गेहुँआ, B.Com (Computer Application), Nagpur University, Working as Accountant with M/s GAMON India Ltd., Posted at Mumbai.

62. **अभिभावक :** श्री संतोष कुमार जायसवाल (प्रसिद्ध व्यवसायी) जायसवाल निवास, सोना बाबू का गैरेज, हाजींगंज, पटना सिटी पटना (बिहार) M : 8252518584, (0612)-2616236, Whatsapp : 9835298796
पुत्र : हितेष जायसवाल 5'8" जन्म 19-9-1989 (पटना), LL.B., B.Com., NSSL लिमिटेड, नागपुर में Asstt. G.M. पैकेज 12 लाख रुपये; वर्तमान पता : 101F, Block 5, रिंग रोड त्रिमूर्ति नगर, नागपुर (महाराष्ट्र), सुंदर, अत्यंत स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

63. **अभिभावकः सुनील जायसवाल,** 221 नूनिया मोहल्ला (चाणक्यपुरी) सदर, मेरठ छावनी-250001(यू.पी.) फोन-7830988678
पुत्र- सौरभ जायसवाल 20-4-1983, (स्थान मेरठ) 5'1", रंग- गेहुंआ, शिक्षा-10वीं पास, व्यवसाय-पान मसाला, आय लगभग 20 हजार मासिक। अपना मकान।

64. **अभिभावक :** श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल (Iron & Steel Traders), 121/4V/1-B, MM Road. Kolkata-700 054. M : 8013838215, 9903391132 Email : prashantjaiswal@107gmail.com
पुत्री : प्रियंका, 20-8-1991 (कोलकत्ता 8.45 AM) 5'4", गोरी, B.Com., CS।
पुत्र : विवेक, 5-12-1987 (कोलकत्ता 12.50 PM) 5'8", गोरा, B.Com., CA।

65. **अभिभावक-** राजकुमार वालिया, (Rd. JE) H.No. 473 Dalima Vihar, Rajpura, Dist. Patiala (Pb.)-140401 M.-9888027110
पुत्र- अमित कुमार वालिया, 5'7" 12-8-1975 (05:45am S Nabha Pb) Australia Citizen, Fiar Taxi operator, 40 lac package

66. **अभिभावक-** राज सिंह, Dilidar wazar Bahar Meenapadi, Tasigh house ke pass, Alwar (Raj.)-301001, M.-9667770001
पुत्र- हर्षराज, 5'7" 5-11-1993 (12:50pm Alwar) Income Rs. 18,000 per month.

67. **अभिभावक :** Late Sh. Rajeev Jaiswal, Businessman 257, K.k. Street, Chandani Chowk, Delhi–110006, (011)-23928089, 9990315956, 901519997
पुत्रीः Ankita Jaiswal, DOB 16th July, 1993 (Delhi At 5:20 A.m.) Height : 5'.4'' Complexion : Fair Personality : Smart With Pleasing Aim : Lecturer In DU
1. Pursuing B.ed. (Final Year). 2. M.phil In Sanskrit 3. B.A. (Hons.) And M.A. Sanskrit (Hons.) From Daulat Ram College (Du).

68. **अभिभावक–**श्री राजेन्द्र जायसवाल, 3098 व्यंकटेश विहार, एयरपोर्ट रोड, इंदौर फोन न.–9617010844, 8982899771
पुत्री–साक्षी जायसवाल (मांगलिक) जन्म–4-2-1993, (4.25 PM, इंदौर) 5'2', B.E (Mechanical), L and T, बडोदरा (गुजरात) में कार्यरत पैकेज 7.5 लाख, स्मार्ट आकर्षक व्यक्तित्व।

69. **अभि०–** डा. एस.डी. घनेटवाल (जायसवाल), B-1/8 गांधी पथ चित्रकूट योजना वैशाली नगर जयपुर (राज.) -302021, M 09413900991, 0141-4020789
पुत्र– सिद्धार्थ घनेटवाल (जायसवाल) (15-2-1992 जयपुर राजस्थान), B.Tech. com. Science Software Engineer in HPE Bangalore 6', अच्छा पैकेज बी.टेक. तथा कार्यरत कन्या अपेक्षित।

70. **अभिभावक-** संतोष जायसवाल, C/o Maa Parwati Steet and Wood Furniture, GT Road, Duilpur, District Chanduli (UP)-232101
M.-9984438621
पुत्री-अनीसा जायसवाल, 5'3" 8-8-1993 (10:59pm Zamania) Fair qualification B.A. PGDCA + CCA (Microtech)

71. **अभिभावक–**श्री सुरेश कुमार जायसवाल (सरकारी सेवा) वार्ड नं. 4, लक्ष्मीबाई मार्ग, खाटी कुंडी चौक, खिलचीपुर जिला-रायगढ़ (म.प्र.) फोन न.–7879161099, 9669401914
पुत्री–आस्था जायसवाल, जन्म–6-12-1992, 26 वर्ष (19.55 खिलचीपुर) 5'6', M.Tech (IT), T.C.S. इंदौर में सेवारत पैकेज 5.6 लाख

72. **अभिभावक–**श्री शिव प्रसाद जायसवाल (दिल्ली सरकार में Class-I अधिकारी) पता–391 F, पॉकेट-2, फेज-I, मयूर

विहार, दिल्ली-110091(011)-22753484, **फोन न.–** 9599959013

पुत्र–अप्रतिम जायसवाल (मांगलिक) जन्मतिथि–4-8-1992, (8.03 PM इलाहाबाद) 6'1', गेहुआ B.Tech, fidelity International, नोएडा में कार्यरत, पैकेज 10 लाख।

73. **अभिभावक–**श्रीमती शोभा जायसवाल (धर्मपत्नी स्व. हरधन चन्द्र, काकोरोड बस स्टैंड के सामने, जहानाबाद (बिहार)-804408 फोन न.–8083241132, 7050318497

पुत्र–विकास राज, जन्मतिथि–4-4-1996, 5'2", ग्रेज्युएट।

74. **अभिभावक :** श्रीमती तनु जायसवाल (व्यवसाय), 276 ग्राउंड फ्लोर-HIG Flat No. 3, Plot No. 276, ज्ञानदर्शन सोसायटी ज्ञानखंड-I, इंदिरापुरम गाजियाबाद-201014, (M) 9971445325, 9989109200, Email : rhljaiswal 26@gmail.com.

पुत्र : राहुल जायसवाल (मांगलिक), 26-12-1993, (Delhi, 9AM), 6', बी.कॉम, Manager, Just Dial, पैकेज 5 लाख रुपये।

75. **अभिभावक–** प्रोफेसर डा० टी० एन० चौधरी (रिटायर्ड प्रोफेसर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट) जवाहर लाल रोड (चैम्बर ऑफ कामर्स के पास) सरैयांगज, मुजफ्फरपुर (बिहार) 842001 मोबाइल नं०. 9835229883, (0621)-2246105

पुत्र– यशस्वी आलोक 38 वर्ष गोरा 5'7", MBA, MCA एवं M.Tech निदेशक कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेकनोलाजी। आय 15 लाख प्रतिवर्ष गोरी टेक ग्रेजुएट कन्या अपेक्षित।

पुत्री– डा० रजनी जायसवाल BHMS, MBA गोरी 5'2" HR Manager in MNC नई दिल्ली, 36 वर्ष, पैकेज 10 लाख।

नातिन– मुदिता जायसवाल (पटना निवासी) अत्यंत गोरी सुन्दर 5'5" बी.ए. (इंगलिश) एम.बी.ए. की छात्रा पिता रि० शिक्षक श्री प्रमोद कुमार निवासी L1/56 श्रीकृष्णापुरी, पटना-8001

76. **अभिभावक :** त्रिभुवन प्रसाद जायसवाल (दूसरी मंजिल, भारत भवन, रोड नं. 11, अशोक नगर, पटना-800020), M : 9234708747

पुत्र : विनय कुमार 32/6'00", B.Tech./M.Tech. PHD Final year IIT Scholarship 5 Lakh Yearly, Fiar.

77. **अभिभावक-**श्री तेज नारायण जायसवाल (प्रतिष्ठित व्यवसायी) 104A/360, रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.) M.-9839027212, 9657129022 Email : aalekhjaiwswal@yahoo.com

पुत्र-आलेख (आशिक मागलिक) एकलौता पुत्र, 23-06-1990, 5'8" गेहुआ आकर्षक एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व प्रशिक्षित B.Tech, Business हेतु प्रोफेशनली क्वालिफाइड या टीचर कन्या को वरीयता।

78. **अभिभावक:** श्री उमेश जायसवाल 1872 हाउसिंग बोर्ड कालोनी सेक्टर-7 बहादुरगढ़, जिला झज्झर (हरियाणा)-1245707 Ph: 9034826911 मूल निवास गोरखपुर

पुत्री : रुचि जायसवाल, 12-7-1992, (07.17 AM) नांगलोई, दिल्ली 5'2", B.Tech (C.S), MNC में कार्यरत, गेहुंआ, स्मार्ट।

V79. **अभिभावक:** डा. विजय कुमार जायसवाल, D-16/272, रोहिणी, सेक्टर-7, दिल्ली 110086 (**स्थानीयसम्पर्क:** श्री जीतेन्द्र चौधरी (व्यवसाय) 1711-C, मुल्तानी मोहल्ला रानीबाग, दिल्ली-110034. M- 9811231162, 7428970007)

पुत्री: प्रियंका जायसवाल, जन्म 20-9-1989, (रात्रि 10 बजे) 5'2½", XII वीं पास, कम्पयूटर कोर्स, गृह कार्य दक्ष।

80. **अभिभावक-** श्री वीरेन्द्र प्रसाद, कृष्णा नगर, वार्ड-22, जिला-सहरसा, (बिहार), M.- 094306875493, 9871788770, Email : Smritkumari111@gmail.com

पुत्र- आशीष कुमार, 29 वर्ष, 5'11", MCA from Ignou, MNC में Sotware Engineer के पद पर कार्यरत, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिभाशाली व्यक्तित्व। A-20, शकरपुर, दिल्ली 110092, M : 09971516377 Email: ashish@gmail.com

81. **अभिभावक: वीरेन्द्र कुमार जायसवाल (बिजनेसमैन)** Sumrit Mandal Campus, Jail Road, Tikamanhji, Bhagalpur M.: 943121533, 8969255995

पुत्र- आदित्य जायसवाल, 27-5-1988, (5.15 pm) 5'2", milky white, MBA, Assistance Manager Canara Bank.

82. **अभिभावक–**श्री विनोद गुप्ता, F-111-A, Sector-11 प्रताप विहार, विजय नगर, गाजियाबाद-201009, 9910922437, 8744817069

पुत्री–सुजाता (**आंशिक मांगलिक** की छाया 28 वर्ष की आयु में समाप्त हो गई) जन्म–15-7-1990, (12.02 AM नूरपुर बलिया) 5'3', गेहुआ BBA, Pursuing MBA, नोएडा एक्सपोर्ट कं. में Accountant (पैकेज 2.50 लाख), साफ रंग।

83. **अभिभावक–**श्रीमती विभा देवी (पत्नी स्व. ध्रुव नारायण प्रसाद गुप्ता) फोन न.–7488196750, 9560290732, 9911515253 (श्री सुनील, मामाजी)

पुत्री–राधा, जन्मतिथि–17-2-1989, (वेतिया पश्चिम चम्पारण) 5'4', fair, B.Sc. (Hons) in zoology.

84. **अभिभावक–**श्री किशन लाल राय, फोन न.–925056773, 9990252526 Redt. from DDA, Sultan puri, Delhi

पुत्र–संदीप राय, जन्मतिथि–12-7-1990, (दिल्ली) 5'8", B.A. दिल्ली सिविल डिफेंस में जाब, 25,000/- मासिक स्मार्ट, साफ रंग।

85. **अभिभावक–डा. देवेन्द्र कुमार जायसवाल (बहरीन के अस्पताल में डॉक्टर) माताजी: प्रीति जायसवाल (बहरीन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की लेक्चरर) फोन न.–91. 9871971380, (+973) 5393228 बहरीन) कोठी C-565 NRI City, Sector Omega-II, Greater Noida, U.P. प्रतिष्ठित परिवार, अधिकांश दिल्ली में**

पुत्री–नेहा जायसवाल, जन्मतिथि–23-8-1994, 5'2", साफ रंग गेहुँआ, Doing Master in Computer System in Australia (Final Semester).

तलाक शुदा (Divorces'sr), विधवा (Widow)

1. **अभिभावक-** श्री आनन्द स्वरूप जायसवाल, 10/26, सेक्टर-3, राजेन्द्र नगर साहिबाबाद 201005 (गाजियाबाद) उ.प्र., M.- 9871262622
   पुत्र- उत्तम कुमार, 35 वर्ष, **तलाकशुदा,** कोई संतान नहीं है, जन्म 23-07-1977 (मथुरा, 10.10 P.M)
2. **अभिभावक :** श्री श्यामसुंदर जायसवाल, ठाकुर विलेज, कांदिवली (East) Ph 400101
   पुत्र : Divorcee 38 वर्ष, 5'8" सुन्दर, स्लिम, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिभाशाली, कांवेंट प्रशिक्षित, B.Com, LL.B. व्यवसाय में सुस्थापित, **विवाह के बहुत थोड़े समय पश्चात ठोस कारणों से अलगाव हो गया।** सुन्दर, शिक्षित अच्छे परिवार की कन्या अपेक्षित। विवरण प्रेषित करें E-mail : vivah6@hotmail.com
3. **अभिभावक :** श्री राजकुमार वालिया (Retd. Enger) C/o अनुज कर्णवाल, लेन नं. 3, म. न. 45(3/45), सहस्रधारा रोड, एकांत विहार, देहरादून (उत्तराखंड)-248001 M-9888027110, 7055866901
   पुत्र : अमित कुमार, (NRI Divorce), 12-8-1975, (40 वर्ष), (नाभा- पंजाब 04:45AM) 5'7", आस्टेलियाई नागरिक, Fair टैक्सी आपरेटर का स्वयं का व्यवसाय। 40 लाख रुपये पकेज।
4. **अभिभावक-** सुरेश चन्द्र जायसवसाल, Jaiswal Insitutute of Classes RK गार्डन, रामपुर रोड, जहारंमल पेट्रोल पम्प के पीछे, हलद्वानी (नैनीताल) उतराखण्ड।
   पुत्र- नीरज कुमार (तलाकशुदा) 39 वर्ष, सुंदर, स्मार्ट, आकर्षक, शाकाहारी, व धार्मिक, स्वभाव निजी आवास, B.com, M.com, CA, CS, ICWA की कोचिंग क्लासेस, लगभग 10 वर्ष का पुत्र साथ में रहता है, M.- 9719738295
5. **अभिभावक :** स्व0 रमेश सिंह वर्मा, H.No. 12, आनंद गार्डन, राजेन्द्र पार्क पुलिस स्टेशन के पास, रेलवे स्टेशन के पास गुड़गांव-122001, M : 9136760393
   पुत्र : राकेश सिंह **(तलाकशुदा)**, 34 वर्ष, मैट्रिक पास, 5'5", स्वस्थ, गेहुआ रंग, अपना मकान, अपनी किराने की दुकान।
6. **अभिभावक-**श्री शिव चरण कुमार c/o जयभारत पाइप्स स्टोर, हनुमान रोड, शामली-247776 (उ.प्र.) मो. 09412867590
   पुत्री (तलाकशुदा)-गरिमा कर्णवाल, 12-9-82, (शामली, 4:10 pm) 5'5", B.SC, MCA, MNC, गुडगांव में कार्यरत।
8. **अभिभावक :** श्री अजय कुमार जायसवाल H.No. 485 मेसर्स आयुष फ्लोर मिल्स पोस्ट घोड़ासहन जिला पूर्वी चम्पारण (बिहार)-845303
   पुत्री : अर्पिता जायसवाल (तलाकशुदा), 32, वर्ष 5'5", रंग गोरा सुंदर सुशील ग्रेजुएट मानसिक तनाव के कारण संबंध विच्छेद सुंदर शिक्षित परिवार, संतान रहित वर अपेक्षित। Email: Subu4u87@gmail.com Whatsapp/Mob No. 9560356897
9. **अभिभावक :** श्री रामचन्द्र चौधरी, (Acctt, Hotel Midway), A-1/231, सेक्टर-4, रोहिणी, दिल्ली-110085, M-9211098672, Email : dchoudhary90@gmail.com
   पुत्री : ज्योति चौधरी **(तलाकशुदा)**, PGDFT, M.Com (Du), Adriel High School, Delhi में शिक्षिका, जन्म 12-1-1988, 5'4" वेतन 15000/- प्रतिमाह अन्य शिक्षेतर गतिविधियों में सक्रिय भाग।
10. **अभिभावकः श्रीमती मीना जायसवाल,** (W/o स्व. राजेन्द्र जायसवाल) संस्कृति अपारर्टमेंट Upper Ground Floor, 4, Plot No. 225, Niti Khand-I, Indirapuram संस्कृति रेंजीडेंसी गाजियाबाद-201010 (यू.पी.) फोन-8448219160, 9415132661
    पुत्री- सुमन (तलाकशुदा) 27-08-1988 (वाराणसी, 3 AM), 29 वर्ष, 5'3", साफ रंग, एम.ए. (इग्लिश)।
11. **अभिभावकः** Sh. Y.P. Ahluwalia, 109 Nimri Colony Ashok Vihar Phase-IV Delhi-110052, M : 9868704809
    पुत्र- Aman Walia, (7th Ocober 1974,) Govt Service in M.C.D. as Astt Sanitary Inspector (Pure Vegitarian) **तलाकशुदा,** Height 5'8", fair, salary 50,000 + स्मार्ट।
12. **अभिभावकः श्रीमती सम्पूरन जायसवाल,** (W/o स्व. सुरेश कुमार जायसवाल) G-194-195, जहांगीर पुरी, दिल्ली-33 फोन-9873809288, 9684750486
    पुत्री- अंजू जा. (तलाकशुदा कोई बच्चा नहीं) 28-07-1979 (दिल्ली, 7 AM), 5'3", M.B.A., गेहूंआ रंग, प्राइवेट सर्विस 15,000/- मासिक।
13. **अभिभावकः रिटायर्ड इंजीनियर वेस्टर्न रेलवे, Pelican-15, Aakriti Eco city, Bohpal-462039 7666933311; sjaiswal69@yahoo.co.in**
    सुनील जायसवाल (तलाकशुदा), 23-7-1969, 6'1", complexion very fair, MBA (Finance) from institute for Technology and Management, Mumbai, BE(CS) from Nagpur University. Annual Income 25 lacs to Rs. 30 lacks per annum.

एक तलाकशुदा 45 वर्षीय दिल्ली में कार्यरत उच्चपदासीन प्रतिष्ठित परिवार के युवक (पैकेज 40 लाख) के लिए कम से कम ग्रेज्युएट, संतानहीन युवती की अपेक्षा है। फोटो व विवरण सहित सम्पर्क करें। M-9013262811, 7503237955, 9891232016 (वाट्सएप)

जायसवाल जागृति के पदाधिकारी (2019-2021)

श्री अशोक कुमार जायसवाल (अध्यक्ष): 9818581776, 8700343878
एडवोकेट श्री ब्रजेश कुमार (महासचिव) : (M) 9810528057
श्री माखन चौधरी (कोषाध्यक्ष) : (M) 9911213033, 9650998902
श्री शंकर चौधरी (सह-महासचिव 2019-2022): (M) 9868039033
श्री अवधेश कुमार साह (संगठन मंत्री) : (M) 9868338671

नीति-निर्धारण/प्रबंध-समिति

श्री पन्नालाल जायसवाल : 8882828808
श्री राजाराम जायसवाल : 9013262811, 6280522313
श्री कृष्णदास चौधरी : 9868801751
श्री कैलाशनाथ गुप्त : (M) 8882019312
श्री नर्वदेश्वर प्रसाद जायसवाल : (M) 9582793033

उपाध्यक्ष

श्री शिव किशोर जायसवाल : 9818890990
श्री सुधीर कुमार मनहर : 9810007360
श्री छोटेलाल गुप्त : 9818334111

राहत-कोष

श्री मनोज शाह (अध्यक्ष) : 9891237738
श्री अनिल कुमार (सदस्य) : 9868105658
श्री कृष्ण कुमार भगत
श्री नरेन्द्र जायसवाल (कम्प्यूटरीकृत प्रेषण) : 9868819992

व्यवस्था एवं सहयोग

श्री बृजमोहन जायसवाल (प्रत्रिका सर्क्यूलेशन प्रभारी) 9868241044
श्री अजय कुमार जायसवाल (वेबसाइट) : (M) 9990372173
(M) 8700343878
श्री हरिशंकर जायसवाल (छायाकार) : (M) 9811131914
श्री शीतल प्रसाद जायसवाल (आम व्यवस्था) : (M) 7827621475
श्री आदित्यवर्धनम् (Facebook + संयोजक युवा मंच) : (M) 9818389050

वैवाहिकी-सम्पर्क व सहयोग

श्री अवधेश कुमार साह जायसवाल : 9868338671
akdeti202@gmail.com
श्री नवीन प्रकाश जायसवाल : 8802372297

महत्त्वपूर्ण सूचना (1)
'जायसवाल जागृति' सदस्यता-शुल्क

सदस्यता शुल्क की संशोधित दरें इस प्रकार हैं:

संरक्षक सदस्य	: 11,000/- रु.	(परिचय रंगीन फोटो सहित)
अधिष्ठाता सदस्य	: 5,100/- रु.	(विस्तृत परिचय फोटो सहित)
सम्मानित सदस्य	: 2,500/-रु.	(संक्षिप्त परिचय फोटो सहित)
आजीवन सदस्य	: 1500/- रु.	(7 वर्ष के लिए)

विज्ञापन-दरें

आवरण (कवर) चौथा पृष्ठ	: 5,100/- रु.
आवरण (कवर) द्वितीय पृष्ठ (संरक्षक)	: 11,000/- रु.
आवरण (कवर) तृतीय पृष्ठ	: 3,000/- रु.
विशेष रंगीन पृष्ठ	: 2,500/- रु.
साधारण पृष्ठ	: 1,500/- रु.
साधारण आधा पृष्ठ	: 750/- रु.
साधारण चौथाई पृष्ठ	: 400/- रु.

ध्यानाकर्षण : वार्षिक सदस्यता पूर्णतः समाप्त हो गई है। सदस्यगण कृपया 1500/- रु. का शुल्क पत्र प्रेषित करके आजीवन सदस्य बन जाएं, अन्यथा उनकी सदस्यता स्वयमेव समाप्त हो गई है। नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य कर दिया गया हैं। अतः बिना पिनकोड के पत्रिका नहीं पहुंच पाएगी। ध्यान रखें। जिन सदस्यों को हमारे प्रामाणिक प्रयासों के बावजूद डाक से पत्रिका नहीं मिल पाती है, वे कृपया एक वर्ष का 200 रुपये का अग्रिम कोरियर-शुल्क प्रेषित करके कोरियर से पत्रिका मंगा सकते है।

नोट : राशि स्थानीय रेखांकित चेक, कैश, रेखांकित बैंक डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जायसवाल जागृति' के नाम से देय होना चाहिए तथा इसे 'जायसवाल जागृति' के पंजीकृत कार्यालय के पते पर अथवा हमारे कोषाध्यक्ष के निम्नलिखित पते पर प्रेषित किया जाए। पक्की रसीद अवश्य प्राप्त कर लें।

महत्वपूर्ण सूचना (2)
जायसवाल जागृति वेबसाइट

Jaiswal Jagriti Has Launched It's Own Website

कम्प्यूटर क्रान्ति एवं सूचना-विस्फोट Computer Revolution & Information Explosion के इस युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना किसी भी जीवन्त संस्था के लिए अवश्यम्भावी हो गया है। फलतः स्वजाति बंधुओं के लाभार्थ www.jaiswaljagriti.com नामक वेबसाइट का शुभारंभ किया गया है। हमारा Email; jaiswaljagrity@gmail.com है। आप इससे सम्बन्धित किसी भी जानकारी के लिए हमारे युवा मंच के सचिव, तथा वेबसाइट प्रबंधक श्री अजय कुमार जायसवाल *(Sr. Software Engineer)* से उनके Email:ajayjaiswal.india@gmail.com तथा मो. न. 9990372173 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

बन्धुवर, समाज के हर तबके के लोगों को अपने लड़के-लड़कियों के लिए योग्य सम्बन्धों के चयन में कुछ न कुछ कठिनाइयाँ तो अवश्य पेश आती हैं, चाहे उसका सामाजिक अथवा आर्थिक स्तर कुछ भी हो। अतः अब आपकी सुविधा के लिए आप हमारे वेबसाइट में आपके विवाह योग्य लड़के लड़कियों का फोटो सहित विवरण प्रकाशित करा सकते हैं। इसके लिए फिलहाल मात्र 500 रु (पांच सौ रुपये मात्र) का शुल्क रखा गया है। आप शुल्क की यह राशि निम्नलिखित दो में से किसी भी एक पते पर डिमांड ड्राफ्ट / स्थानीय चेक या मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते है।

आप अपनी राशि हमारे **AXIS Bank** के **A/C no. 015010100247337, IFSC-UTIB-0000015** में भी सीधे जमा करा सकते हैं। किंतु इसकी रसीद अथवा इसकी फोटोप्रति हमारे पास निम्नलिखित में से किसी एक पते पर अवश्य भेंजें, अन्यथा यह पता लगाना मुश्किल होगा कि यह राशि किसने प्रेषित की है।

राजाराम जायसवाल :
प्रधान-सम्पादक (जायसवाल जागृति)
पंजीकृत कार्यालय : 19-सी, डी.डी.ए. (एम.आई.जी.)
फ्लैट्स, गुलाबी बाग, दिल्ली-110007
फोन : M-9013262811

श्री माखन चौधरी
कोषाध्यक्ष, जायसवाल जागृति
C-54-B, रजत विहार, सेक्टर-62 नोएडा-201309
Email : makhanchaudhary@gmail.com
M-9650998902

(5 रु. प्रति)

(कवर पेज 3 का शेष)

जनों के हित में एक बड़ी लड़ाई लड़ते हुए उन्होंने सभी पदो से इस्तीफा दें दिया। उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त से पूछा कि ब्लाइंड पर्सन (अंधता से ग्रस्त व्यक्ति) वोट कैसे डालेगा? इतना ही नहीं उन्होंने हरियाणा के विकलांगजन आयुक्त होने के नाते अपने आदेश से सारी प्रक्रिया को रोक दिया, जिससे पूरे देश में हड़कम्प मच गया। आनन-फानन में चुनाव-आयुक्त की पूरी टीम उनके कोर्ट में पहुंची और चुनाव प्रक्रिया को खोलने की गुजारिश की। कोर्ट में चुनाव आयुक्त ने आश्वासन दिया कि वे विकलांग जनों के समस्त अधिकारों के लिए कार्य करेंगे। कई तारीखें ऐसी भी आई जब चुनाव आयुक्त/मुख्य चुनाव आयुक्त/सचिव, चुनाव आयुक्त, भारत सरकार एक तरफ और हरियाणा सरकार के आयुक्त, विकलांग जन, श्री मोहन सिंह अहलूवालिया आमने-सामने हो गए। अंत में मुख्य चुनाव आयुक्त की तरफ से एक एफिडेविट साइन करके श्री मोहन सिंह जी के सामने रखा गया कि वे सारे इंतजाम किए जाएँगे जो पूर्व में नहीं थे या उनके संज्ञान में नहीं आये थे। रैंप से लेकर Blind Literature आदि का इंतजाम भी होगा, जिससे काई भी नेत्रहीन व्यक्ति सुरक्षित तरीफे से वोट डाल सके। ऐसा पहली बार हुआ जब किसी आयुक्त ने नेत्रहीन व्यक्तियों की आवाज को उठाकर उसे अंजाम तक पहुँचाया हो। यह इत्मीनान किया गया कि विकलांगों के संदर्भ में सारे नोटिफिकेशन जारी करवाने और गोपनीयता तथा सुरक्षित निर्वाचन का इंतजाम होने के बाद ही चुनाव हो सकेगा। बेहद शक्तिशाली चुनाव आयोग के समक्ष अपनी जायज मांगों को पूरा करवाने और अपने दायित्वों से मुंह न मोड़ने का यह संकल्प मोहनसिंह जी के ही बूते का था।

मिलावट-रहित व्यवसाय: श्री मोहन सिंह जी ने कालान्तर में बगैर मिलावट की खाने-पीने की चीजों को लेकर बिजनेस शुरु किया। बिजनेस न तो उनकी मानसिकता थी और न सोच ही। इसलिए आरंभ में काफी नफा-नुक्सान उन्होंने हुआ। फिर भी निरंतर आगे बहुत तहसील रायपुर रानी, जिला पंचकुला के खेड़ी ग्राम में ग्वाला गद्दी की स्थापना की इस आदर्श और स्थापित वाक्य को लेकर कि बगैर मिलावट का ही कार्य करना है उन्होंने अनेक ऐसे ही संकल्प-बद्ध कारोबारियों को साथ लेकर कि बगैर-मिलावटी घी, दूध, दही, छाछ, पनीर आदि लोगों को खिलाना-पिलाना है।, इसी ध्येय को लेकर आन्दोलन भी किये। सन् 2010 में यह आंदोलन छः महीने तक चला जो सफल माना गया। उसके बाद देश भर में दूध-उत्पादकों व पशु-पालको के लिए सरकार ने कुछ कार्य-योजनाएं बनाईं और मिलावट रहित फूड (खाद्य-पदार्थों) के लिए सरकार ने कुछ कार्य किए भी। किसी भी बड़े कार्य के लिए छः महीने का आंदोलन बड़ा कार्यकाल है। मीडिया ने इसे कवर किया जो विशेष चर्चा का विषय बना रहा। इस समय मोहन सिंह जी भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड (भारत सरकार) के केल्द्रीय सदस्य हैं। **उन्हें राज्यमंत्री का भी दर्जा प्राप्त है।** वे अपनी सभी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रहे हैं।

पारिवारिक : दो बहनों सहित आप चार भाई हैं और भरा-पूरा परिवार है जो अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। इनका विवाह अलवर के प्रसिद्ध समाज-सेवी श्री मनोहरलाल जी सोमवंशी की **सुपुत्री श्रीमती गायत्री** जी से हुआ। इनके दो होनहार पुत्र **मनुप्रिय** एवं, **प्रियदर्शी** सम्प्रति अध्ययनरत हैं। श्री मोहनसिंह अहलूवालिया स्वभाव से ही अपने ध्येय के प्रति समर्पित हैं। एक बार उद्देश्य स्पष्ट हो गया तो उसे अंजाम देने में प्राण-पण से जुट जाते हैं और कोइ भी शक्ति उन्हें अपने घाषित लक्ष्य से बिचलित नहीं कर सकती। सामाजिक क्षेत्र, चाहे वह बिरादरी का हो या राष्ट्रहित का क्षेत्र, सवेत्र आपने अपनी कर्मठता और लगनशीलता की छाप छोड़ी है तथा उसे सर्वजनहिताय सर्वजन सुखाय अंजाम तक पहुँचाया है। बिरादरी को ऐसे निःस्वार्थ समाज-सेवी एवं पुरुषार्थ तथा परमार्थ में आपादस्तक डूबे व्यक्तित्व पर गर्व है। उनकी स्वच्छ सोच व जन-हितैषी कार्य समाज के लिए अनुकरणीय हैं। वे अपने समाज हितैषी कार्यों को इसी प्रकार की उच्च भावना से लम्बे समय तक अंजाम देते रहे, यही जायसवाल जागृति की शुभकामना है।

–राजाराम जायसवाल

प्रधान संपादक